सुन्दर और असुन्दर

१

आज चादनीचौक की सडक पर कुछ विचित्र चहल-पहल थी। बडी धूमधाम के साथ बाराते निकल रही थी। कुछ बाराते फतहपुरी की ओर से लालकिले की दिशा मे आ रही थी और कुछ लालकिले की दिशा से फतहपुरी की ओर जा रही थी।

प्रकाश और किशोर सगीत-समारोह से लौट रहे थे। दोनो आगे बढकर दरीबाकला के सम्मुख पहुचे तो वहा भी यही दृश्य देखने को मिला। कुछ बाराते चादनीचौक से दरीबे मे जा रही थी और कुछ दरीबे से चादनी-चौक की ओर आ रही थी।

बारातो की इस धूमधाम के बीच से होकर दोनो मित्र धीरे-धीरे आगे बढे। प्रकाश बारातो का यह दृश्य देखकर बोला, "किशोर, आज तो मालूम होता है कि कोई कुआरा ही नही रहेगा। आज सबके विवाह हो जाएगे।"

प्रकाश की बात पर मुस्कराकर किशोर बोला, "बात तो कुछ ऐसी ही प्रतीत हो रही है।"

दोनो मित्र दरीबे से आगे बढकर गुरुद्वारा शीशगज के सम्मुख आए तो एक बहुत ही शानदार बारात सामने दिखलाई दी।

सबसे पहले कुछ लडके लडकियो के वेश मे अपने हाथो मे ढोले लेकर और उन्हे बजा-बजाकर नृत्य करते हुए आ रहे थे और उनके पीछे दिल्ली के प्रसिद्ध शहनाई बजानेवाले उस्ताद बन्नेखा की टोली थी। उस्ताद बन्ने-खाजी आज स्वय शहनाई बजा रहे थे। खेमखाप की शेरवानी, चूडीदार सफेद लट्ठे का पायजामा, सफद रेशमी जुर्राब और उनपर पेटेण्ट लैदर के पम्प शू पहने थे। सिर पर गाधीकैपनुमा कामदार टोपी थी। इस वेश-भूषा मे उस्ताद बन्नेखा स्वय एक नौशा बने हुए थे।

शहनाई को सुनकर प्रकाश बोला, "किशोर, कुछ भी सही, उस्ताद बन्नेखा शहनाई बजाते खूब है। सुननेवालो के कानो मे इसे सुनकर रस प्रवाहित होने लगता है। अपने ढग का सुन्दर कलाकार है यह भी।"

"इसमे क्या सदेह है प्रकाश ! उस्ताद बन्नेखा शहनाई वास्तव मे खूब बजाते है।" किशोर मुग्ध होकर बोला।

शहनाई के पश्चात् आतिशबाजीवालो की टोली थी जो चादनीचौक के बाजार मे सडक के बीचो-बीच खडे अपने जौहर दिखला रही थी। रग-बिरगे फूलोवाले अनार छुट रहे थे, फिरकिया घूम रही थी और आकाश की ओर भी आतिशबाजिया छोडी जा रही थी, जिनके जौहर आकाश मे जाकर खुलते थे।

"शानदार आतिशबाजी लाए है।" प्रकाश मुग्ध होकर बोला।

"बहुत।" किशोर बोला।

दोनो फिर तनिक आगे बढ गए।

बारात बहुत लम्बी थी जिसका एक छोर यहा था और दूसरा फतहपुरी से खारीबावली की ओर घूम गया था।

आतिशबाजी के पश्चात् कई अग्रेजी बाजे थे जिनमे सबसे आगे सरदारजी का बाजा था जिसकी वर्दी को ऊपरी तौर पर देखने से प्रतीत होता था कि फौजी बाजा बज रहा है।

बाजो के पश्चात् सुनहरी साजवाली एक सुन्दर और सुडौल घोडी पर वर महोदय विराजमान थे। उनके वस्त्रो की झमझमाहट के सामने गैस की बत्तियो का प्रकाश फीका पड गया था।

प्रकाश की दृष्टि बारात के ऊपरी आवरणो को चीरती हुई वर पर जाकर टिकी तो प्रकाश की दशा ऐसी हो गई कि मानो उसे बिच्छू ने काट लिया। उसे देखकर प्रकाश का बारात की रौनक को देखने का सब उत्साह भग हो गया। वर की सूरत देखकर उसका मन अन्दर ही अन्दर कुढ गया। वह तनिक खिन्न मन से बोला, "किशोर, देख रहे हो इस घोडी पर चढे वर को। कमबख्त ने बारात की सारी रौनक को एक उपहास की सामग्री बना दिया। मै सोच रहा था कि जब बारात इतनी शानदार है तो इसका दूल्हा भी निश्चित रूप से कोई हृष्ट-पुष्ट नवयुवक होगा,

परन्तु निकल आया यह क्षय रोग का रोगी। यह तो अच्छा खासा कार्टून मालूम देता है। प्रतीत होता है लडकी का पिता कोई बहुत ही निर्मम व्यक्ति है, जिसे अपनी पुत्री पर भी दया नही आई।"

किशोर प्रकाश की बात सुनकर मुस्कराता हुआ बारात की लम्बी कतार मे उधर आती हुई अनेको मोटरगाडियो की ओर सकेत करके बोला, "कुछ भी सही, लडका किसी धनी परिवार का प्रतीत होता है।"

"धनी परिवार!" प्रकाश कुढकर बोला, "इससे क्या हुआ? विवाह लडके और लडकी का होगा, परिवारो का नही। ऐसे रोगी व्यक्तियो के विवाह पर सरकार को प्रतिबन्ध लगा देना चाहिए। रोगी व्यक्तियो को विवाह करने का अधिकार नही होना चाहिए। ऐसे व्यक्तियो के विवाह से क्या लाभ? यह कम्बख्त एक वर्ष नही तो दो वर्ष और जी लेगा।

किशोर को प्रकाश की कुढन देखकर हसी आ गई। वह मुस्कराकर बोला, "प्रकाश भैया, तुमने तो व्यर्थ ही इस बेचारे को श्राप दे डाला। तुम्हे उस बेचारी वधू पर भी दया नही आई जो इसकी राह मे, अपने पलक-पावडे बिछाए बैठी होगी और इसकी न जाने कितनी दीर्घ आयु की कल्पना कर रही होगी। उस बेचारी ने आखिर तुम्हारी क्या हानि की है जो तुमने उसके लिए ऐसी अशुभ बात कह डाली।"

किशोर की बात सुनकर प्रकाश के मन मे और भी कुढन पैदा हो गई। उसका मन बारात की रौनक और वर की कुरूपता मे कोई सामजस्य स्थापित नही कर पा रहा था। वह बोला, "मैं उसी बेचारी के भाग्य को तो रो रहा हू किशोर भाई! जिसके मूर्ख पिता ने इस रोगी वर की धन-सम्पत्ति तो देखी परन्तु इसका स्वास्थ्य नही देखा। लडकी ने यदि इस वर की सूरत पहले देख ली होती तो वह कभी अपने जीवन को किसी भी प्रकार इस वर्ष दो वर्ष के मेहमान व्यक्ति की वेदी पर भेट चढाने के लिए उद्यत न होती।"

किशोर प्रकाश की बाते सुनकर मुस्करा रहा था और मुस्कराकर ही बोला, "पैसे मे बहुत बडी शक्ति है प्रकाश! उसके सम्मुख स्वास्थ्य और अस्वास्थ्य सब रखा रह जाता है। तुम क्या जानो कि उस लड़की के मन मे एकदम इतनी बडी सेठानी बन जाने की आकाक्षा कितनी बलवती हो

ठा होगी। तुम्हे क्या पता कि वह अपने भाग्य की कितनी सराहना कर रही होगी। जीवन मे एक स्वस्थ पति प्राप्त होने का सुख न सही अन्य तो कोई किसी प्रकार की कमी नही रहेगी उसे। क्या पता है कि यह इतना बडा वैभव, इतनी बडी सपत्ति, इतना धन और ऐश्वर्य उसे इसीलिए प्राप्त हो रहा हो कि ये महाशय इतने कुरूप और अस्वस्थ है।"

प्रकाश और किशोर कोतवाली के सामने से होते हुए मोती बाजार के सम्मुख पहुचे तो उन्हे एक और छोटी-सी बारात आती दिखलाई दी, जिसमे गिने-चुने दस-बीस व्यक्ति थे और बारात का गाजा-बाजा भी बहुत ही साधारण था। परन्तु उसके दूल्हे पर प्रकाश की दृष्टि पडी तो वह मुक्त कठ से बोला, "देखो किशोर! यह वर है विवाह कराने योग्य। धनवान यह भले ही न सही परन्तु देखने मे कैसा बाका युवक प्रतीत होता है। जवानी फूटी पड रही है इसके बदन से। इसकी वधू जब घूघट की ओट से इसकी सूरत देखेगी तो मोरनी के समान नाच उठेगी।"

प्रकाश की बात सुनकर किशोर हस पडा और हसता-हसता ही बोला, "यह सब तो ठीक है प्रकाश! परन्तु जब वह इन महाशय के घर पहुचेगी और वहा उसे घर मे चूहे कलाबाजिया खाते मिलेगे, तो तब जानते हो उसके कोमल हृदय की क्या दशा होगी? उसका मोरनी जैसा नृत्य समाप्त हो जाएगा। उसके विवाह का सारा आनद भग हो जाएगा। विवाह के फलस्वरूप नये-नये गहने और नये-नये वस्त्र पहनने की उसकी सब आकाक्षाओ और उमगो पर पानी फिर जाएगा। इन महाशय के गौर और स्वस्थ बदन के प्रति उसके मन मे जो आकर्षण पैदा हुआ होगा वह तिरोहित हो जाएगा। वह अपने माथे पर हाथ मारकर रोएगी और अपने पिता को कोसेगी कि उसने उसके लिए चैन की दो रोटियो का ठिकाना भी नही ढूढा।"

प्रकाश किशोर की बात सुनकर बहुत कुढ गया। उसे किशोर का तर्क कुछ भला नही लगा। वह बोला, "तो तुम्हारे विचार से पैसे का महत्त्व व्यक्ति से अधिक है? व्यक्ति का सौदर्य और उसका स्वास्थ्य कोई चीज ही नहीं है पैसे के सम्मुख? मै ऐसा नहीं मानता। मैं व्यक्ति के स्वास्थ्य और सौदर्य को उसकी सपत्ति से अधिक महत्त्वपूर्ण समझता हू।"

किशोर प्रकाश की कुढन की कोई चिंता न करके मुस्कराता ही रहा और उसी मुद्रा मे बोला, "ये सब कहने की बाते है प्रकाश ! वास्तव मे सत्य यही है कि धन से स्वास्थ्य और रूप दोनो खरीदे जा सकते है। कल तुम्हारा ही रिश्ता लेकर जब कोई आएगा और नोटो की गड्डिया तुम्हारे सम्मुख लाकर बिछा देगा तो तुम चुपके से उन्हे समेटकर एक ओर तिजोरी मे रख लोगे और उन महाशय से यह भी नही पूछोगे कि उनकी लडकी अधी है या कानी, लगडी है या लूली, काली है या चितकबरी।"

प्रकाश किशोर की बात से और भी कुढ गया। वह गभीर हो गया और होठ बिचकाकर बोला, "किशोर ! क्या तुम प्रकाश को भी अपने ही सरीखा समझते हो ? पैसे के आकर्षण मे जैसे तुम काली-कलूटी भाभी उठा लाए, वैसा प्रकाश करनेवाला नही है। क्या तुम्हे मालूम नही है कि मैं आज तक कितने रिश्ते वापस कर चुका हू ? मै रूप और स्वास्थ्य के सम्मुख पैसे को कोई चीज नही समझता।"

प्रकाश की यह बात तीर के समान किशोर के दिल मे जाकर चुभ गई और वह अपने दिल को मसोसकर मौन खडा रह गया। प्रकाश ने उसकी पत्नी को 'काली-कलूटी' कहकर उसका अपमान किया। उसके मर्माहत हृदय को गहरी ठेस पहुचाई।

किशोर बोला नही एक शब्द भी और प्रकाश के चेहरे पर एक बार देखकर उसने फिर अपनी गर्दन दूसरी ओर को घुमा ली।

किशोर के सम्मुख उसकी सावली पत्नी आकर खडी हो गई। जिसके कारण उसे आज प्रकाश का यह मर्मभेदी वाक्य सुनना पडा। वह तिल-मिला उठा यह सुनकर। उसका हृदय टुकडे-टुकडे हो गया, उसका मस्तिष्क चकरा उठा और उसकी आखो के सम्मुख अधकार छा गया।

यह सच था कि किशोर के मन मे अपनी पत्नी के सावले वर्ण को देख-कर असीम पीडा उत्पन्न हुई थी। उसकी कल्पना का बालू का बना किला टूटकर खडहर हो गया था। उसके जीवन की आनदमयी कल्पना नष्ट हो गई थी। उसका जीवन विरक्त-सा हो गया था। अपनी पत्नी के प्रति और उसमे कोई आकर्षण नही रह गया था उसके लिए।

वह समस्त वैभव, वह दान-दहेज और धन जो उसे अपने विवाह मे

प्राप्त हुआ था उसे उपहास-सा प्रतीत हुआ था। उसके नेत्रो के सम्मुख अधकार छा गया था। उसकी आशाए निराशा मे परिणत हो गई थी। उसे अपना जीवन निराशापूर्ण दिखलाई देने लगा था।

उसकी यह दशा देखकर उसकी पत्नी रात-भर उसके पलग के सिर-हाने से सटी खडी रही थी और वह पलग पर पडा-पडा अपने दुर्भाग्य को कोसता रहा था। उसे लग रहा था कि वह उस पत्नी के साथ अपना जीवन-निर्वाह नही कर सकता। वह पत्नी उसके जीवन को कभी उत्साह और उमग से नही भर सकती।

यह सब सत्य था, परन्तु यह उसकी अपनी और उसकी पत्नी की समस्या थी। उसपर वह स्वय जिस रूप मे भी चाहे विचार कर सकता था। उसपर प्रकाश ने यह व्यग्य-बाण क्यो कसा ? प्रकाश को ऐसे शब्दो का प्रयोग करने का कोई अधिकार नही था। प्रकाश को ऐसा नही करना चाहिए था। एक मित्र होकर उसे किशोर के हृदय को नही दुखाना चाहिए था।

प्रकाश ने ये शब्द किशोर के लिए कह तो दिए, परन्तु तुरन्त ही उसे अपनी बात पर ग्लानि-सी हो उठी। वह बोला नही एक शब्द भी, परन्तु उसने मन ही मन अनुभव किया कि उसने अपने मित्र किशोर के प्रति दुर्व्यवहार किया है। उसे ऐसे कठोर शब्दो का प्रयोग कदापि नही करना चाहिए था।

किशोर यह अनुभव करके भी मुस्कराता ही रहा। उसे प्रकाश पर कभी क्रोध नही आता था। प्रकाश का हर अपराध उसकी दृष्टि मे क्षम्य था। उसने अपने दिल की पीडा को दिल के एकात कोने मे दबा दिया। वह प्रकाश को अपना छोटा भाई समझता था और उसी नाते उसका हर अपराध उसकी दृष्टि मे क्षम्य था।

दोनो मित्र मोती बाजार से होकर अदर मालीवाड मे पहुचे तो किशोर बोला, "चलो प्रकाश, सीधे हमारे ही घर चलो। वहा खाना खाकर लौट आना।"

प्रकाश बोला, "चलो किशोर! आज वही खाना खाऊगा। मुझे माताजी से ठीक से बाते किए भी कई दिन हो गए है। मै सप्ताह मे एक

बार उनसे जब तक खूब बाते नही कर लेता हू तो जाने क्यो मेरा मन उदास-उदास-सा बना रहता है।"

किशोर बोला, "ठीक यही दशा माताजी की भी रहती है प्रकाश! तुम एक दिन भी हमारे यहा आने मे टालमटोल कर देते हो तो माताजी के मन मे बेचैनी पैदा हो जाती है। मुझे और तुम्हे पास-पास बिठलाकर खाना खिलाने मे पता नही माताजी को कितना अनद आता है!"

बाते करते हुए दोनो मित्र किशोर के घर की ओर चल दिए।

२

प्रकाश और किशोर की दोस्ती कोई आज की नही थी—बहुत पुरानी थी। दोनो के मकान मालीवाडे मे ही थे। दोनो साथ-साथ पाठशाला मे भर्ती हुए थे और प्रथम दिन दोनो ने एक ही टाट-पट्टी पर बैठकर पडितजी से अपनी 'अ, आ' की पोथी पढनी प्रारम्भ की थी।

दोनो ने परस्पर मित्रतापूर्ण बाते की थी और किशोर ने कहा था, "प्रकाश! आज से हम-तुम दोनो मित्र बन गए।"

प्रकाश बोला, "हा, किशोर! आज से हम-तुम दोनो मित्र हो गए। हम कभी आपस मे लडे-झगडेगे नही।"

पाठशाला की छुट्टी हुई तो दोनो मित्रो ने अपने-अपने बस्ते अपनी-अपनी बगल मे दबाए और साथ-साथ शाला से बाहर निकले। शाला से बाहर निकलकर दोनो खडे हो गए।

प्रकाश ने पूछा, "मित्र किशोर, अब तुम्हे किस ओर जाना है? तुम्हारा मकान कहा है।"

किशोर बोला, "मेरा मकान मालीवाडे मे है।"

किशोर की बात सुनकर प्रकाश उछल पडा। वह हर्षित मन से बोला, "मित्र, मेरा मकान भी मालीवाडे मे ही है। यह बहुत अच्छा रहा। अब हम-तुम दोनो साथ-साथ पाठशाला आया करेगे और साथ-साथ यहा से लौटकर घर जाया करेगे। यह बात तो बहुत ही सुन्दर रही!"

दोनो मित्र एक-दूसरे के गले मे बाहे डालकर मालीवाड की ओर चल दिए। मोतीबाजार से अन्दर घुसकर दोनो ने मालीवाडे मे प्रवेश किया तो सामने ही प्रकाश का मकान था। वह बोला, "किशोर, मेरे घर चलो। मेरी माताजी तुम्हे बहुत प्यार करेगी।"

किशोर प्रकाश के साथ उसके घर चला गया। प्रकाश अपनी माताजी से बोला, "माताजी, यह मेरा मित्र है किशोर। किशोर कहता है कि हम दोनो मित्र हो गए।"

प्रकाश की माताजी ने आगे बढकर स्नेह से किशोर को अपनी गोद मे उठा लिया और प्यार से उसका मुख चूमकर बोली, "बेटा प्रकाश! तुम्हारा मित्र किशोर बहुत अच्छा है। मुझे बहुत पसद आया तुम्हारा मित्र।" और फिर किशोर से पूछा, "बेटा किशोर, तुम्हारा घर कहा है? क्या तुम भी मालीवाडे मे ही रहते हो?"

"जी माताजी! यहा से अधिक दूर नही है मेरा घर। बहुत निकट है यहा से।" किशोर बोला।

"तब तो बहुत अच्छा रहेगा। अब तुम दोनो मित्र साथ-साथ पाठशाला जाया करना और पढकर साथ ही दोनो अपने घरो को लौट आना। और देखो, अब तुम दोनो मित्र बन गए हो न! तो कभी आपस मे लडना नही। मैं देखूगी कि तुम दोनो कितने प्रेम-भाव से पढते और रहते हो।" प्रकाश की माताजी ने कहा।

फिर प्रकाश की माताजी ने प्यार से दोनो बच्चो को पास-पास बिठला-कर नाश्ता कराया और बहुत देर तक मीठी-मीठी बाते करती रही।

नाश्ते के पश्चात् प्रकाश किशोर के घर तक उसे छोडने गया और उसके द्वार तक उसे छोडकर लौटने लगा तो किशोर बोला, "प्रकाश! हमारे घर चलो। मेरी माताजी को भी तुम बहुत अच्छे लगोगे। तुम देखोगे कि वह तुम्हे कितना प्यार करती हैं।"

प्रकाश और किशोर दोनो ने किशोर के घर मे प्रवेश किया और घर के आगन मे पहुच गए।

किशोर की माताजी किशोर के लौटने की प्रतीक्षा मे थी। किशोर के साथ एक अन्य सुन्दर-से बच्चे को आते हुए देखकर किशोर की माताजी

प्रसन्न होकर बोली, "अरे यह कौन मुनुआ आया है तुम्हारे साथ किशोर!
और इतना कहकर उन्होने आगे बढकर प्रकाश को अपनी अक मे भरकर
उसके गोल गुलाबी चेहरे को बडे स्नेह से देखा।

किशोर सरल वाणी मे बोला, "यह प्रकाश है माताजी! मैने इसे अपना मित्र बना लिया है। हम दोनो आज पाठशाला मे पास-पास बैठकर पढे थे। इनका मकान भी यही मालीवाडे मे ही है। चादनीचौक से मोती-बाजार मे होकर ज्योही मालीवाडे मे प्रवेश करते है तो सामने ही इनका घर पडता है।"

कुछ ठहरकर किशोर बोला, "माताजी, प्रकाश की अम्मा बहुत अच्छी है। पाठशाला से लौटकर मै अभी प्रकाश के साथ इनके घर गया तो इसकी माताजी ने मुझे गोद मे लेकर उतने ही प्यार से चूमा जैसे आप चूमती है। उन्होने हम दोनो को पास-पास बिठलाकर बडे स्नेह से दूध पिलाया और नाश्ता कराया। माताजी, बहुत अच्छे रसगुल्ले खिलाए उन्होने।" किशोर का मन इस समय आनद की लहरो पर तैर रहा था।

किशोर के मुख से प्रकाश की माताजी द्वारा अपने लाडले पुत्र किशोर को किए गए प्यार की बात सुनकर किशोर की माताजी का मन मुग्ध हो उठा। उन्होने बहुत ही मीठी दृष्टि से प्रकाश की ओर देखा। वे गद्गद होकर बोली, "तुम्हे बहुत अच्छा मित्र मिल गया है किशोर! मुझे तुम्हारा मित्र बहुत प्रिय लग रहा है। अब तुम दोनो साथ-साथ पाठशाला जाया करना, और देखो बेटा, जब तुम दोनो मित्र बन ही गए हो तो कभी अब परस्पर लडना-झगडना नही। मै देखूगी कि तुम दोनो कितने प्यार से रह-कर अपनी मित्रता को निभाते हो।"

इतना कहकर उन्होने दोनो लाडले बच्चो को अपने घर के आगन मे पडी झूले के पटरे पर प्यार से बिठलाकर बडे स्नेह से झुलाया और साथ ही मधुर कठ से प्रसन्न होकर गा उठी

"कृष्ण बलदेव झूला झूले
झुलावै मात यशोदा री।"

उसके पश्चात् प्रकाश और किशोर नित्य साथ-साथ पाठशाला जाने लगे। दोनो की मित्रता प्रगाढ होती गई। साथ-साथ पढना और साथ-साथ

खेलना इनका नित्य का नियम बन गया। इनकी इस अभिन्न मित्रता को देखकर पाठशाला के कुछ लडके इनसे चिढने लगे और सोचने लगे कि कैसे इनके बीच वैमनस्य का बीज बो डाले।

एक दिन पाठशाला मे प्रकाश के बस्ते से एक शैतान लडके ने उसकी एक पुस्तक निकालकर चुपके से किशोर के बस्ते मे रख दी।

प्रकाश को अपने बस्ते मे अपनी पुस्तक न मिली तो उसने अपने अध्यापक को इसकी सूचना दी।

अध्यापक ने बच्चो से पूछा तो वह उद्दण्ड लडका बोला, "गुरुजी! यह चोरी किशोर ने की है। मैने छुट्टी मे इसे प्रकाश का बस्ता खोलते देखा था!"

इस उद्दण्ड लडके के मुख से किशोर का नाम सुनकर प्रकाश तिलमिला उठा। उसके नेत्र रक्तवर्ण हो गए। वह अपने आवेग को रोक न सका और गुरुजी के सम्मुख जाकर बोला, "किशोर मेरी पुस्तक नही चुरा सकता गुरुजी! किशोर मेरा मित्र है। उसे उस पुस्तक की आवश्यकता हो तो क्या वह मुझसे माग नही सकता?"

इसपर वह उद्दण्ड लडका बोला, "किशोर नही चुरा सकता! तो क्या हमने चुराई है तुम्हारी पुस्तक? किशोर तुम्हारा मित्र है तो क्या हम सब शत्रु है तुम्हारे? किशोर का बस्ता देखा जाए गुरुजी। पुस्तक किशोर के ही बस्ते मे निकलेगी।"

अध्यापक ने किशोर का बस्ता खुलवाया और उसकी पुस्तके देखी तो वास्तव मे उसके अन्दर प्रकाश की पुस्तक रखी थी। यह देखकर प्रकाश का मस्तिष्क झनझना उठा और किशोर के तो यह देखकर मानो प्राण-पखेरू ही उड गए। वह निर्जीव-सा खडा रह गया कक्षा मे। वह सिर से पैर तक पसीने मे नहा गया। उसका मस्तिष्क चकराने लगा। वह सोच ही न सका कि आखिर यह सब कैसे हुआ। वह चोरी तो प्रकाश की क्या किसीकी भी नही कर सकता।

प्रकाश आगे बढकर गुरुजी के सम्मुख जा पहुचा और गम्भीर वाणी मे बोला, "गुरुजी! किशोर के ऊपर यह चोरी का आरोप झूठा लगाया गया है। ये लोग मेरी और किशोर की मित्रता को देखकर चिढते है। हम

दोनो मे वैमनस्य पैदा करने के लिए ही इन लोगो ने यह षड्यन्त्र रचा है। किशोर एक से लाख तक मेरी पुस्तक नही चुरा सकता। किशोर चोरी कर ही नही सकता गुरुजी !"

गुरुजी प्रकाश की समझदारी की बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुए। अपने मित्र की सचाई मे उसका इतना विश्वास देखकर उनका मन मुग्ध हो उठा। वे मुक्त कठ से बोले, "प्रकाश! तुम्हारी प्रगाढ मित्रता की भावना ने मेरी आत्मा को प्रसन्न कर दिया। मै तुम्हे आशीर्वाद देता हू कि तुम्हारी यह मित्रता आजीवन बनी रहे। तुम दोनो के मनो मे एक-दूसरे के प्रति कभी मैल न आए।"

गुरुजी के मुख से निकली इस आशीर्वाद की वाणी ने दोनो मित्रो के जीवन मे प्रेरणास्वरूप प्रवेश किया। दिन-प्रतिदिन दोनो की मित्रता दृढतर होती गई। दोनो की मित्रता का पौधा लहलहा उठा।

इस छोटी पाठशाला से दोनो ने साथ-साथ ही हाईस्कूल मे प्रवेश किया और साथ-साथ ही दोनो कालेज मे गए। दोनो मित्र हर समय साथ-साथ ही रहते थे और कभी भी कोई एक-दूसरे से पृथक् हो जाता था तो उसके मन मे बेचैनी-सी होने लगती थी।

प्रकाश और किशोर दोनो ही अपनी कक्षा मे साथ-साथ बैठते थे, साथ-साथ स्टडी करते थे और साथ-साथ खेलने जाते थे। प्रकाश और किशोर पढाई मे जितने तीव्र थे, खेल-कूद मे भी उतनी ही ख्याति उन्होने प्राप्त की थी।

एक दिन दोनो सध्या समय स्कूल से लौटकर प्रकाश के घर आए तो उन्होने देखा कि प्रकाश की माताजी पलग पर पडी कराह रही थी और प्रकाश के पिताजी डाक्टर साहब का बैग सभाले उनके पास खडे थे। प्रकाश समझ ही न सका कि यह क्या हो गया। उसके पिताजी का स्वास्थ्य महीनो से ठीक नही चल रहा था और पलग से उठने की शक्ति भी उनमे नही थी। उन्हे खडे और माताजी को पलग पर पडे कराहते देखकर वह स्तब्ध-सा रह गया। उसने आगे बढकर पिताजी के हाथ से डाक्टर साहब का बक्स ले लिया।

किशोर यह देखकर प्रस्तरवत् रह गया, वह घबरा उठा। उसकी

वाणी मे इतनी शक्ति ही न रही कि वह आगे बढकर प्रकाश के पिताजी से प्रकाश की माताजी की दशा के विषय मे प्रश्न कर सके। वह खडा-खडा देखता ही रहा कि अचानक यह सब क्या हो गया। अभी दो घटे पूर्व ही वह उन्हे बिलकुल स्वस्थ छोडकर गया था।

किशोर फिर लपककर डाक्टर साहब के लिए कुर्सी उठा लाया और उसे उनके पीछे रखकर बोला, "बैठ जाइए डाक्टर साहब।"

डाक्टर साहब ने प्रकाश की माताजी की परीक्षा की। स्टेथिस्कोप लगाकर हृदय-गति को देखा तो उनका चेहरा गम्भीर हो उठा। प्रकाश की माताजी की हृदय-गति धीमी पडती जा रही थी।

वे धीरे से प्रकाश के पिताजी को बाहर ले गए और गम्भीर वाणी मे बोले, "हृदय की गति बहुत मन्द पड गई बाबूजी! इन्हे इसी समय हास्पिटल ले चलना चाहिए।"

प्रकाश के पिताजी यह सुनकर सज्ञाविहीन-से हो गए। उनका बदन स्वेदपूर्ण हो गया और डबडबाए नेत्रो से पूछा, "क्या कोई चिताजनक स्थिति पैदा हो गई डाक्टर साहब?"

डाक्टर साहब उतनी ही गम्भीर वाणी मे बोले, "अत्यन्त चिताजनक। मैं पर्चा लिख रहा हू। इन्हे तुरन्त हास्पिटल ले जाओ। विलम्ब न करो तनिक भी। स्थिति बहुत गम्भीर है।"

प्रकाश के पिताजी ने घबराकर प्रकाश से कहा, "बेटा, एक टैक्सी ले आओ और विलम्ब न हो तनिक भी। तुम्हारी माताजी को अभी हास्पिटल ले चलना है।"

यह सुनकर किशोर बोला, "तुम यही रहो प्रकाश! मैं अभी अपनी कार लेकर आया।" और वह तुरन्त कार लाने के लिए दौड गया।

पलक मारते किशोर अपनी कार लेकर आ गया। उसने कार चादनी-चौक मे मोतीबाजार के सामने लगा दी।

प्रकाश और किशोर ने सभालकर प्रकाश की माताजी को धीरे से कार मे बिठलाया और प्रकाश के पिताजी को साथ ले तुरन्त हास्पिटल पहुच गए।

डाक्टर का पर्चा पास होने से हास्पिटल मे भर्ती होने मे विलम्ब न

हुआ। प्रकाश के पिताजी ने स्पेशल वार्ड मे एक कमरा ले लिया और उसीमे ले जाकर प्रकाश की माताजी को पलग पर लिटा दिया। उन्हे अभी तक चेतना नही लौटी थी।

कमरे मे पहुचने पर डाक्टर ने आक्सीजन का प्रबन्ध किया जिसके सहारे प्रकाश की माताजी के डूबते हुए दिल को तनिक सहारा मिला और उन्होने नेत्र खोल दिए।

उनका नेत्र खोलना था कि प्रकाश, किशोर और प्रकाश के पिताजी के चेहरो पर प्रसन्नता की रेखाए खिच गई। उनके निराशापूर्ण हृदयो मे आशा का सचार हुआ। उन्हे विश्वास हुआ कि वे जी उठेगी।

प्रकाश की माताजी ने फिर नेत्र बन्द कर लिए तो किशोर ने प्रकाश के पिताजी से आतुरतापूर्वक पूछा, "यह सब अचानक माताजी को क्या हो गया पिताजी! अभी एक घटे पूर्व ही तो हम इन्हे बिलकुल स्वस्थ छोड-कर गए थे।"

प्रकाश के पिताजी गम्भीर वाणी मे बोले, "दिल का दौरा पड गया है बेटा। प्रकाश की मा का दिल बडा कमजोर है। ये तनिक-सी घबराहट की कोई बात सुनती है तो इनकी यह दशा होजाती है। आज अचानक ही इनके पीहर से कुछ ऐसा समाचार आया कि जिसे सुनकर इनकी यह दशा हो गई।

"परन्तु इस बार का दौरा मैं देख रहा हू कि पहले से बहुत भयकर है। पता नही विधाता को क्या मजूर है?" और इतना कहकर वे बहुत उदास-से होकर पीछे कुर्सी पर बैठ गए। उनका सिर चकरा उठा और हृदय मे अथाह पीडा जाग्रत् हो उठी। वे सभाल न सके अपने को।

प्रकाश और किशोर सज्ञाविहीन-से प्रकाश की माताजी के पलग के पास खडे रहे। उनकी कुछ समझ मे नही आ रहा था कि क्या करे। विधाता ने अचानक ही उनपर आपत्ति का पहाड गिरा दिया।

थोडी देर मे प्रकाश की माताजी ने फिर नेत्र खोले तो किशोर उनके सामने खडा था। किशोर को देखकर प्रकाश की माताजी के नेत्रो में आसू आ गए और वे मद स्वर मे विक्षिप्त-सी दशा मे बोली, "बेटा! किशोर! तुम आ गए बेटा! मैंने प्रकाश को अभी तुम्हे ही बुलाने भेजा था। प्रकाश

नहीं लौटा क्या अभी ?"

"मै खडा हू माताजी !" प्रकाश ने सजल नेत्रो से उनकी ओर देखते हुए कहा। प्रकाश का दिल अपनी माताजी की यह दशा देखकर बैठा जा रहा था।

प्रकाश की माताजी ने किशोर और प्रकाश की ओर देखकर किशोर से कहा, "बेटा किशोर ! आज तुम्हारी मा जा रही है। मैंने इतने दिन मे तुम दोनो की मित्रता के पौधे को अपने स्नेह-जल से सीचकर इतना बडा किया है बेटा ! मेरे सम्मुख प्रतिज्ञा लो कि तुम इस पौधे को कभी जीवन मे सूखने नही दोगे। तुम दोनो की मित्रता का पौधा निरन्तर लहराता रहेगा। और बेटा किशोर ! तुम बडे हो, सो अपने छोटे भाई प्रकाश का ध्यान रखना।"

प्रकाश की माताजी की यह बात सुनकर प्रकाश और किशोर दोनो के नेत्र बरस पडे। दोनो ने उनके एक-एक चरण पर मस्तक टिकाकर कहा, "माताजी ! आपके सीचे हुए पौधे को, हम प्रण करते है कि कभी जीवन मे सूखने नही देगे। वह निरन्तर पल्लवित और पुष्पित ही होता रहेगा।"

फिर किशोर स्नेहार्द्र स्वर मे बोला, "आप ठीक हो जाएगी माता-जी ! पिताजी ने बतलाया कि ऐसे दौरे तो आपको पड ही जाते है। अभी कुछ देर मे आपकी पर्याप्त चेतना लौट आई है।"

किशोर की बात सुनकर प्रकाश की माताजी के होठो पर हलकी-सी मुस्कान की रेखा खिच गई। वे धीरे-धीरे वे बोली, "ऐसा दौरा, बेटा, मुझे जीवन मे कभी नही पडा ! बहुत पीडा है इस समय हृदय मे। मालूम देता है कि कोई मेरे कठ को दबा रहा है और प्राणो को खीचकर इस देह से बाहर निकाल ले जाना चाहता है। मेरा मन छटपटा रहा है। मेरे हृदय की धडकन बन्द हो जाना चाहती है। मेरा मस्तिष्क फटा जा रहा है।"

किशोर और प्रकाश निराश नेत्रो से उनकी ओर देखते रहे। उनकी वाणी मद पड गई थी।

तभी डाक्टर ने फिर कमरे मे प्रवेश किया और रोगी को देखा तो उनके मस्तक पर चिता की रेखाए खिच गई। उन्होने आक्सीजन की नली को ठीक करके तनिक उसकी गति को तीव्र किया तो प्रकाश की माताजी

जैसे एकदम सचेत-सी हो उठी। उन्होने नेत्र खोल दिए और चारो ओर दृष्टि घुमाकर देखा। उन्होने डबडबाए नेत्रो से अपने पति के विक्षिप्त चेहरे पर दृष्टि डाली।

डाक्टर ने उनकी नाडी का परीक्षण किया तो देखा कि गति बहुत मद पड गई थी। उसमे कोई सुधार नही हो रहा था। वह एक इजेक्शन लगाकर चले तो प्रकाश के पिताजी ने कमरे से बाहर निकलकर उत्सुकतापूर्वक पूछा, "अब कैसी दशा है डाक्टर साहब ? क्या इनके प्राण बचने की कोई आशा है ?"

डाक्टर साहब गम्भीर वाणी मे बोले, "अभी बहुत चिंताजनक स्थिति है। नाडी की गति मे कोई सुधार नही हुआ। मै पूरा प्रयत्न कर रहा हू।" और एक इजेक्शन एक कागज पर लिखकर बोले, "लो, यह इजेक्शन बाजार से मगवा लो। इसे लगाकर देखता हू कैसा काम करता है।"

प्रकाश के पिताजी ने अन्दर आकर वह पर्चा प्रकाश को देकर कहा, "बेटा, जल्दी से बाजार जाकर यह इजेक्शन तो ले आओ। डाक्टर साहब ने नया इजेक्शन लिखा है यह।"

प्रकाश के पिताजी की यह बात प्रकाश की माताजी के कानो मे पडी तो उन्होने नेत्र खोल दिए और बहुत धीमे स्वर मे बोली, "अब तुम यहा से इजेक्शन लेने न जाना बेटा !" और फिर प्रकाश के पिताजी की ओर करुण नेत्रो से देखकर बोली, "प्राणनाथ ! मै कितनी अभागी हू कि आपको अस्वस्थ अवस्था मे इस प्रकार अकेला छोडकर जा रही हू। मै जाना नही चाहती प्रकाश के पिताजी ! परन्तु क्या करू मेरा दिल डूबा जा रहा है। मैं सभाल नही पा रही अपने को। मेरा बदन टूट रहा है। मालूम देता है प्राण निकल रहे है। आज मेरी आयु ठीक पैतीस वर्ष की हुई है और मुझे स्मरण है कि मेरी माताजी की मृत्यु भी इसी अवस्था मे हुई थी। वे मुझे अपने अक मे भरकर पता नही कहा ले जाना चाहती है। वे अपने दोनो हाथ फैलाए मेरे सम्मुख खडी है। मैंने गिडगिडाकर उनसे विनती की है कि मुझे कुछ दिन के लिए और छोड दे। प्रकाश के पिताजी की तबीयत ठीक नही है। वे मेरे बिना रह नही सकेगे, जी नही सकेगे। मुझे तुम ले गई तो उनकी सेवा कौन करेगा ? मेरा घर उजड जाएगा। मेरा बच्चा प्रकाश

बिरान हो जाएगा। परन्तु इतनी निर्दय मेरी मा मुझपर कभी नही हुई, जितनी आज बनी हुई है। वह देखो, वे सामने से आ रही है।" और यह कहते-कहते उनकी वाणी रुक गई। उनके नेत्र पथरा गए। उनका बदन ठडा पड गया। उनके प्राण-पखेरू उड गए।

प्रकाश के पिताजी घबराकर उठे और उन्हे झझोडकर बोले, "प्रकाश की मा ! प्रकाश की मा !" और फिर निराश होकर रोते हुए कहा, "आखिर चली ही गई मुझे छोडकर।"

प्रकाश की मा वहा नही थी। वे अपनी मा की गोद मे पहुच चुकी थी। उनका शव-मात्र पलग पर पडा था। चेतनाहीन शव। प्राणविहीन देह।

प्रकाश के पिताजी का अस्वस्थ बदन अपनी पत्नी की मृत्यु के शोक को सहन न कर सकने पर अचेतन होकर भूमि पर गिरा और सज्ञाविहीन हो गया। प्रकाश ने घबराहट मे उन्हे दौडकर सभाला।

किशोर दौडकर डाक्टर के पास गया और यह बात बतलाई तो डाक्टर साहब तुरन्त उसके साथ रोगी के कमरे मे आए। प्रकाश के पिताजी फर्श पर पडे छटपटा रहे थे और प्रकाश उन्हे सभाल रहा था।

डाक्टर ने देखा कि प्रकाश की माताजी का प्राणान्त हो चुका था और उसके पिताजी विक्षिप्तावस्था मे भूमि पर पडे बडबडा रहे थे।

डाक्टर ने प्रकाश की माताजी का पलग एक ओर बराडे मे निकलवा-कर उसके चारो ओर पर्दा लगवा दिया और दूसरे पलग पर प्रकाश के पिताजी को लिटवाया। प्रकाश और किशोर ने उन्हे धीरे से उठाकर पलग पर लिटा दिया।

डाक्टर साहब इजेक्शन-बक्स लेने के लिए गए तो प्रकाश के पिताजी विक्षिप्तावस्था मे ही बोले, "प्रकाश की मा ! ठहरो तनिक ! तुम्हे जिस दिन से विवाह कर लाया हू कभी मैंने कही अकेली नही जाने दिया। तुम तो चादनीचौक मे ही जाकर मालीवाडे का मार्ग भूल जाती हो प्रिये ! फिर इतनी भयानक यात्रा पर अकेली कैसे जा सकोगी ? ठहरो, मै आ रहा हू।"

तब तक डाक्टर साहब अपना इजेक्शन-बक्स लेकर आ गए। परन्तु

पलग के पास जाकर देखा तो वहा प्रकाश के पिताजी का शव-मात्र शेष रह गया था। उनमे अब प्राण शेष नही था।

किशोर ने प्रकाश को सभालकर अपनी कौली मे भर लिया और दोनो के हृदय टुकडे-टुकडे हो गए।

प्रकाश निराधार रह गया। उसके ऊपर आकाश और नीचे पृथ्वी रह गई। उसके नेत्रो के सम्मुख अधकार छा गया।

किशोर ने नेत्रो के आसू पोछकर कहा, "भैया प्रकाश! विधाता ने जो महान आपत्ति का पर्वत तुम्हारे ऊपर गिरा दिया है उसे सहनशीलता के साथ सहन करो। माताजी और पिताजी तुम्हारा साथ छोड गए तो कोई बात नही, तुम्हारा बडा भाई किशोर तो अभी जीवित है। तुम चिंता न करो किसी बात की।"

प्रकाश शब्दविहीन किशोर के चेहरे पर देखता रहा, वाणीविहीन, सज्ञाविहीन। उसके नेत्रो से बहनेवाला अश्रुप्रवाह रुक गया और वह पाषाण-शिला के समान खडा रह गया।

किशोर ने बडी सावधानी से सहारा देकर कुर्सी पर बिठलाया तो प्रकाश अस्फुट वाणी मे बोला, "किशोर! अब क्या होगा?"

किशोर प्रकाश की बात सुनकर आज रोया नही। उसने धैर्यपूर्वक कहा, "प्रकाश! विधाता की चाल को कोई नही रोक सकता। उसने जो कुछ किया उसपर कोई वश नही, परन्तु जब तुम्हारा बडा भाई जीता है तो घबराने की आवश्यकता नही।"

प्रकाश का सिर चकरा रहा था। चेतना उसका साथ छोड रही थी। उसके पैर लडखडा रहे थे। उसने कभी कल्पना भी नही की थी कि उसके माता-पिता उसे इस प्रकार अनाथ कर जाएगे।

डाक्टर साहब ने उसकी ऐसी दशा देखी तो तुरन्त उसे पलग पर लिटाकर इजेक्शन दिया। किशोर से बोले, "तुम भाई हो प्रकाश के?"

"जी।" किशोर ने कहा।

"इन्हे नीद आ जाए तो जगाना नही। मैने नीद का इजेक्शन दिया है। नीद आने से इनकी तबीयत सभल जाएगी।" कहकर डाक्टर साहब चले गए।

३

प्रकाश के माता-पिता, दोनो उसे एकसाथ छोडकर चले गए थे। प्रकाश आधारविहीन रह गया था परन्तु इस निराशा-काल मे भी उसके जीवन मे एक आशा-किरण शेष थी और वह था उसका अभिन्न मित्र किशोर। उसीकी ओर देखकर प्रकाश ने सात्वना ग्रहण की। वह न होता तो प्रकाश जीवन के अधकार मे भटककर रह जाता। उसे इस महान आपत्ति के समय कोई ढाढस बधानेवाला भी न होता।

किशोर ने लगभग दो मास तक प्रकाश को उसके घर नही जाने दिया। वह उसकी सब पुस्तके अपने ही घर पर उठा लाया और यही रहकर दोनो पढते रहे। साथ-साथ कालेज जाते रहे और साथ-साथ खेलकूद मे भाग लेते रहे। किशोर ने चौबीसो घटे उसके साथ रहकर उसकी उदासीनता को दूर करने का प्रयास किया।

किशोर की माताजी ने प्रकाश को अपनी गोद मे बिठाकर कहा, "बेटा प्रकाश! विधाता के विधान पर किसीका वश नही चलता। परन्तु तुम्हे तो विधाता ने दो-दो मा और दो-दो पिता प्रदान किए है। तुम चिन्ता न करना किसी बात की। मेरे लाल को मेरे रहते क्या कभी कोई कष्ट हो सकता है जीवन मे!"

किशोर की माताजी की प्रेम-भरी बाते सुनकर प्रकाश के नेत्र छल-छला आए। उसने करुण दृष्टि से उनकी ओर देखा और उनके प्रति उसके हृदय मे अपार श्रद्धा उमड आई। आज वह उनके आचल मे सिर छिपाकर न जाने कितनी देर तक रोता रहा। वह खूब जी भरकर रोया। रो-रोकर अपने हृदय मे उठनेवाले बवडर को शात किया। प्रकाश ने अश्रु-पूरित नेत्रो से किशोर की माताजी के चेहरे पर देखा तो उसे लगा कि वह सचमुच अपनी ही माताजी की गोद मे पडा है। वह स्नेहावेश मे उनसे लिपट गया और किशोर की माताजी ने भी उसे दुलार से अपनी अक मे भर लिया। उन्होने प्रकाश को अपनी छाती से चिपकाकर उसपर अपना मातृ-स्नेह उडेल दिया।

समय धीरे-धीरे निकलता गया। नित्य के क्रिया-कलापो मे प्रकाश

के हृदय की वेदना कम होती गई। वह अपने सिर पर पडी महान आपत्ति को भुलाता गया और मानसिक स्थिति को ठीक करता गया। वह अपनी पढाई के काम मे पूरी तरह लग गया।

इसी बीच एक दिन बाबू ब्रिजकिशनजी प्रकाश के पास आए और उन्होने प्रकाश से उसका नीचे का मकान किराये पर देने की प्रार्थना की। प्रकाश की भी कुछ समझ मे आ गया। उसके पास अब आय का कोई साधन नहीं रहा था। प्रकाश ने अपने मित्र किशोर से परामर्श करके अपने मकान का नीचे का भाग किराये पर उठा दिया।

बाबू ब्रिजकिशन के स्वभाव से प्रकाश बहुत प्रभावित हुआ और उनसे भी अधिक प्रभाव प्रकाश पर उनकी पत्नी सरोज का पडा, जिन्होने प्रकाश से घर जैसा ही सबध स्थापित कर लिया। प्रकाश को अपने सगे देवर के समान स्नेह करने लगी।

किशोर अब एम० ए० मे पढ रहा था। प्रकाश किशोर के साथ नित्य कालेज जाता था और मन लगाकर अध्ययन करता था।

इन्ही दिनो किशोर के पिताजी ने अपने किसी मित्र की लडकी का रिश्ता अपने पुत्र किशोर के लिए स्वीकार कर लिया।

किशोर से इस विषय मे किशोर के पिताजी ने कोई परामर्श नही किया। लडकी देखने इत्यादि की प्रथा उन्हे पसद नही थी और उन्हे इस बात की आवश्यकता भी नही थी क्योकि लडकी उनकी देखी-भाली थी।

प्रकाश को किशोर के रिश्ते का पता चला तो उसने किशोर से पूछा, "किशोर! तुम भी बडे विचित्र व्यक्ति हो। बिना देखे-भाले ही जीवन-साथी का सौदा कर लिया तुमने। लोग-बाग गाय, बैल, भैंस खरीदते है तो भी वे उनकी शक्ल-सूरत और उनके स्वास्थ्य को देखते है। तुम अपना विवाह करने जा रहे हो और तुमने भाभी को पहले देखने का भी प्रयास नही किया।

"मुझे तुम्हारा इस प्रकार विवाह के मामले मे अधी मुडकी लगाना उचित नही जान पडा। तुम्हे विवाह से पूर्व हमारी होनेवाली भाभी को देख लेना चाहिए। ऐसा न हो कि पीछे पछताना पडे।"

प्रकाश की बात सुनकर किशोर मुस्कराकर बोला, "अधी मुडकी कैसे

है प्रकाश ! पिताजी ने क्या सब कुछ देख नही लिया होगा ? मैं उनके सामने क्या बोल सकता हू ? उनसे ऊपर होकर तो मै कुछ नही कर सकता।"

"कर क्यो नही सकते किशोर ! यह प्रश्न पिताजी के जीवन-साथी का नही, तुम्हारे जीवन-साथी का है। अपना जीवन-साथी तुम्हे स्वय चुनना चाहिए और उसमे पिताजी को कोई हस्तक्षेप भी नही करना चाहिए।" प्रकाश सतर्कतापूर्वक बोला।

किशोर ने प्रकाश की बात का कोई उत्तर न दिया। वह अपने पिताजी के निर्णय के विरुद्ध कुछ करने की बात सोच ही नही सकता था।

प्रकाश बोला, "पिताजी ने तुम्हारे रिश्ते के लिए धनाढ्य परिवार तो देखा, परन्तु यह नही देखा कि तुम्हारी गृहलक्ष्मी कैसी आएगी। वह इस घर मे उजाला करती हुई आएगी या अधेरा। वह यहा की शोभा को चार चाद लगाएगी या उसे फीका कर देगी ? उसके धन से इस घर की शोभा नही बढ सकती किशोर !"

किशोर अपने मन से अपने मित्र प्रकाश की बात से सहमत था, परन्तु लाचार था वह। सबध निश्चित हो चुका था और विवाह की तैयारिया होने लगी थी। दोनो ओर लगभग सब प्रबन्ध हो चुका था, केवल विवाह होना-भर शेष था। अब हो ही क्या सकता था।

विवाह का शुभ मुहूर्त आ गया। किशोर का विवाह खूब ठाट-बाट के साथ हुआ। बाजे-गाजो के साथ शानदार बारात गई और पाणिग्रहण-सस्कार हो गया।

दूसरे दिन वधू-पक्ष ने अपने दान-दहेज का प्रदर्शन किया तो किशोर के पिता की छाती फूलकर कई इच चौडी हो गई। बाराती भी चमत्कृत हो उठे। सामान का अम्बार लगा दिया था। वधू के पिता सेठ दामोदरप्रसाद की यह इकलौती कन्या थी और यही एक कार्य उन्हे जीवन मे करना था। उन्होने हर चीज मे जी खोलकर व्यय किया। अपनी ओर से उन्होने कोई कमी नही रहने दी किसी बात की।

किशोर की शादी की प्रशसा की चारो ओर धूम मच गई। सभीने किशोर के भाग्य की सराहना की। उनके नाते-रिश्तेदारो ने मुक्त कठ से

प्रशसा का। किशोर के पिताजी ने सभी नाते-रिश्तेदारो को खूब दे-लेकर अपनी ड्योढी से विदा किया।

किशोर की बहू घर मे आई। मुह-दिखावन की रस्म अदा हुई और एक दिन किशोर को भी अपनी पत्नी को देखने का अवसर मिला तो वह खडा का खडा ही रह गया। वह अपने मन मे अपनी पत्नी के रूप की जो प्रतिमा लिए बैठा था वह नेत्रो के सामने से तिरोहित हो गई। किशोर की बहू का रग गोरा न होकर सावला निकला।

उसने मन ही मन कहा, 'धोखा हो गया।' उसने बिना लडकी का देखे शादी करके नितात मूर्खता की।

वह कुछ व्यथित-सा पलग पर बैठ गया। उसकी पत्नी विमला ने अपने रूप का अपने पति पर पडनेवाला प्रभाव बहुत गम्भीर दृष्टि से देखा। उसे समझने मे देर न लगी कि उसके सावले वर्ण को देखकर उसके पति को महान निराशा हुई। वे पता नही कैसी-कैसी कल्पनाए उसके रूप के विषय मे अपने मन मे लिए बैठे थे। सोच रहे होगे कि उनकी पत्नी गोरी-चिट्टी होगी और मै निकली सावली।

विमला ने देखा कि उसके पति का गुलाब जैसा चेहरा अचानक ही मुरझा गया और उसके ऊपर निराशा की गहरी काली छाया छा गई। उन्होने जिस उत्साह के साथ कमरे मे प्रवेश किया था वह भग हो गया।

विमला ठगी-सी पलग के तकिये के सहारे मौन खडी रही। उसके नेत्रो से अश्रुधारा बह चली और उसने मन ही मन विधाता से कहा, 'विधाता! तूने सब कुछ तो दिया मुझे, परन्तु गौर वर्ण की तेरे पास इतनी कमी हो गई कि वह तू मुझे न दे सका। मुझे तू गोरा बना देता, और चाहे कुछ भी न देता। मैं कम से कम अपने पति की इतनी महान निराशा का कारण तो न बनती!'

किशोर फिर विमला की ओर न देख सका। वह नेत्र बन्द करके पलग पर लेट गया। न जाने कितनी देर तक वह उस सब दान-दहेज और दौलत को कोसता रहा जो उसे उसके ससुर ने प्रदान की थी, और अपनी निर्बलता पर भी उसे क्रोध आया कि उसमे क्यो नही इतना साहस हुआ कि वह अपने पिताजी से कह देता, "मैं बिना लडकी को देखे अपना विवाह-

सबध स्वीकार नही करूगा ।"

किशोर के जीवन पर घोर निराशा छा गई । उसका विवाह का सब उत्साह भग हो गया । उसे लगा कि वह ऐसे गहरे गढे मे गिर पडा जिसमे से जीवन-भर निकल नही सकता ।

विमला पलग के तकिये के सहारे खडी-खडी रात-भर अपने भाग्य पर पछताती और रोती रही । उसके जीवन की सब उमगो पर पानी फिर गया ।

सम्पूर्ण रात इसी प्रकार व्यतीत हो गई । एक-दूसरे से एक शब्द भी न बोल सका । दोनो के हृदयो मे महान पीडा थी । दोनो अपने-अपने दुर्भाग्य पर पछता रहे थे, अपने भाग्य को कोस रहे थे ।

विमला ने प्रथम बार घूघट की ओट से फेरो के समय जब अपने पति किशोर के दर्शन किए थे तो वह अपने आपे मे नही रही थी । उसने अपने भाग्य की लाख-लाख सराहना की थी और विधाता को लाख-लाख धन्यवाद दिए थे कि उन्होने उसे इतना सुन्दर पति प्रदान किया ।

कितने उत्साह के साथ वह आज प्रियतम से प्रथम भेट के लिए यहा एकात मे आई थी और कितनी श्रद्धा के साथ उनके दर्शनो की प्रतीक्षा कर रही थी । उसके मन मे आज कितनी उमग थी, कितना उत्साह था उसके हृदय मे ।

उसके अपने मस्तिष्क से अपना सावला वर्ण विस्मृत हो गया था । वह तो अपने पति के रूप पर ही न्योछावर थी । अपने विषय मे तो उसने कभी कुछ सोचा-विचारा ही नही था ।

अब उसे धीरे-धीरे अपनी कमी अनुभव होने लगी थी । उसने निराश मन से अनुभव किया कि सचमुच उसके पास वह रूप नही है जो किशोर जैसे सुन्दर युवक को प्रभावित करता । उसके लिए उसके पिता को उसीके वर्ण का पति चुनना चाहिए था । पिताजी ने लडके के रूप की ओर तो देखा अपनी पुत्री के सावले वर्ण की ओर उनकी दृष्टि नही गई ।

वह मन मारकर नितात अभागिनी-सी मौन किशोर के रूप को निहारती रही और सोचती रही कि इतना सुदर और गुणवान युवक क्या केवल गोरे रग-मात्र का ही लोभी है ? क्या नारी का एक-मात्र यही गुण है ?

दूसरे दिन प्रकाश ने किशोर से अपनी बैठक मे बैठकर एकात मे पूछा, "कहो मित्र! भाभी की लाटरी कैसी खुली? काली या गोरी, पतली या मोटी। आखे कैसी है गोल, चिरवा या छोटी। नाक कैसी है छोटी, नुकीली या दबी हुई।"

किशोर प्रकाश की बात का उत्तर न दे सका। उसने बडी ही दीन दृष्टि से प्रकाश की ओर देखा, मानो वह जीवन के इस सबसे बडे और महत्त्वपूर्ण सौदे मे बुरी तरह ठगा गया। किशोर लुट गया। अब जीवन-भर उसे पछताना ही होगा अपनी भूल पर।

किशोर की ऐसा दशा देखकर प्रकाश समझ गया कि किशोर को उसकी इच्छा के अनुरूप पत्नी नही मिली। प्रकाश के हृदय पर भी गहरी ठेस लगी। वह दु खी मन से बोला, "किशोर! तुमने सकोच ही सकोच मे अपने जीवन का उत्साह भग कर लिया। पिताजी की दृष्टि यह रिश्ता स्वीकार करते समय केवल उनके धन पर रही, उस रत्न को परखने का उन्होने प्रयास ही नही किया जो तुम्हारे जीवन का वास्तविक धन होनेवाला था। तुम जैसे सुन्दर युवक की पत्नी कैसी रूपवती और स्वस्थ होनी चाहिए थी, इसपर उनकी दृष्टि नही गई।" इतना कहकर प्रकाश का मन भी उदास हो गया। किशोर के मन की निराशा उसके ऊपर भी छा गई। वह अपनी भाभी को निहायत रूपवती देखना चाहता था।

विवाह की कल्पना करके युवावस्था मे जो उमग युवक और युवती के मन मे प्रवेश करती है वह विमला और किशोर दोनो के जीवन से तिरोहित हो गई। दोनो के जीवन को प्रारम्भ मे ही घोर निराशा ने घेर लिया। दोनो के दिल उदास हो गए। दोनो का उत्साह भग हो गया। दोनो के मन मुरझा गए।

किशोर की माताजी ने वधू को देखा। वर्ण कुछ सावला था उसका, परन्तु नक्श बहुत सुन्दर थे। उन्होने अपनी वधू के सावले वर्ण की ओर तनिक भी ध्यान नही दिया। वे अपने मन मे सतोष करके किशोर के पिताजी से बोली, "किशोर की बहू बहुत सुन्दर है किशोर के पिताजी! रग तनिक सावला अवश्य है, परन्तु नक्श बहुत अच्छे है। लडकी बडी सरल और अच्छे स्वभाव की प्रतीत होती है। शील और लज्जा के गुणो

से इसके चेहरे पर अद्‌भुत काति बिखरी हुई है ।"

किशोर की माताजी की बात सुनकर किशोर के पिताजी बोले, "रग से क्या होता है किशोर की मा ! लडकी का तो शील ही उसका रूप होता है । विमला के पिताजी मेरे घनिष्ठ मित्र है और हमारा यह सौभाग्य है कि उन्होने अपनी पुत्री विमला के लिए हमारे पुत्र किशोर को चुना । विमला के गुणो से अभी तुम परिचित नही हो किशोर की मा ! बहुत ही मधुर कठ है इसका और घर के काम-काज मे इतनी निपुण है कि तुम्हे राजगद्दी पर बिठला देगी यह । किशोर जब इसके गुणो से परिचित होगा तो रीझ उठेगा इसपर ।"

किशोर की माताजी का मन किशोर के पिताजी से विमला की प्रशसा सुनकर मुग्ध हो उठा परन्तु विमला के मन पर उसका कोई प्रभाव न पडा। काश उसके पति ने उसे पसद कर लिया होता ! आज अपने सास-ससुर के मुख से अपनी प्रशसा सुनकर उसके हृदय मे अमृत की धारा प्रवाहित हो उठी होती ! उसका मन-मयूर नृत्य कर उठा होता । परन्तु इस समय उसकी प्रशसा के ये उनके मीठे-मीठे शब्द उसमे तनिक भी उमग पैदा न कर सके । उसे केवल-मात्र इतना ही सतोष हुआ कि यहा सभी उसे कुरूप समझनेवाले नही है । सभीका मन उसकी ओर से कुठित नही है, परन्तु जब इनके पुत्र का मन कुठित ही बना रहेगा तो इनकी क्या दशा होगी ।

किशोर की माताजी को अपने पुत्र किशोर और विमला के पारस्परिक खिचाव को समझने मे विलम्ब न हुआ । किशोर कई दिन तक पढाई का बहाना करके प्रकाश के ही घर पर सोता रहा । अपने घर पर आना ही उसने बन्द कर दिया ।

इधर विमला का मन भी हर समय उदास-सा रहने लगा तो किशोर की मा ने एक दिन किशोर को बुलाकर एकात मे कहा, " बेटा किशोर ! हम लोग तुम्हारे मा-बाप है । तुम्हारे हित और अहित को हम तुमसे कही अधिक समझते है । तुम्हारे जीवन मे सुख और शाति रहे, हम सब काम इसी दृष्टि से करते है । हमने जीवन का इतना लम्बा समय इस दुनिया मे व्यतीत करके दुनिया को तुमसे अधिक गहराई के साथ देखा और परखा है । हम दुनिया को तुमसे बहुत अधिक समझते है ।

"मेरी पुत्रवधू बाजारो मे आवारा सिर फिकारे घूमनेवाली तितली नही खोजी है तुम्हारे पिताजी ने। उन्होने इस परिवार के सुयोग्य गृहिणी खोजी है। पत्नी का ऊपरी रूप मैं यह नही कहती कि कोई चीज ही नही है, परन्तु उसका वास्तविक रूप उसके गुण होते है। मेरी पुत्रवधू उन सभी गुणो की खान है किशोर! और उसका ऊपरी रूप भी कुछ कम नही है। तुम्हारी दृष्टि उसके सावले वर्ण से टकराकर ही कुठित हो उठी है। उसके सावले वर्ण मे कितना सौदर्य भरा पडा है यह देखने का तुमने प्रयास ही नही किया।

"विमला तुम्हारी गृहलक्ष्मी है। गृहलक्ष्मी का निरादर करना बहुत बुरी बात है बेटा! तुम एक योग्य पिता की योग्य सतान हो। तुम्हारे ऐसा व्यवहार करने से तुम्हारे परिवार के नाम को बट्टा लगता है।"

किशोर ने अपनी माताजी के शब्द बहुत शातिपूर्वक, अपने हृदय की व्यापक पीडा को दबाकर सुने, परन्तु उसके मुख पर प्रसन्नता की आभा न छिटक सकी। उसके मन पर उसकी पत्नी की कुरूपता की जो गहरी छाया छा गई थी उसे चीरकर उसका मन अपनी पत्नी की अन्तरात्मा मे प्रवेश न कर सका। उसके नेत्रो के सम्मुख विमला की वही काली छाया घूमती रही। वह कुछ व्याकुल-सा हो उठा। उसका मन मलिन-सा हो गया।

उसने अपनी माताजी की बात का कोई उत्तर नही दिया। किशोर की माताजी ने भी प्रसग को इस समय और आगे बढाना उचित नही समझा। वे मौन हो गई।

तभी प्रकाश आ गया और किशोर से बोला, "आज पुलिस क्लब से फुटबाल का मैच है किशोर! तुम शायद भूल ही गए। मै तुम्हारी प्रतीक्षा करता रहा और जब देखा कि तुमने करवट ही नही ली तो सोचा कि चलू तुम्हे घर से ही लेता चलू। चलो, शीघ्रता करो, चार बज चुके है। ठीक साढे चार बजे मैच प्रारम्भ हो जाएगा। आज पुलिस क्लब को पाच गोल से नही हराया तो कोई बात नही।"

प्रकाश को देखकर किशोर उठ खडा हुआ और तुरन्त जाकर मैच मे खेलने के लिए चलने को उद्यत हो गया। उसने उठकर अपने खेल के वस्त्र पहन लिए और फिर अपना फुटबाल-शू पहना। दोनो मित्र साथ-साथ

मैच खेलने के लिए चले गए।

विमला अन्दर कमरे मे बैठी थी परन्तु उसके कान यही पर थे। उसके हृदय मे अपनी सास के प्रति अगाध श्रद्धा उत्पन्न होती जा रही थी। उनके मुख से निकलनेवाला एक-एक शब्द उसके कानो मे अमृत की वर्षा कर रहा था। उसके पति को समझाने के लिए उन्होने जो कुछ कहा उसे सुनकर विमला को महान आत्मसतोष हुआ। उसे विश्वास होने लगा कि विधाता ने यदि चाहा तो किसी दिन अवश्य ही उसके पति उसके गुणो पर रीझ उठेगे।

विमला ने दृढ सकल्प कर लिया कि वह निश्चय ही एक दिन अपने शील और गुणो के प्रभाव से अपने पति के हृदय मे स्थान बना लेगी।

प्रकाश और किशोर चले गए तो किशोर की माताजी ने धीरे से पुकारा, "बहूरानी ! तुम अकेली कहा बैठी हो, यहा आ जाओ मेरे पास।"

विमला कमरे से उठकर अपनी सास के पास आ गई। तभी पास-पडोस की कुछ बहू-बेटिया आकर एकत्र हो गई। वे सब नई बहू को देखने के लिए आई थी।

विमला उन सबमे बैठकर बाते करने लगी और अपने विक्षुब्ध मन को सात्वना देने लगी। तभी पडोस की एक बहू सरोज वहा आ गई और उसपर विमला की दृष्टि गई तो उसका मन मलिन-सा हो उठा।

विमला को स्मरण हो आया कि जिस दिन वह वधू बनकर इस घर मे आई थी और मुह-दिखावन की रस्म अदा हुई थी तो सर्वप्रथम सरोज ने ही उसका घूघट खोला था। विमला का मुख देखकर सरोज ने होठ बिचका दिए थे और इठलाकर अलग जा खडी हुई थी। सरोज के उस होठ बिचकाने को विमला विस्मरण नही कर सकी थी।

सरोज का वह होठ बिचकाना किशोर की माताजी ने भी देखा था। उनके हृदय मे सरोज के होठ बिचकाने ने महान पीडा उत्पन्न की थी। वे सरोज को बडा स्नेह करती थी परन्तु अपनी पुत्रवधू के प्रति उसका यह व्यवहार देखकर उनका हृदय दुख गया था। उन्होने किशोर के पिताजी से अपनी पुत्रवधू के मधुर कठ की प्रशसा सुनी थी। आज उसी पहलू पर

लाकर वे सरोज का गर्व खडित कर देना चाहती थी।

किशोर की माताजी बडे सरल और प्रेमपूर्ण शब्दो मे बोली, "सरोज रानी! इधर बहुत दिन से हमने तुम्हारा गाना नही सुना। मैंने किशोर की बहू से तुम्हारे सगीत की प्रशसा की तो यह बोली कि यह भी अपनी जीजी का सगीत सुनने की बहुत इच्छुक है। आज अपना मधुर सगीत सुनाओ बहूरानी को!"

सरोज के रूप और सगीत का मुहल्ले की बहू-बेटियो पर बडा रोब था। दूसरो की बहू-बेटियो पर अपने गुणो की छाप बिठलाने मे सरोज प्रवीण भी बहुत थी। वह मुस्कराकर बोली, "आज तो मैं किशोर की बहू का गाना सुनने आई हू माजी! विमला अपना गाना सुनाने का वायदा करे तो मैं अभी सुनाती हू।"

किशोर की माताजी बोली, "तुम सुनाओ सरोज रानी! विमला भी सुनाएगी। तुम्हारे जैसा मधुर सगीत तो वह क्या सुना सकेगी परन्तु फिर भी जैसा टूटा-फूटा इसे आता है यह अवश्य सुनाएगी।"

सरोज को अपने सगीत पर अभिमान था। वह तुरन्त हारमोनियम लेकर गाने बैठ गई। सरोज ने गाना एक अनोखी अदा के साथ गाया जिसे सुनकर मुहल्ले की स्त्रिया मुग्ध हो उठी।

सरोज ने सगीत समाप्त किया तो विमला मुस्कराकर बोली, "जीजी को मालूम देता है सिनेमा देखने का बहुत शौक है। इसीलिए सिनेमा का गीत सुनाया। परन्तु यह कोई सगीत नही है। कोई शास्त्रीय सगीत सुनाइए। आप जैसी सुन्दर रूपवती के कठ से यह सगीत शोभा नही देता।"

इतना कहकर विमला अन्दर घर मे जाकर अपनी वीणा उठा लाई और उसे सरोज की ओर करके बोली, "लो जीजी! वीणा पर शास्त्रीय सगीत सुनाओ। हारमोनियम पर गाने से आपकी आवाज फट जाती है। सगीतज्ञ लोग हारमोनियम को सबसे निकृष्ट साज मानते है। कोई अच्छा गायक कभी हारमोनियम पर गाना पसद नही करेगा। आपको भी इसपर नही गाना चाहिए जीजी!"

विमला की सरल वाणी सुनकर उसकी सास का मन अन्दर ही अन्दर मुग्ध हो उठा। उसको अपनी मानसिक पीडा मे महान सात्वना मिली।

सरोज विमला की बात सुनकर स्तब्ध रह गई । वह बेचारी भला शास्त्रीय सगीत क्या जाने और क्या जाने वीणा जैसे साज को बजाना। उसने तो यूही एक कथावाचक हारमोनियम वाले से कुछ गाने सीख लिए थे और फिर प्रयास करके कुछ सिनेमा के गाने हारमोनियम पर निकालने लगी थी। उन्हीको गाकर वह मोहल्ले की स्त्रियो मे सगीतज्ञ बन गई थी।

सरोज तनिक लजाकर बोली, "मुझे वीणा पर गाना नही आता विमला!"

विमला मुस्कराकर बोली, "लाओ जीजी, मैं सुनाती हू तुम्हे।" और इतना कहकर विमला ने वीणा बजानी प्रारम्भ की। विमला की वीणा का मधुर स्वर वहा के वातावरण मे भरा तो सब स्त्रिया मत्रमुग्ध हो गई और फिर उसने गाया :

"मीरा के प्रभु गिरिधर नागर,
दूसरो न कोई। "

विमला का सगीत सुनकर मुहल्ले की स्त्रियो के मुख विमला की प्रशसा से भर उठे और सरोज का आज ऐसा मानमर्दन हुआ कि उसकी समस्त सगीत-कला पर पानी फिर गया। सरोज को विमला की कला-कारिता के समक्ष अपना रूप फीका-फीका प्रतीत होने लगा।

तभी विमला ने सरोज के मान का मर्दन करने के लिए एक और ठेस लगाई और मुस्कराकर बोली, "सरोज जीजी! सुना है आप बहुत सुन्दर नृत्य करना जानती है।"

सरोज लजाकर बोली, "विमला बहिन! मुझे क्या नृत्य आता है? मै तो यूही विवाह-शादियो मे मन-बहलावे के लिए नाच लेती हू।"

सरोज की दीन वाणी सुनकर विमला का मस्तक ऊचा हो गया। उसके सावले-सलोने रूप पर सरोज की दृष्टि गई तो वह चकित रह गई। उसने ऊपरी तौर पर विमला के वर्ण को देखकर होठ बिचका दिए थे। परन्तु आज जब उसने विमला के नक्श देखे तो वह उसके रूप की प्रशसा किए बिना न रह सकी।

सरोज के नेत्र विमला के नृत्य को देखने के लिए उतावले हो उठे थे। उसके कानो मे अभी तक विमला का सगीत-स्वर भरा हुआ था और उसकी

मिठास से उसका मानस भी मीठा हो उठा था। वह विमला के गुणो पर रीझती जा रही थी। बोली, "विमला बहिन, मै तुम्हारा नृत्य देखने को उतावली हो उठी हू।"

विमला की सास ने मुहल्ले-भर की स्त्रियो पर अपनी पुत्रवधू का कलाकारिता की छाप लगती देखकर विमला से कहा, "बहूरानी! नृत्य दिखलाओ। सरोज की बात तुम कभी न टालना। सरोज रानी मुझे बहुत प्रिय है।"

विमला ने फिर अपना वही प्रिय सगीत दुहराया

"मीरा के प्रभु गिरिधर नागर
दूसरो न कोई।"

और फिर वीणा को एक ओर रखकर राधिका का वह मनोरम नृत्य दिखलाया कि स्त्रिया वाह-वाह कर उठी। सरोज तो इतनी मुग्ध हुई कि खडी होकर विमला से लिपट गई और मुक्त कठ से बोली, "माताजी! ये तो राजरानी मीरा आ गईं आपकी पुत्रवधू बनकर।"

और फिर मुहल्ले की सब स्त्रियो के समक्ष अपने मन का चोर प्रकट करके विमला से बोली, "विमला बहिन! मैंने तुम्हारे साथ अन्याय किया है। तुमने चाहे देखा हो या न देखा हो, मैने जब प्रथम बार तुम्हारा मुह देखा और तुम्हारे वर्ण पर मेरी दृष्टि गई तो मैने होठ बिचका दिए। सच बात यह थी कि मुझे तुम्हारा रूप वैसा नही जचा जैसा मैं अपने देवर किशोर की पत्नी के लिए आवश्यक समझती थी। परन्तु अब तुम्हारे गुणो का देखकर वह रूप की कल्पना ही मेरी आखो के सामने से हट गई।"

सरोज की स्पष्ट बात सुनकर मुहल्ले की स्त्रिया तो हस पडी, परन्तु विमला के मन मे उसकी स्पष्टवादिता के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो गई।

विमला की सास ने सरोज को अपनी अक मे भरकर कहा, "सरोज रानी! नारी का रूप केवल उसका गौरवर्ण होना ही नही होता। मैं अपना भाग्य मानती हू कि जो मुझे विमला जैसी सुशील और गुणवती लडकी अपनी पुत्रवधू के रूप मे विधाता ने दी।"

आज विमला का सही रूप मुहल्ले की स्त्रियो ने देखा तो सभीने जाकर अपने आसपास मे उसके रूप और गुणो की प्रशसा की।

विमला के प्रति मुहल्ले की स्त्रियो मे उसके मुह-दिखावन के दिन जो वातावरण बना था उसे आज की चर्चा ने एकदम धोकर साफ कर दिया।

यह हवा मुहल्ले मे फैली तो वे स्त्रिया भी जो कभी किसीके घर नही जाती थी, विमला को देखने के लिए आई और सभीने उसके सावले रूप की मुक्त कठ से प्रशसा की ।

सरोज ने आज विमला के सही रूप के दर्शन किए। उन्होने देखा कि सचमुच विमला के सावले वर्ण के अन्दर एक अलौकिक सौंदर्य छिपा था। विमला के कठ का मधुर स्वर उनके कानो मे भरा हुआ था और उसने उनके हृदय को प्रभावित किया था। इतना मधुर सगीत सरोज ने पहले कभी नही सुना था। सिनेमा इत्यादि मे जो उथले और छिछले गाने उन्होने सुने थे वे सब उन्हे विमला के सगीत के समक्ष हेय प्रतीत हुए। उन्होने स्नेह-भरी दृष्टि से विमला की ओर देखा और विमला की प्रशसा से भरा हुआ हृदय और मस्तिष्क लेकर आज वे अपने घर लौटी।

४

सगीत-समारोह से लौटकर किशोर और प्रकाश दोनो किशोर के घर चले गए। दोनो को किशोर की माताजी ने पास-पास बिठलाकर भोजन कराया और भोजन करके प्रकाश अपने घर लौटा।

प्रकाश के मन मे अपने कहे गए उन शब्दो के प्रति बार-बार पश्चात्ताप घुमड-घुमडकर आ रहा था जो अनायास ही उसकी जबान से निकल गए थे। उसके उन शब्दो ने किशोर के हृदय पर गहरा आघात किया था। प्रकाश का मन तो बेचैन हो उठा था उन्हे उच्चारण करने के पश्चात् ही, परन्तु क्षमा भी वह न माग सका क्योकि क्षमा मागने का अर्थ था अपनी बात से गिर जाना। परन्तु उसका मन बहुत दुखी था। उसने अपने मित्र ही नही बडे भाई और भाभी के प्रति ऐसे शब्दो का प्रयोग किया, जिन्हे प्रयोग करने का उसे कोई अधिकार न था।

वह दु खी मन से सीधे जीने पर चढकर अपने कमरे मे पहुच गया।

सरोज भाभी ने, जो प्रकाश के मकान मे किराये पर रहती थी, प्रकाश को इस प्रकार मन मारे ऊपर जाते देखा तो वह भी मुस्कराती हुई उसके पीछे ही पीछे उसके पास पहुच गई।

सरोज ने अपने स्नेह से प्रकाश के मन मे सगी भाभी जैसा स्थान बना लिया था और प्रकाश उनके पति बाबू ब्रिजकिशनजी का बडे भाई के समान आदर करता था।

सरोज भाभी के पास दो घडी बैठकर प्रकाश अपने हृदय के दर्द को भूल जाता था। उनका स्नेह प्राप्त करके उसने कुछ ही दिनो मे अपने जीवन के अभावो को भुला दिया था और सच भी यही था कि सरोज भाभी प्रकाश का पूरा-पूरा ध्यान रखती थी। उसे अपने सगे देवर के समान पास बैठाकर भोजन कराती थी। और ध्यान रखती थी कि प्रकाश को अपने माता-पिता का अभाव महसूस न हो। प्रकाश घर मे प्रवेश करता था तो वे 'लालाजी, लालाजी,' की झडी लगा देती थी। प्रकाश अनुभव करने लगता था कि उसका घर भरा-पूरा है, सूना नही। सरोज बोली, "इतने उदास-से क्यो हो लालाजी ?"

"कोई विशेष बात नही, यूही मन तनिक खिन्न-सा हो गया भाभी।"

"कोई बात तो अवश्य है।" सरोज भाभी बोली, "इतना उदास तो पहले कभी नही देखा मैने तुम्हे।"

"आज मुझसे एक भूल हो गई भाभी।" प्रकाश बोला।

"ऐसी क्या भूल बन पडी लालाजी से ! तनिक मैं भी तो जान लू उसे ?"

प्रकाश अन्यमनस्क ढग से बोला, "कुछ नही भाभी ! पता नही कैसे मेरी जबान से कुछ ऐसे शब्द निकल गए कि जिन्होने मेरे मित्र किशोर के हृदय को ठेस पहुंचाई। मुझे ऐसे शब्द उच्चारण नही करने चाहिए थे। मैंने आज जीवन मे बहुत बडी भूल की।"

सरोज ने मुस्कराकर पूछा, "ऐसे क्या शब्द निकल गए तुम्हारी जबान से लालाजी कि जिन्होने बेचारे किशोर बाबू का दिल तोड डाला ?"

प्रकाश ने सरोज के चेहरे पर देखा तो उसके बिखरे हुए रूप पर उसके नेत्र उलझकर रह गए। वह बोल नही सका एक शब्द भी। उसकी वाणी

कठ मे ही रुककर रह गई।

सरोज ने सरस वाणी मे पूछा, "क्या अपनी भाभी से भी छिपाने की कोई बात है लालाजी ?"

"नही भाभी !" प्रकाश बोला, "मेरी हार्दिक इच्छा यह थी कि मेरे मित्र की पत्नी ऐसी ही रूपवती हो जैसी आप है। परन्तु किशोर के पिताजी ने धनाढ्य घराना देखकर किशोर का विवाह एक ऐसी लडकी से कर दिया जो काली है। जिसे देखकर किशोर का मन खिन्न हो गया और उसके जीवन मे निराशा का अन्धकार छा गया। उसे अपनी पत्नी को देखकर घोर निराशा हुई। आज सध्या को मेरे मुख से किशोर की पत्नी के लिए 'काली-कलूटी' शब्द का प्रयोग हो गया। बडा भारी अनर्थ हो गया भाभी ! मुझे इन शब्दो का प्रयोग करने का कोई अधिकार नही था। मुझे किसी भी दशा मे ऐसे शब्दो का प्रयोग नही करना चाहिए था।"

सरोज का मन प्रकाश की बात सुनकर पहले तो गुदगुदा उठा। उनके रूप की कितनी बडी प्रशसा प्रकाश ने की और कितना अनुपम उसने उसे समझा कि उसीके अनुरूप रूपवती पत्नी की आकाक्षा वह अपने मित्र किशोर की पत्नी के लिए करने लगा। उनका यौवन झकृत हो उठा। उनके रूप पर और भी दमदमाहट आगई। उनके हृदय मे प्रकाश के प्रति स्नेह उमड आया। उनके नेत्र स्नेहावेश मे सजल हो उठे।

परन्तु तुरन्त ही किशोर की पत्नी विमला के लिए प्रयुक्त शब्द जो उनके कानो मे पडे तो वह तिलमिला-सी उठी। वह आज विमला के ऊपर अपने रूप और गुणो की छाप बिठलाने उसके घर गई थी। परन्तु वहा उन्हे अपने रूप और गुणो से कही अधिक निखरा हुआ रूप और गुण विमला मे देखने को मिला। सरोज की सरल और निर्मल प्रकृति उनका स्वागत किए बिना न रह सकी।

उन्होने मुक्त कण्ठ से उसकी प्रशसा की और सरोज की प्रशसा का प्रभाव मुहल्ले-भर की स्त्रियो पर पडा। उनके निर्णय पर अपना विपक्षी निर्णय देने का किसी स्त्री मे साहस नही था।

सरोज भाभी सरल प्रकृति से बोली, "यह तो सचमुच लालाजी तुमसे अनायास ही बहुत बडा अन्याय हो गया, परन्तु यह आधारित किशोर बाबू

की उस सूचना पर ही है जो उन्होने अपनी पत्नी के विषय मे तुम्हे दी ।

"सत्य यह है कि किशोर बाबू ने अपनी पत्नी के रूप और गुणो को अभी देखा ही नही। उन्होने उच्छृखल प्रवृत्ति से विमला का केवल वर्ण-मात्र ही देख पाया। उसके सावले-सलौने रूप तक उनकी दृष्टि नही पहुच सकी और उसके गुणो को तो जानने का उन्होने प्रयास ही नही किया। किशोर बाबू को पत्नी-स्वरूप एक देवी मिली है प्रकाश लालाजी !"

सरोज भाभी की बात सुनकर प्रकाश स्तब्ध रह गया। वह समझ ही न पाया कि आखिर वह कैसा रूप है जिसकी सरोज भाभी ने इतनी प्रशसा कर डाली।

अभी दस दिन पूर्व इन्ही सरोज भाभी से जब प्रकाश ने किशोर की पत्नी के रूप-सौन्दर्य के विषय मे पूछा था तो इन्होने होठ बिचका दिए थे और इनके नेत्रो मे उपेक्षा भर उठी थी। परन्तु आज उसका दूसरा ही रूप समक्ष था।

तभी सरोज भाभी कह उठी, "यही भूल मुह-दिखावन के दिन मैंने भी की थी लालाजी। परन्तु आज मुझे अपनी उस भूल के लिए विमला के समक्ष क्षमा-याचना करनी पडी।"

प्रकाश के नेत्र सरोज भाभी के मुख पर पडकर अपलक हो गए। वह बोला, "भाभी, तुम सचमुच बडी महान हो। अपनी भूल को स्वीकार करके आपने क्षमा-याचना करली। परन्तु मेरी धृष्टता देखिए कि मै क्षमा-याचना भी न कर सका।"

सरोज मुस्कराकर बोली, "विमला बडी सरल और गुणवती लडकी है लालाजी! उसका कण्ठ बडा मधुर है। वह सगीतकला और नृत्यकला में निपुण है। आज मैने उसका सगीत सुना और नृत्य देखा तो आत्मा प्रसन्न हो गई। नृत्य करती है तो राजरानी मीरा जैसी प्रतीत होती है। उसके मन मोहनेवाले सौन्दर्य का क्या वर्णन करू तुमसे।"

सरोज इतना कहकर बाबू ब्रिजकिशनजी के पास चली गई और प्रकाश अकेला अपने कमरे मे बैठा रह गया। वह आज बहुत देर तक अपने मित्र किशोर की पत्नी के विषय मे सोचता रहा और सोचता रहा कि यदि सरोज भाभी जो कुछ कह रही है, वह सत्य है तो किशोर ने वास्तव मे

अपनी पत्नी के साथ बहुत अन्याय किया। किशोर में अपनी पत्नी के गुणों को परखने की क्षमता होनी चाहिए।

वह यह सब सोच ही रहा था कि तभी सरोज भाभी फिर मुस्कराती हुई प्रकाश के पास आ गई और बोली, "लालाजी, आज एक बात कहने आई हू तुमसे।"

"कहो भाभी !" प्रसन्नमुद्रा मे प्रकाश ने कहा।

सरोज भाभी बोली, "अब तुम भी अपना विवाह कर डालो लाला-जी ! यह घर सूना-सूना अच्छा नही लगता।"

प्रकाश प्रसन्न मुद्रा मे बोला, "भाभी, आपके रहते भला यह घर सूना कैसे है ? आप सच जाने कि जब आप यहा नही थीं तो मेरा यहा एक क्षणके लिए भी मन नही लगता था। मैं यहा बहुत कम ठहरता था। परन्तु जब से आप आई है तो मेरा मन यहा लगने लगा है।"

सरोज भाभी मुस्कराकर बोली, "लालाजी! विवाह कर लो, फिर देखना कि इस घर से बाहर जाने का मन ही नही होगा तुम्हारा। बाहर जाते-जाते रुक जाया करोगे, घर की देहली से बाहर निकलकर फिर वापस लौट आया करोगे और तुम देखोगे कि अपनी सुन्दर पत्नी का मुख देखने की आकाक्षा तुम्हारे हृदय मे हर समय बनी ही रहेगी।"

प्रकाश मुस्कराकर बोला, "तो भाभी अपनी जैसी ही कोई सुन्दर-सी बहू खोजकर ला दो मेरे लिए भी। परन्तु पढी-लिखी होनी चाहिए।"

सरोज भाभी मुस्कराकर बोली, "ऐसी सुन्दर बहू लाकर दू अपने लालाजी को कि लालाजी भी मुग्ध हो उठे। इधर तुम एम० ए० मे पढ रहे हो और वह वकालत मे। दोनो की जोडी बहुत सुदर रहेगी।"

प्रकाश बोला, "क्या सच भाभी ! क्या वह आपके ही समान रूपवती आपसे तनिक भी उन्नीस हुई तो मैं रिश्ता स्वीकार नही करूगा।"

सरोज भाभी मुस्कराकर बोली, "मुझसे भी अधिक सुदर लालाजी ! मैं तो कुछ भी नही हू उसके सम्मुख और तुम स्वय देख लेना उसे। वह ऐसी लडकी नही है कि जिसे तुम देख न सको। खरे सोने को दिखाने मे किसे संकोच होगा ?"

सरोज भाभी की बात सुनकर प्रकाश के मन में गुदगुदी-सी पैदा होने

लगी। अपनी पत्नी के रूप की जो कल्पना उसने की थी उसे सरोज भाभी द्वारा प्रस्तावित लडकी के अन्दर वही रूप दिखाई देने लगा।

प्रकाश बोला, "तो कब दिखलाओगी भाभी ! उस लडकी को ?"

सरोज भाभी मुस्कराकर बोली, "बहुत शीघ्र दिखलाऊगी अपने लालाजी को।"

इतना कहकर सरोज भाभी चली गई और प्रकाश उस लडकी के विषय मे सोचता रहा। वह सोचता रहा कि कही वह भी वैसी ही सुन्दर न हो जैसी किशोर की पत्नी की अभी-अभी सरोज भाभी प्रशसा कर रही थी कि जिसके रूप और गुणो को परखने मे इन्हे इतना समय लगा और किशोर अभी तक न समझ पाया।

नारी का गुणवान होना आवश्यक है, परन्तु रूप भी एकदम भुला देने की वस्तु नही है। गुणो का सुख मन को प्राप्त होता है और रूप का नेत्रो को। केवल गुणो के आधार पर ही यदि पत्नी का चयन कर लिया जाए तो नेत्र बेचारे जीवन-भर तरसते ही रह जाएगे।

नेत्रो का सुख भी एक अनोखी ही वस्तु है। वह नारी के प्रति आकर्षण की प्रथम सीढी है। उसीपर चढकर उसके मन-मदिर को निरखा और परखा जा सकता है। पुरुष यदि पहली ही सीढी पर न चढ पाया तो मन तक पहुचना ही उसके लिए असभव हो जाता है। नारी का यह प्रभाव पुरुष के जीवन मे सर्वदा अशाति बनाए रखता है और इसके अभाव में नारी के सब गुण फीके-फीके दिखलाई देने लगते है।

फिर उसे ध्यान आया कि सरोज भाभी ने अभी-अभी कहा था कि वह उनसे भी अधिक सुन्दर है। भाभी झूठ नही बोल सकती मुझसे। वे मुझे धोखा भी नही दे सकती और फिर जब उन्होने दिखलाने की बात कह दी है तो झूठ और धोखे का प्रश्न ही नही उठता।

प्रकाश का गोरा और स्वस्थ बदन विशेष आकर्षण की वस्तु थी। उसके विवाह के लिए भी उसके पास अनेको प्रस्ताव आ चुके थे। एक से एक धनी रिश्ते को वह रिजेक्ट कर चुका था। सुन्दर से सुन्दर लड़कियो के चित्रों को भी देखकर उसने उनमे कुछ न कुछ दोष निकाल दिया था।

परन्तु आज प्रकाश की जाने क्यो ऐसी दशा हो गई। भाभी के तनिक

से कहने पर प्रकाश का मन उस लडकी को देखने के लिए उतावला हो उठा और उसके नेत्र उस सुन्दरी के दर्शन करने को व्याकुल हो गए।

प्रकाश को अपनी इस दुर्बलता पर तनिक क्रोध-सा भी आ गया। उसने मन ही मन कहा, 'मैंने भाभी के सम्मुख आज अपना बहुत ही दुर्बल स्वरूप प्रस्तुत किया। मुझे ऐसा कदापि नही करना चाहिए था। भाभी भी भला क्या सोचती होगी अपने मन मे। कहती होगी कि मै शादी के लिए कितना उतावला हुआ बैठा हू। तनिक-सा एक प्रस्ताव सम्मुख आया और मै उतावला हो उठा उसके लिए। उसकी समझ मे न आया कि वह इतना दुर्बल कैसे हो गया। ऐसे-ऐसे न जाने कितने प्रस्ताव आ चुके हैं। बाबू मनोहरलाल की लडकी मे क्या कमी थी? ज़रा-सा मस्सा ही तो था उसके गाल पर, जिसे मेरे नेत्र सहन न कर सके। लाला बालमुकुन्द की लडकी कैसी विदुषी और सुन्दर थी। केवल दो दात उसके कतार मे नही थे। साधारण-सा दोष था परन्तु उसे भी मै सहन न कर सका। श्री जीवनरामजी की लडकी को जरा छोटी नाक के कारण मुझे रिजेक्ट करना पड़ा। बाबू ब्रिजकिशोर की लडकी की बायी आख मे तनिक-सा दोष था, वैसे रूप उसका कितना प्रशसनीय था। मैने उसे भी पसद नही किया। यदि इन्हीके समान कोई दोष सरोज भाभी की बतलाई हुई लडकी में भी निकल आया तो मुझे इसे भी रिजेक्ट करना होगा। मैं एकदम अनूठी ही लड़की का रिश्ता स्वीकार कर सकता हू।'

प्रकाश ने गर्व के साथ आरामकुर्सी के तकिये से कमर लगाकर अपने-आप से ही कहा, 'प्रकाश बाबू देखती आखों मक्खी नही निगल सकते। परमात्मा की प्रदान की हुई अपनी दो मोटी-मोटी आखो का वे पूरी सतर्कता के साथ अपनी पत्नी के चुनाव मे प्रयोग करेंगे।'

यह सोचकर प्रकाश कुर्सी से खडा होकर अपने कमरे मे इधर से उधर घूमने लगा। जब घूमते-घूमते पर्याप्त समय हो गया तो वह अपने पलंग पर जाकर लेट गया।

आज बहुत देर तक प्रकाश को नीद नही आई। सरोज भाभी का रूप उसके सम्मुख आकर खडा हो गया और फिर उसने देखा कि उसमें और निखार आ गया। वह रूप सरोज भाभी के रूप से कहीं अधिक आकर्षक

प्रतीत हुआ प्रकाश को। प्रकाश मुग्ध हो उठा उसे देखकर। वह कल्पित रूप प्रकाश के नेत्रो मे समा गया।

रूप की इसी मनोरम प्रतिमा को अपने हृदय और मस्तिष्क मे स्थापित करके जाने कब प्रकाश को नीद आई, उसे पता ही न चला। वह जब तक जागता रहा रूप की वही प्रतिभा उसकी आखो के सम्मुख खडी मुस्कराती रही।

५

आज प्रात काल प्रकाश बहुत सवेरे उठा और नित्यकर्म से निवृत्त होकर किशोर के घर पहुच गया।

किशोर की माताजी को प्रकाश सादर प्रणाम करके बोला, "माताजी! किशोर कहा है?"

"अभी आता है बेटा! वह तुमसे पहले तैयार बैठा है परीक्षा-फल देखने के लिए तुम्हारे साथ जाने को। मुझसे कहकर गया है कि प्रकाश आए तो बिठाना।"

"परन्तु गया कहा है वह माताजी?" प्रकाश ने पूछा।

"यही पास के हलवाई की दूकान से जलेबिया लेने गया है। तुम क्या जानते नही हो कि किशोर को गर्म जलेबिया खाने का कितना शौक है।"

प्रकाश मुस्कराकर शिकायत की जैसी मुखाकृति बनाकर बोला, "हा देखो तो माताजी! किशोर ने मेरी भी आदत बिगाड डाली। मुझे भी गर्म जलेबिया खाने का शौक डाल दिया इसने। और माताजी, अब यह किशोर भाभी को भी यही शौक डालने का प्रयास कर रहा होगा।"

प्रकाश की बात सुनकर किशोर की माताजी को हसी आ गई।

प्रकाश ने ध्यान से किशोर की पत्नी के महीन घूघट मे से दृष्टि गडाकर देखा तो उसके दातो की पक्ति भी कुछ खुल गई थी। उसका चेहरा भी मुस्करा उठा था।

प्रकाश के हृदयमे हिलोर-सी उठ गई भाभी की हसी और मुस्कराहट को

देखकर ।

तब तक किशोर जलेबिया लेकर आ गया और प्रकाश से बोला, "तुम आ गए प्रकाश ! न आते तो मुझे अभी तुम्हे बुलाने के लिए जाना होता ।"

प्रकाश हसकर बोला, "क्या मेरे आने मे तुम्हे अब भी कोई सदेह है ?"

किशोर की माताजी ने चटाई बिछाकर दोनोको उसपर बिठलाया और फिर दो तश्तरियो मे गर्म जलेबिया और दो गिलासो मे दूध भरकर दोनो को परोसकर कहा, "तुम दोनो का मुह मीठा करके भेज रही हू । दोनो आकर अपनी माता के कानो मे अपने पास होने की मीठी-मीठी शुभ सूचना डालना ।"

प्रकाश छाती फुलाकर बोला, "हम दोनो पास होगे माताजी ! इस वर्ष हमने बहुत परिश्रम किया है ।"

"तुम्हारी कामना सफल हो बच्चो ! तुम दोनों जीवन मे उन्नति करो और फलो-फूलो ।" माताजी ने आशीर्वाद दिया ।

माताजी का आशीर्वाद प्राप्त कर दोनो मित्रो के मन फूल जैसे खिल उठे । दोनों के हृदय आनद और उत्साह से भर गए ।

किशोर की मोटर मे बैठकर दोनो मित्र हिन्दुस्तान टाइम्स कार्यालय पर पहुच गए ।

वहा और भी कुछ विद्यार्थी पहुचे हुए थे । ज्योही अखबार छपकर बाहर आया, छात्रो ने उसे झट ही खरीद लिया । सबने रोलनम्बरोवाला पन्ना निकाला और अपने-अपने रोलनम्बर खोजने प्रारम्भ किए ।

प्रकाश और किशोर ने भी दो पत्र खरीद लिए और रोलनम्बरोवाला पन्ना उलटकर उसमे अपने रोलनम्बर खोजने प्रारम्भ किए । क्षण-भर मे ही दोनों के नम्बर पत्र में मिल गए । प्रकाश प्रथम श्रेणी में पास हुआ और किशोर द्वितीय श्रेणी मे ।

दोनों मित्र प्रसन्नचित्त घर लौटे और किशोर की माताजी को अपने पास होने का शुभ सवाद दिया । माताजी के हर्ष का पारावार न रहा ।

विमला ने भी अपने पति के परीक्षा मे उत्तीर्ण होने का समाचार सुना

तो वह मुग्ध हो उठी ।

किशोर की माताजी ने दोनो बच्चो के पास होने की प्रसन्नता मे तय दस रुपये की मिठाई पास-पडौस के घरो मे भिजवाने के लिए मगवाई । घर मे मगल छा गया ।

तभी किशोर के पिताजी भी अखबार हाथ मे लिए अन्दर आकर सहर्ष बोले, "किशोर की माताजी ! तुम्हारे दोनो पुत्र पास हो गए और प्रकाश फर्स्ट डिवीज़न मे पास हुआ है । इनका मुह मीठा कराओ । और बहूरानी को भी मिठाई खिलाओ,उसके पति और देवर प्रकाश दोनो विश्वविद्यालय की सर्वोच्च परीक्षा मे उत्तीर्ण हुए है ।"

किशोर के पिताजी की बात सुनकर किशोर की माताजी सहर्ष बोली "आपके लाडलो का मुह तो मैने परीक्षा-फल प्राप्त होने से पूर्व ही मीठा करा दिया था । मुझे विश्वास था कि दोनो पास होगे । क्या आज तक कभी इनमे से कोई किसी परीक्षा मे फेल हुआ है जो आज मेरे लिए आशका का कोई कारण था ? और बहूरानी का मुह भी तभी मीठा करा दिया था । अब तो मुहल्लेवालो का मुह मीठा कराने के लिए मिठाई मगवाई है ।"

"अच्छा, अच्छा ।" कहकर किशोर के पिताजी अपने कपडे की कोठी मे चले गए । किशोर के पिताजी का कपडे का बहुत बडा कारोबार था ।

प्रकाश यहा से अपने घर आया तो सरोज भाभी उसके आने की प्रतीक्षा मे थी । उन्होने प्रकाश के घर मे प्रवेश करते ही प्रकाश के खिले मुखमण्डल पर देखा तो समझ गई कि लालाजी परीक्षा मे उत्तीर्ण हो गए, फिर भी उत्सुकता मिटाने के लिए पूछा, "परीक्षा-फल आ गया लालाजी ?"

"आ गया भाभी ! और तुम्हारा देवर फर्स्ट डिवीजन से पास हुआ है । परन्तु भाभी ! दु ख इस बात का रहा कि किशोर का सेकण्ड डिवीजन रह गया । पता नही कौन-सा पर्चा उसका खराब हो गया था ।"

सरोज ने प्रकाश के हाथ से हिन्दुस्तान टाइम्स की प्रति लेकर उसमे एल० एल० बी० की परीक्षा का फल देखा तो अनायास ही सरोज भाभी के चेहरे पर रौनक आ गई । वे नेत्र घुमाकर बोली, "लो लालाजी ! मेरी प्रस्तावित तुम्हारी पत्नी भी एल० एल० बी० मे उत्तीर्ण हो गई और प्रसन्नता की बात यह रही कि उसने भी परीक्षा फर्स्ट डिवीजन मे ही पास

की है।"

प्रकाश की ज़बान से अनायास ही निकल पडा, "क्या सच भाभी! ज़रा देखू तो क्या है उनका रोलनम्बर ?"

सरोज भाभी ने अपनी वह डायरी, जिसमे रोलनम्बर लिखा था और पत्र दोनो प्रकाश के हाथ मे देकर कहा, "लो तुम स्वय देख लो लालाजी ?"

तभी किशोर की माताजी का नौकर सरोज भाभी के यहा मिठाई लेकर आ गया। सरोज ने अपने घर जाकर मिठाई की तश्तरी संभालते हुए पूछा, "अरे ,कैसी मिठाई भेजी है यह माताजी ने रामदीन ?"

"भैया प्रकाश और किशोर भैया पास हो गए अपने इम्तिहान में बहूजी! उसीकी मिठाई भेजी है माजी ने।"

"अच्छा!" आखे मटकाकर सरोज ने कहा।

सरोज भाभी के अपने घर चले जाने पर प्रकाश ने डायरी में लिखे रोलनम्बर को देखा तो उसके सामने लिखा था : 'मालती'। प्रकाश को समझने में विलम्ब न हुआ कि उस लडकी का नाम मालती है, जिसके विषय मे भाभी ने उससे कहा था।

प्रकाश ने 'मालती' शब्द का कई बार उच्चारण किया तो उसे इस नाम के लेने में मिठास आने लगी। उसने मन ही मन कहा, 'सुन्दर नाम है।'

प्रकाश के सम्मुख मालती की साक्षात् प्रतिमा आकर खड़ी हो गई। सरोज भाभी से भी सुन्दर, गोरी-चिट्टी और रूपवती बी०ए० एल० एल० बी०। उसके होंठों से निकला,'जब इतनी रूपवती और पंडिता है तो कौन-सा वह गुण है जो उसमें नही होगा ?'

तभी सरोज भाभी आ गईं और मुह बनाकर बोली,"लालाजी, आपने मेरा अधिकार मुझसे क्यो छीना ?"

प्रकाश ने सरोज भाभी के मुस्कराते चेहरे पर देखकर पूछा, "आपका कौन-सा अधिकार मैंने छीनने की धृष्टता की भाभी ?"

सरोज बोला, "तुम पास हुए तो मुहल्ले में मिठाई मैं बांटती। अब यह मुझसे पूर्व ही किशोर की माताजी ने मुहल्ले में मिठाई बटवा दी। बतलाओ, अब मैं क्या करू ?"

प्रकाश हंस पडा सरोज भाभी की स्नेह-भरी बात सुनकर और हसकर बोला, "तुम अपनी मिठाई बटवादो भाभी ! तुम्हे क्या मैंने रोक लिया है ? मैंने माताजी से ही मिठाई बटवाने को कब कहा था ? आपकी मिठाई लेने को मुहल्ले का कोई व्यक्ति मना नहीं करेगा ।"

सरोज बोली, "कहा नही तो क्या ? सूचना तो पहले जाकर आपने उन्हीको दी और मैं यहां प्रतीक्षा ही करती रही ।"

ये बाते चल ही रही थी कि तभी घर के द्वार पर बाबू ब्रिजकिशनजी एक कुली पर एक बिस्तर तथा एक सूटकेस उठवाए हुए चले आए। प्रकाश ने देखा कि उनके साथ एक युवती भी थी ।

सरोज भाभी उन्हे देखकर नीचे चली गईं और स्नेह से उस आनेवाली महिला को अपने घर के अन्दर लिवा लाईं ।

फिर बहुत देर तक सरोज भाभी ऊपर नही आईं । प्रकाश समझ गया कि उनकी कोई मेहमान आई हैं। उन्हीको लेने के लिए ब्रिजकिशनजी आज सवेरे ही सवेरे स्टेशन गए थे ।

प्रकाश को मेहमान मे कोई दिलचस्पी नही थी । वह अपने कमरे मे बैठा रहा। उसने नीचे झांकने और आनेवाली महिला को देखने तक का प्रयास नही किया ।

थोड़ी देर मे सरोज भाभी एक डलिया मे कुछ फल लेकर ऊपर आई और मुस्कराकर बोली, "लो लालाजी ! मिठाई तो माताजी ने तुम्हे खिला ही दी । अब फल खाओ भाभी के हाथ के !"

प्रकाश ने मुस्कराकर फलों की डलिया सरोज भाभी के हाथ से लेकर कहा, "मालूम देता है आपके यहा आनेवाली मेहमान लाई हैं ये फल। लीचियो को देखकर ज्ञात होता है कि मेहमान देहरादून से आई हैं ।"

सरोज भाभी मुस्कराकर बोली, "तुमने ठीक अनुमान लगाया लालाजी ! ये इस समय देहरादून से ही आ रही है ।"

केवल इतना मात्र कहकर सरोज भाभी फिर नीचे चली गई और प्रकाश अकेला ही बैठा रह गया।

प्रकाश आज बहुत प्रसन्न था । वह एकात मे बैठा था, अपनी बैठक मे । तभी उसकी दृष्टि कमरे मे लगे हुए अपने माता-पिता के चित्रो पर जा

पडी।

उन्हे देखते ही प्रकाश का हृदय उमड आया। उसने मन ही मन कहा, 'आज माताजी और पिताजी होते तो उन्हे मेरे पास होने की सूचना प्राप्त करके कितने सुख तथा शाति की प्राप्ति होती। उनके हृदय आज हर्ष से फूल उठते और माताजी ने आज मुझे न जाने कितनी बार अपनी छाती से लगाकर दुलारा होता। पिताजी इस समाचार को प्राप्त कर फूले नही समाते और जब तक अपने सब मित्रो को यह सूचना नही दे लेते तब तक उन्हे चैन नही पडता।'

प्रकाश के नेत्रो से अश्रुधारा प्रवाहित हो चली। उसके नेत्रो के सम्मुख उसके माता-पिता की साक्षात् प्रतिमाए आकर खडी हो गईं। वे दोनो प्रकाश को उसकी सफलता पर आशीर्वाद दे रहे थे।

यह देखकर प्रकाश रोता-रोता एकदम प्रफुल्लित हो उठा उसने मस्तक झुकाकर दोनो को प्रणाम किया और फिर ऊपर देखा तो वहा कोई नही था।

इसी बीच सरोज दबे पाव चुपके से आकर प्रकाश के पीछे खडी हो गई थी। प्रकाश ने पीछे की ओर मुह किया तो सरोज भाभी गम्भीर मुद्रा मे उसके पीछे खडी मिली।

सरोज ने प्रकाश के गालो पर आसुओ के निशान देखे तो करुण स्वर मे कहा, "लालाजी को अपने माता-पिता की स्मृति हो आई। आज यदि वे होते तो यह दिन उनके जीवन का कितना सुखद दिन होता जब उनके लाडले पुत्र ने विश्वविद्यालय की अतिम परीक्षा प्रथम श्रेणी मे पास की है।"

प्रकाश के नेत्र जो अभी कुछ समय पूर्व अश्रु बहाना बन्द कर चुके थे सरोज भाभी की बात सुनकर बरस पडे।

सरोज भाभी ने कभी आज तक प्रकाश के बदन को छुआ नही था, केवलमात्र दूर-दूर से ही स्नेहपूर्ण बाते भर कर ली थी प्रकाश से। आज वे प्रकाश की इस अथाह वेदना को सहन न कर सकी। उन्होने आगे बढ-कर अपनी धोती के आचल से प्रकाश के नेत्र पोछे और स्नेह से अपने निकट को करते हुए कहा, "लालाजी! इतने दिन की दबी प्यार की ज्वाला

आज अचानक ही तुम्हारे हृदय मे दहक उठी।

"मुझे भी जब अपने माता-पिताकी स्मृति हो आती है तो कई-कई घटे मेरा मन उद्विग्न रहता है। मै उस समय कुछ सोच नही सकती, कुछ कर नही सकती। मैं सज्ञाविहीन-सी हो उठती हू।"

"तो क्या आपके माता-पिता का भी स्वर्गवास हो चुका सरोज भाभी?" प्रकाश ने रुद्ध कठ से पूछा।

सरोज मुस्कराकर बोली, "बहुत दिन हो चुके लालाजी! इतने लाड-चाव से मुझे और मेरी बहिन को पाल रहे थे वे कि विधाता से हमारा सुख देखा नही गया। एक महीने के अन्दर-अन्दर ही विधाता ने दोनो को हमसे छीन लिया। हमारे एक चाचा थे जिनके सरक्षण मे पिताजी ने हमे अपने अतिम समय छोडा। मै बहुत छोटी थी उस समय और मेरी बहिन मुझसे भी कई वर्ष छोटी। चाचा का व्यवहार हमारे साथ अच्छा नही रहा। जो रुपया पिताजी उन्हे हमारे पालन-पोषण के लिए देकर गए थे वह उन्होने हज्म कर लिया और हम दोनो को अपनी नौकरानी समझना प्रारभ कर दिया। मुझसे चाचा का यह व्यवहार सहन न हो सका। उस समय चाचा हमारे मकान मे ही रह रहे थे। मैंने उस समय बडी ही सावधानी और निर्भीकता से काम लिया। मैंने एक दिन, जब चाचीजी अपने बच्चो के साथ अपने मैके गई हुई थी, चाचाजी के रात्रि को घर लौटने पर घर के द्वार नही खोले। उस दिन वे लाख चिल्लाए परन्तु मैने द्वार खोले ही नही और दूसरे सम्पूर्ण दिन भी द्वार बन्द ही रखे। दूसरे दिन चाचा दिन मे दो बार आए तो द्वार उन्हे बन्द ही मिला। जब तीसरी बार आए तो मैने गलीवाली खिडकी से मुँह निकालकर कहा, 'चाचाजी! अब आप अपने रहने का प्रबन्ध कही अन्यत्र कर लीजिए। यह मकान मेरे पिता का है और इसमे हम दोनो बहिने ही रहेगी। आप अब हमारे घर न आया करे।'"

"अरे वाह! भाभी, वाह! आपने तो कमाल कर दिया।" एकदम प्रसन्न होकर प्रकाश बोला, "उस पाजी चाचा के साथ आपने बिलकुल उचित व्यवहार किया। आपको यही करना चाहिए था।" तो इस प्रकार अपने चाचा से मुक्त होकर आप अपने पैरो पर खडी हुई।"

"हा लालाजी ! मैंने केवल एक कमरा अपने और अपनी बहिन के लिए रखकर शेष सारा मकान किरायेपर चढादिया।" इतना कहकर सरोज भाभी के चेहरे पर प्रसन्नता झलक उठी। उनके नेत्रो से प्रकाश फूट पडा। उनका हृदय खिल उठा। उनके चेहरे की काति बढ गई।

इस आकस्मिक परिवर्तन को देखकर प्रकाश ने सरोज भाभी से पूछा, "फिर क्या हुआ भाभी ?"

"फिर क्या हुआ अब यह बतलाऊ तुम्हे लालाजी, फिर यह हुआ कि तुम्हारे भाई साहब हमारे मकान मे किरायेदार बनकर आ गए।"

सरोज भाभी की बात सुनकर प्रकाश के चेहरे पर मुस्कराहट नाच उठी। वह बोला, "और भैया के आते ही भाभी के नेत्र भैया के नेत्रो से जुड गए। दोनो के हृदय की रागिनी एक स्वर मे बजने लगी। दोनो का जीवन एक धारा मे प्रवाहित हो चला।"

"सचमुच लालाजी ! तुम्हारे भैया का जो रूप मैंने वहा देखा उसमे आज तक मुझे कोई परिवर्तन दिखलाई नहीं दिया। वही सौम्यता, वही सरलता जिसपर मैं मुग्ध हो उठी थी, उनके जीवन की अमूल्य निधिया हैं आज भी। कितना निष्कपट हृदय पाया है तुम्हारे भैया ने कि बस क्या कहू मैं ! मेरे दुर्भाग्यपूर्ण जीवन को इन्होने स्वर्गिक आनद की वाटिका मे लाकर रख दिया। अपने भविष्य के विषय मे जो संकल्प-विकल्प मेरे मन मे उठा करते थे उन सबसे मुझे मुक्ति दिलाना तुम्हारे भैया का ही काम था।"

भाभी के मानस को इस प्रकार अपने पति के प्रति श्रद्धा से ओत-प्रोत देखकर प्रकाश का मन पुलकायमान हो उठा। ब्रिजकिशनजी के सरल स्वभाव को प्रकाश ने भी अनेको बार परखा था। उनके निष्कपट चरित्र से वह अनेको बार प्रभावित हुआ था। वह मुक्त कठ से बोला, "भाभी ! भैया सचमुच वह हीरा हैं जो किसी भाग्यवान स्त्री को ही प्राप्त हो सकते थे। आप भाग्यवान थी इसीलिए आपको यह अमूल्य हीरा प्राप्त हो सका।"

"सचमुच हीरा है लालाजी ! वरना जैसे मैं चाचाजी को घर से निकालकर एकदम बेसहारा हो गई थी तो मेरा रहना कठिन हो जाता

वहा। उसके बाद भी चाचाजी अपनी हरकतो से बाज नही आए। उन्होने हमे कचहरी तक घसीटा, परन्तु अन्त मे उन्हे मुह की खानी पड़ी। तुमही बतलाओ, यदि उस समय मुझे तुम्हारे भैया का सहारा न मिला होता तो मैं कैसे वह मुकदमा लडती और कैसे उस मकान को बचा पाती जिसने हम दोनो बहिनों की नौका किनारो पर लगा दी। वह मकान न होता तो हमारा और क्या सहारा था?"

प्रकाश आज सरोज भाभी की साहसपूर्ण कहानी सुनकर मुग्ध हो उठा और बाबू ब्रिजकिशन के प्रति भी सहानुभूति उसके हृदयमे कम नही हुई। उसने उन दोनो ही प्राणियो को श्रद्धा की दृष्टि से देखा।

सरोज यह कहकर हस पडी और हसती-हसती ही बोली, "लालाजी, आज जिस कहानी को सुनाकर मैं तुम्हारे समक्ष हस पडी, जब यह समस्या बनकर मेरे सिर पर मडराई थी तो सच जानो मुझे रात-दिन नीद नही आती थी। चाचाजी का दावा था कि वह मकान उनका है, परन्तु पिताजी के सन्दूक से मुझे उस मकान की रजिस्ट्री की एक रसीद मिल गई। उसीको लेकर तुम्हारे भाई साहब ने रजिस्ट्रीखाने से असल रजिस्ट्री की नकल प्राप्त करली और मै मुकदमा जीत गई।"

तभी बाबू ब्रिजकिशन ने सरोज भाभी को आवाज दी और वे नीचे चली गई। प्रकाश अकेला बैठा सरोज की कहानी को अपने मन मे दुहरा-दुहराकर प्रसन्न होता रहा। अपने हृदय की पीडा को वह भूल ही गया और उसका मन सरोज भाभी की सराहना से भर उठा।

६

दूसरे दिन प्रात काल प्रकाश सोकर उठा और नित्यकर्म से निवृत्त होकर ज्योही अपने ड्राइगरूम मे आया तो उसने देखा कि बाबू ब्रिज-किशन धीरे-धीरे जीने की सीढियो पर चढे चले आ रहे थे।

वे प्रकाश बाबू के पास आकर बोले, "प्रकाश, स्नान आदि से निवृत्त हो चुके?" इतना कहकर वे वही प्रकाश के पास बैठ गए।

प्रकाश बोला, "कर चुका भाई साहब !"

"कल तुम्हारी भाभी ने बतलाया कि तुमने प्रथम श्रेणी मे एम० ए० की परीक्षा पास की है। सुनकर बहुत आनन्द प्राप्त हुआ। अब तुम किसी कालेज मे प्रोफेसर बन सकोगे। क्यो ? कैसी रहेगी यह दिशा ?"

"बहुत अच्छी रहेगी भाई ब्रिजकिशनजी ! मेरी रुचि भी है इस दिशा मे। मेरी इच्छा है कि मै जीवन-भर विद्यार्थी ही बना रहू।" प्रकाश बोला।

ये बाते चल ही रही थी कि तभी सरोज बादामी साडी पर सुनहला ब्लाउज पहनकर माथे पर चौडी बिन्दी लगाए ऊपर आ गई और बाबू ब्रिजकिशनजी के पासवाली कुर्सी पर बैठकर मुस्कराते हुए बोली, "प्रकाश के भाई साहब ! मै कल लालाजी से कह रही थी कि अब इस सूने घर को आबाद कर डालो।"

सरोज भाभी की बात सुनकर बाबू ब्रिजकिशन बोले, "तुमने अपने देवर को उचित ही राय दी है सरोज ! सचमुच यह इतना बडा घर बहू-रानी के बिना उजाड-सा प्रतीत होता है। तुमने मेरा घर नही देखा था सरोज, तुम्हारे आने से पूर्व वह कैसा था ? क्या ठीक ऐसा ही नही था जैसा प्रकाश ने इस घर को बना छोडा है ? घर को सवारकर रखना स्त्रिया ही जानती हैं।"

बाबू ब्रिजकिशन की बात सुनकर प्रकाश मुस्कराकर बोला, "भैया ! भाभी ने मुझसे वायदा किया है कि ये मुझे अपने ही अनुरूप सुन्दर वधू लाकर देगी।"

"अरे सच !" बाबू ब्रिजकिशन बोले, "तो बात इतनी आगे बढ चुकी है।"

"भाई साहब ! भाभी कहने को तो कह गई परन्तु अब देख रहा हू कि अपनी प्रस्तावित लडकी को दिखाने में इन्हे सकोच हो रहा है। मुझे इन्होंने यह भी नही बतलाया कि ये उसे कब दिखलाएगी मुझे।" प्रकाश बोला।

सरोज भाभी मुस्कराकर बोलीं, "लालाजी ! तुम आंखें बन्द कर लो तो मैं जादू के ज़ोर से उस लड़की को तुम्हारे सामने लाकर खड़ी कर

दू।" और कहकर हस पडी।

प्रकाश सरोज भाभी की उपहासपूर्ण बातो से खूब परिचित था। उसने नेत्र बन्द करके कहा, "लो भाभी! मैने आखे बन्द कर ली। तुम बुलाकर ले आओ उस लडकी को।"

तभी सरोज की बहिन नाश्ते का सामान और चाय नौकर से लिवा-कर ऊपर आ गई और आकर अपनी बहिन और जीजाजी के पास खडी हो गई।

सरोज बोली, "लालाजी आखे खोल लो।"

प्रकाश ने आखें खोली तो रूप की साक्षात् प्रतिमा उसकी आखो के सम्मुख खडी थी। प्रकाश चकित-सा रह गया उसे देखकर, और देखता ही रहा बहुत देर तक। बिलकुल वही रूप था जो प्रकाश ने कल अपनी कल्पना मे निश्चित किया था।

बाबू ब्रिजकिशन बोले, "मालो! चाय बनाओ और नाश्ता तश्तरियो मे लगा दो।"

उस लडकी ने नाश्ता तश्तरियो मे लगाकर मेज पर रख दिया और चाय की प्यालिया भी भर दी।

सरोज बोली, "बैठो मालो! लालाजी के पास कुर्सी पर बैठ जाओ।"

कमरे मे चार ही कुर्सिया थी। मेज के एक ओर की दो कुर्सियो पर बाबू ब्रिजकिशन और सरोज भाभी बैठ गए थे और दूसरी ओर अकेला प्रकाश बैठा था।

मालो इठलाती हुई जाकर प्रकाश के बायी ओर पडी कुर्सी पर बैठ गई।

सरोज भाभी ने प्रकाश और मालो की जोडी को देखा तो वे ठगी-सी रह गई। उनके मन ने कहा, 'इन दोनो को विधाता ने एक-दूसरे के लिए ही बनाया है।' और फिर प्रकाश की आकृति की ओर देखा तो मन लहरा उठा उनका। उनका मन इस समय असीम आनन्द के सागर मे डुब-किया लगा रहा था।

चारो ने साथ-साथ बैठकर चाय पी और नाश्ता किया। उसके पश्चात् मालो और बाबू ब्रिजकिशन तो नीचे चले गए और सरोज प्रकाश

से बाते बनाती हुई वही रुक गई ।

एकात मे सरोज भाभी बोली, "लडकी पसद आई लालाजी ?"

प्रकाश मुस्कराकर रह गया भाभी की बात सुनकर और फिर धीरे से बोला, "अच्छा भाभी ! आपने पहले से यह क्यो नही बतलाया कि वह आपकी बहिन ही थी जिसके विषय मे आपने कहा था ।"

सरोज भाभी मुस्कराकर बोली, "मैं तुम्हारा पहले मन लेना चाहती थी लालाजी ! लडकियो की आब मोती जैसी होती है । उसे योही हर जगह उतारकर नही रखा जा सकता ।" कहते-कहते सरोज भाभी तनिक गम्भीर-सी हो गई । वे सोच रही थी कि प्रकाश 'हा, कहता है या 'ना' ।

प्रकाश बोला, "आपकी छोटी बहिन सचमुच रूप मे आप जैसी ही है भाभी !"

इसपर सरोज भाभी मुस्कराकर बोली, "सच बात कहो लालाजी ! तुम उसके रूप को मुझसे निखरा हुआ बतलाओगे तो सच जानो मै तनिक भी क्रोध नही करूगी तुमपर । मुझे प्रसन्नता ही होगी यह सुनकर ।"

प्रकाश सरोज भाभी की बात सुनकर मौन रह गया । उसकी आखो मे अभी तक मालो की काति बसी हुई थी । वह बोला, "आप इसे मालो क्यो कहती है भाभी ? क्या मालो ही इसका नाम है ?"

सरोज मुस्कराकर बोली, "'मालो' नही 'मालती' और 'मालती' भी नहीं 'मधुमालती' । माताजी इसे प्यार से 'मालो' कहा करती थीं सो वही मुझे भी कहने की बान पड गई और उसी नाम से तुम्हारे भाई साहब भी इसे पुकारने लगे ।"

प्रकाश हसकर बोला, "आपने तो भाभी अपनी बहिन का 'मधु' ही उससे पृथक् कर दिया ।"

सरोज भाभी मुस्कराकर बोली, "'मधु' पृथक् नही कर दिया लाला-जी ! 'हा' करो, फिर देखना मै तुम दोनो के जीवन मे कितना मधु उड़ेलती हू । मधु पीते-पीते तुम अघा न जाओ तब कहना ।"

प्रकाश कुछ देर स्निग्ध दृष्टि से सरोज भाभी के चेहरे पर देखता रहा और फिर मुस्कराकर बोला, "भाभी ! लो 'हा' कर दी आपके प्रकाश ने ।"

प्रकाश की 'हा' को सुनकर सरोज का मन मानो उछल पड़ा । उनकी

मनोकामना पूर्ण हो गई। सरोज भाभी को अपनी इच्छा का वर मिल गया था इससे उनकी आत्मा बहुत प्रसन्न थी।

आज वे अपनी छोटी बहिन के लिए भी इतना योग्य और सम्पन्न वर खोज सकी तो उन्होने समझा कि उनके लक्ष्य की पूर्ति हो गई। उन्होने अपनी छोटी बहिन के प्रति अपना कर्तव्य निभा दिया।

सरोज के मस्तिष्क की सारी समस्याए जैसे सुलझ गई। उन्होने अपनी बहिन को नीचे से पुकारा, "मालो, तनिक यहा तो आओ!"

मालो चटाचट सीढियो से चढकर एक क्षण मे ऊपर आ गई।

सरोज भाभी बोली, "लालाजी यह मालो नही, मधुमालती है। और मालती, ये मेरे देवर प्रकाश है। दोनो परस्पर परिचय प्राप्त कर लो। प्रकाश ने इसी वर्ष एम० ए० पास किया है, मालती ने एल० एल० बी०। तुम दोनों बैठो, बाते करो, मैं तब तक तुम्हारे जीजाजी के दफ्तर जाने का प्रबन्ध करती हू।" इतना कहकर वे मालती को वही छोडकर नीचे चली गई।

मालती बडी तेज-तर्रार लडकी थी। उसने बिना सकोच प्रकाश की बैठक की हर चीज को घूम-घूमकर देखा और चीजो को अस्त-व्यस्त पडी देखकर बोली, "आपका कमरा बडा ऊबड-खाबड पडा हुआ है। मालूम देता है महीनो से इसके सामान को किसीने साफ नही किया।"

प्रकाश का मन गुदगुदा उठा मालती की बात सुनकर। बात साधारण ही थी परन्तु उसे इसमे न जाने कितना माधुर्य प्रतीत हुआ। वह सरल मुस्कान अपने होठो पर छितराकर बोला, "तुम्हारा अनुमान सही है मालती-देवी! इस घर की चीजो को सम्भालनेवाला कोई है नही। एक मैं ही हू, सो मुझे कुछ ज्ञान नही है इन सब चीजो का।"

"ज्ञान नही है!" कहकर मालती हस दी, "इसमे ज्ञान की कौन-सी बात है प्रकाश बाबू! आप एम० ए० की परीक्षा मे प्रथम डिवीजन प्राप्त कर सकते है और इस साधारण-सी चीज का ज्ञान प्राप्त नही कर सकते! कही आपको आपके जैसी ही पढी-लिखी लडकी पत्नी-स्वरूप प्राप्त हो गई तो क्या दशा होगी इस घर की? आज एक अगुल रेता जमा है सब चीजो पर तो कल दो अगुल जमा हुआ मिलेगा। आप बुरा न माने तो एक

कडवी-सी बात कह दू आपसे। मैं इतने गन्दे कमरे मे थोडी देर भी नहीं बैठ सकती। मेरी साडी मैली हो सकती है यहा बैठने पर।"

प्रकाश मुस्कराकर बोला, "नही बैठ सकती तो साफ कर लो मालती! अपने घर की सफाई करके इसे स्वच्छ बना लो और फिर साफ-सुथरे घर मे बैठना। तुमसे कहता ही कौन है गन्दे घर मे बैठने के लिए।"

मालती मुस्कराकर बोली, "ना भाई ना, यह काम अपने वश का नही है। मैं तो किसी चीज की टीका-मात्र ही कर सकती हू। उसके अच्छा या बुरा होने की दलील दे सकती हू। इसीलिए तो एल० एल० बी० पास किया है मैने।"

प्रकाश को मालती की बातो मे न जाने कितना रस आ रहा था। मालती का एक-एक शब्द उसके कानो मे अमृत की बूदो के समान गिर रहा था। उसके नेत्र बार-बार उसके इठलाते हुए सौदर्य पर जाकर जम जाते थे और वह मत्रमुग्ध-सा उधर निहारता रहता था।"

तभी मालती ने मुस्कराकर पूछा, "मालूम देता है मेरा रूप आपको बहुत पसद आया। मेरे कालेज के विद्यार्थी भी इसी प्रकार एकटक मेरे रूप को निहारा करते थे।"

मालती की यह बात सुनकर प्रकाश को एक हलका-सा झटका लगा, परन्तु उसका मन सत्य की अवहेलना न कर सका। मालती का रूप सचमुच ऐसा ही था कि उसे एक बार देखकर तुष्टि नही हो सकती। जी चाहेगा कि उसे निरन्तर देखते ही रहो।

प्रकाश मालती की ओर देखकर तनिक बनावटी गम्भीर वाणी मे बोला, "आपका रूप सचमुच देखनेवालो को अपनी ओर आकर्षित करने की क्षमता रखता है। इसमे कोई सदेह नही। आपके कालेज के विद्यार्थियो ने यदि एकटक आपके रूप को निहारा तो उन्होंने उचित ही किया। ऐसा रूप भला अन्यत्र उन्हे कहा देखने को मिलता?"

प्रकाश की बात सुनकर मालती मुस्कराकर बोली, "आप मुझे बना रहे हैं प्रकाश बाबू! परन्तु मैं सच कह रही हू। मैने एक शब्द भी असत्य नहीं कहा।"

"मैं सच मान रहा हू मालती! तुमको मैं बना नही सकता। तुमको

बनाने मे विधाता ने कोई कमी नही छोडी है। नारी का सुन्दरतम रूप तुम्हे प्रदान किया है विधाता ने। फिर तुम ही सोचो कि विधाता की कलाकृति को मै भला कैसे बना सकता हू। मुझमे वह सामर्थ्य कहा जो इतनी सुन्दर और कलात्मक प्रतिमा गढकर तैयार कर सकू जैसी तुम्हारी है।" प्रकाश सरल स्वभाव से बोला।

प्रकाश की मधुर बातो को सुनकर मालती ने देखा कि उसके हृदय मे कुछ ऐसी लहर-सी प्रवाहित हो उठी जैसी पहले कभी नही उठी थी। उसकी दृष्टि कालेज के अनेको लडको पर पडी थी, परन्तु जमी कभी नही, पडी और तैरती चली गई। आज मालती ने अनुभव किया कि उसकी दृष्टि प्रकाश के ऊपर अनायास ही जमती जा रही थी।

उसने मुस्कराते हुए प्रकाश की ओर देखकर पूछा, "आपने किस उद्देश्य से एम० ए० पास किया है प्रकाश बाबू ?"

प्रकाश सरल वाणी मे बोला, "मेरी इच्छा प्रोफेसर बनने की है। प्रोफेसर का जीवन काफी शात और सरल होता है। मुझे जीवन मे अधिक उधेडबुन पसद नही है।" प्रकाश की बात सुनकर मालती तनिक गम्भीर-सी होकर बोली, "शाति और सरलता को लक्ष्य बनाकर आप जीवन मे उन्नति नही कर सकते। शाति और सरलता को मै मनुष्य के गुण नही मानती। हमलोग यदि शात और सरल ही बने बैठ रहते तो हमारे चाचाजी हमे कच्चा ही चबा जाते। उस समय यदि जीजी चालाकी और बुद्धिमत्ता से काम न लेती तो हम कही के भी न रहते।"

प्रकाश मुस्कराकर बोला, "भाभी के उस कार्य को चालाकी न कहो मालती, चतुराई कहो। शाति और सरलता से बुद्धि का ह्रास नही होता बल्कि और निखार आता है उसपर, गम्भीरता आती है उसमे। सरल का अर्थ तुमने मूर्खता किस कोष मे देख लिया मालती !"

मालती प्रकाश की गम्भीर बात सुनकर तनिक लजा-सी गई परन्तु फिर उसने इठलाकर कमरे मे इधर-उधर घूमना प्रारम्भ कर दिया।

प्रकाश मालती के रूप को अपलक नेत्रो से देख रहा था। मालती का रूप-सौदर्य और उसके बदन का पुष्ट गठन प्रकाश के हृदय मे गडता जा रहा था। उसका मन चाहता था कि उसे जितना भी अधिक से अधिक समय

मिले वह उसके रूप को देखता रहे ।

कितना अनुपम सौदर्य था वह । विधाता ने मालती के रूप का निर्माण करने मे अपनी सारी कला-कुशलता का प्रयोग किया था। विधाता के पास जितने भी सुन्दर से सुन्दर रग थे वे सब उसने मालती की प्याली मे उडेल दिए थे । उसके अग-अग का निर्माण करने मे विधाता ने अपनी अनोखी कुशलता का परिचय दिया था ।

मालती घूम रही थी और प्रकाश एकटक उसकी ओर देख रहा था। प्रकाश मौन बैठा अपने नेत्रो से मालती के मुख-चन्द्र से बरसनेवाली सुधा का पान कर रहा था ।

प्रकाश की दृष्टि मालती के नेत्रो पर पडी, वह अनायास ही उनकी ओर खिच गया । मालती के नेत्रो मे महान आकर्षण था । प्रकाश का हृदय और मन मालती की दृष्टि मे मानो बदी हो गए ।

प्रकाशनेसरलस्वभावसेपूछा,"मालती! तुमनेवकालत क्यो पास की?"

मालती बोली, "वकालत करने के लिए। क्या आपको यह पेशा पसद नही ?"

प्रकाश बोला, "पेशा कोई बुरा नही होता मालती! मनुष्य अपने प्रयोग से उसे भला या बुरा बना लेता है ।"

मालती प्रकाश के इस उत्तर से बहुत प्रभावित हुई । वह मुस्कराकर बोली, "आपने बिलकुल ठीक कहा। कुछ लोग सोचते है कि स्त्रिया खिलौना होती है, जिसके हाथ पडे उनसे खेलने लगे । परंतु मैं ऐसा नही समझती । अच्छाई या बुराई पेशे में नही होती, उसके प्रयोग में होती है ।"

इतना कहकर मालती एकदम विषय बदलकर बोली, "प्रकाश बाबू, उसी तरह जैसे रूप कोई चीज अपने मे नही होती ।"

"क्या मतलब ?" प्रकाश ने आश्चर्यचकित होकर पूछा और प्रश्न-वाचक दृष्टि से मालती के चेहरे पर देखा ।

मालती मुस्करा दी और वक्र दृष्टि से प्रकाश के चेहरे पर दृष्टिपात करके बोली, "जिस प्रकार कोई पेशा स्वय मे अच्छा या बुरा नहीं होता उसी प्रकार नारी या पुरुष का रूप भी अपने-आपमें कोई वस्तु नही है प्रकाश बाबू ! यह देखनेवालो की दृष्टि है जो उनमे रूप-कुरूपता अनुभव

करती है। ' आपने शायद न देखा हो और देखा भी हो तो शायद इतने ध्यान से न देखा हो जितने ध्यान से मैने देखा है। अधी, कानी, कुरूप और विकृत अगोवाली लड़कियो को मैंने उनके पतियो द्वारा प्रशसित होते सुना है। और क्या-क्या कुलाबे बाधते है वे लोग अपनी उन प्रेमिकाओ के कि मन मुग्ध हो उठता है। उनकी दृष्टि से विधाता का सब रूप और सौदर्य उनकी प्रेमिकाओ मे सिमट आता है।" कहकर मालती मुस्करा दी।

प्रकाश बोला, "मै तुम्हारी इस बात को आशिक रूप मे सत्य मान सकता हू मालती, पूर्ण रूप से नही। इसमे कोई सदेह नही कि उन प्रेमियों की दृष्टि मे उनकी प्रेमिकाओ का रूप अवर्णनीय हो उठता है, परन्तु इसका यह अर्थ नही कि वे प्रेमिकाए उनके प्रेमियो के देखने से रूपवती बन जाती है। वह तो दृष्टि-विशेष है अपनी-अपनी। अपनी दृष्टि से कोई कण को हिमालय समझ सकता है और बूद को समुद्र, परन्तु वास्तविकता यह है कि कण कण ही रहता है, और हिमालय हिमालय ही, बूद बूद ही रहती है, और सागर सागर ही। देखनेवाले की दृष्टि रूप-परिवर्तन नही कर सकती। वास्तविकता वह है जो सबको समान रूप से प्रभावित करे। वास्तविकता वह है जिसे हर दृष्टि समान रूप से देखे। जैसाकि तुमने अभी कुछ देर पूर्व बतलाया था कि जब तुम अपने कालेज कम्पाऊड मे घूमती थी तो तुम्हारे कालेज के विद्यार्थी तुम्हे ठीक उसी प्रकार देखा करते थे जिस प्रकार मैने तुम्हे देखा। इससे सिद्ध हुआ कि तुम्हारे पास अवश्य वह रूप है जो किसी व्यक्ति-विशेष को नही वरन् हर दृष्टि को समान रूप से प्रभावित करता है। यह तुम्हारे सौदर्य का गुण है, दृष्टि का समझना-मात्र नही।"

मालती हस दी प्रकाश की बात सुनकर और बोली, "आपने तो रूप की व्याख्या ही कर डाली प्रकाश बाबू। परन्तु मालूम देता है मेरे कालेज के विद्यार्थियो का मेरे चेहरे पर मटकी आखो से देखना आपको कुछ भला प्रतीत नही हुआ।"

मालती की बात सुनकर प्रकाश खिलखिलाकर हस पडा और फिर खड़ा होकर मालती के निकट पहुचकर बोला, "मालती! तुमने अपने कालेज के ऐरे-गैरे विद्यार्थियो की दृष्टि को प्रकाश की दृष्टि से मिला दिया।

क्या प्रकाश मे और उन विद्यार्थियो मे तुम्हे कोई अन्तर प्रतीत नही होता ?"

प्रकाश की बात सुनकर मालती ने एक बार ध्यान से प्रकाश को सिर से पैर तक देखा और फिर मुस्कराकर बोली, "अन्तर क्यो नही है प्रकाश बाबू ! आपके बदन के जैसा गठन उनमे किसीका भी नही था। आपके बदन मे पुरुषोचित रूप का जो कलात्मक निखार है, वह भी उनमे नही था।" इतना कहकर मालती ने मुग्ध दृष्टि से प्रकाश की ओर देखा और एकटक देखती ही रही कुछ देर तक।

प्रकाश बोला, "तुम बहुत चतुर हो मालती ! वकील जो ठहरी। शब्दो को घुमाने-फिराने की कला मे तुम बहुत प्रवीण हो, परन्तु मुझ जैसे सरल और सादा व्यक्ति पर तुम अपनी प्रवीणता का प्रयोग न करो तभी भला है। भगवान ने तुम्हे रूप दिया है और इस रूप और काति से युक्त मुख मे जो शब्द निकले उनमे प्रवीणता की अपेक्षा यदि सरलता रहे तो तुम्हारे सौदर्य मे और निखार आ जाए।"

मालती हस पडी प्रकाश की बात सुनकर और बोली, "मै फिर कहती हू प्रकाश बाबू ! कि आपका मुझे बनाना कुछ अच्छी बात नही है।"

तभी सरोज भाभी वहा आ गई और दोनो को परस्पर बाते करते देखकर बोली, "ज्ञात होता है तुम दोनो ने इतने कम समय मे ही अपनी प्रगाढ मित्रता बना ली है। क्यो लालाजी ! मालती को तो मैं छुटपने से जानती हू। यह मित्र बनाने की कला मे बहुत ही प्रवीण है। उडते पछी को अपने वाक्जाल जाल मे फसा लेती है यह। तुम फसना नही इसके जाल मे !" सरोज भाभी कहकर हस पडी।

मालती मुस्कराकर बोली, "ये आपके लालाजी तो फस चुके मेरे वाक्जाल मे जीजी ! अब देखती हू आप इनके बधन कैसे ढीले करती है।"

सरोज भाभी मुस्कराकर बोली, "लालाजी ! मेरी यह छोटी बहिन बहुत बाते करती है। इसकी सभी बातो पर तुम विश्वास न कर लेना।"

प्रकाश मुस्कराकर बोला, "परन्तु भाभी ! मुझसे तो इसने कोई ऐसी बात नही की जिसपर मैं विश्वास न कर सकू। मुझसे तो जो कुछ इसने कहा है, मुझे सत्य ही प्रतीत हुआ।"

मालती मुस्करा दी प्रकाश की बात सुनकर और वक्र दृष्टि से बोली, "वे सभी बाते जो आपसे की, जीजी से कहने की नही है प्रकाश बाबू।"

सरोज भाभी हस पडी मालती की भोली बात सुनकर, और बोली, "अच्छा जी ! तो मित्रता इस पैमाने पर पहुच गई कि ऐसी बाते हो चुकी जो जीजी से भी नही कही जा सकती।"

प्रकाश सरल वाणी मे बोला, "मालती ! मुझसे तुमने ऐसी क्या बात कही जो सरोज भाभी से नही कही जा सकती ?"

प्रकाश की सरल बात सुनकर सरोज भाभी हसकर बोली, "लालाजी, तभी तो मैं कह रही थी कि तुम इसकी बातो मे न आना। अब यह बात कहकर यह उन बातो को जानने की उत्कठा मेरे मन मे जाग्रत् करना चाहती है। परन्तु मै तो जानती हू इसे, कि इसने कहा कुछ भी नही और यह अपनी जीजी को टटोलने का प्रयास कर रही है।"

सरोज भाभी की बात सुनकर प्रकाश और मालती दोनो खिलखिला-कर हस पडे। उन्हीके साथ सरोज भाभी भी हस दी।

७

विमला और किशोर का जीवन अभी तक अलग-अलग ही चलता चला जा रहा था। किशोर के मन मे विमला के प्रति जो कुठा बैठ गई थी उसपर उसकी माताजी के समझाने का कोई प्रभाव न हुआ।

इधर कई दिन से प्रकाश किशोर के यहा नही आया था। प्रकाश का न मिलना किशोर के लिए असह्य हो उठा तो वह स्वय आज प्रकाश के घर की ओर चल दिया।

किशोर ने घर मे प्रवेश किया तो प्रकाश सामने बाबू ब्रिजकिशनजी के ही मकान मे बैठा नाश्ता उडा रहा था।

किशोर को आते देखकर प्रकाश कुर्सी से खडा होकर द्वार की ओर बढा और किशोर को अपने पास कुर्सी पर लाकर बिठाते हुए बोला, "लो भाभी ! आप अभी-अभी किशोर के विषय मे पूछ रही थी न ! यह आ गया।

आपने कई दिनो से मुझे अपने झमेलो मे ऐसा फसा लिया कि मै किशार की ओर जा ही नही सका। आपकी बहिन को दिल्ली की सैर कराने न जाता तो आप बुरा मानती और किशोर के यहा नही गया तो यह सोच रहा होगा कि मै कितना लापरवाह हो गया हू।"

प्रकाश की बात सुनकर किशोर मुस्कराकर बोला, "सरोज भाभी की बहिन को सैर कराना अधिक आवश्यक कार्य था प्रकाश! ये मेहमान जो हुई अपनी। मेरे पास तुम नही आए दो दिन तो तुम्हारी प्रतीक्षा करके मै स्वय चला आया तुम्हारे पास।"

तभी किशोर की दृष्टि सरोज भाभी की बहिन मालती के सुन्दर मुख पर जा पडी। दृष्टि का पडना था कि किशोर के मानस मे विद्युत-सी कौध उठी। मानो वह बैठा-बैठा ही सज्ञाविहीन-सा हो गया। रूप का सागर-सा लहरा उठा उसके नेत्रो के सम्मुख। किशोर के अपलक नेत्र मालती के चेहरे पर जमे देखकर प्रकाश को अथाह आनद की प्राप्ति हुई। उसे सतोष हुआ कि जिसे प्रकाश ने रूपवती गिना उसपर किशोर भिन्न मत न हो सका।

नाश्ते के पश्चात् प्रकाश और किशोर ऊपर जीने से चढकर प्रकाश की बैठक मे पहुच गए।

प्रकाश कुर्सी पर बैठते ही किशोर से बोला, "किशोर, देखी यह लडकी! कैसी जची तुम्हे? क्या तुम इसे अपने छोटे भाई प्रकाश की वधू बनाना पसद करोगे?"

प्रकाश की बात सुनकर किशोर का जैसे स्वप्न भग हो गया। उसका मस्तिष्क, जिस समय से उसने मालती के रूप को देखा था, उसके रूप और अपनी पत्नी की कुरूपता मे उलझा हुआ था। वह सोच रहा था कि वह आखे मीचकर अपने जीवन-पथ पर अवतीर्ण हुआ। परमात्मा ने दो आखे दी है भला-बुरा देखने के लिए। वह उनका भी उपयोग न कर सका अपनी पत्नी के चुनाव मे। आखे बन्द करके कुए मे छलाग लगा गया। वहा अब जीवन-भर पछताने के अतिरिक्त और क्या हाथ आनेवाला था उसके? जो लोग इस दुनिया मे आखे बन्द करके चलते हैं उनकी मेरे जैसी ही दशा होती है।

तभी प्रकाश का अतिम वाक्य उसके कानों मे बज उठा। वह जाग्रत्-सा

होकर बोला, "अद्भुत रूप पाया है सरोज भाभी की बहिन ने प्रकाश ! तुम्हारे उपयुक्त लडकी है यह, हर प्रकार से। विधाता तुम्हारी जोडी को बना दे तो अति उत्तम रहे। तुम जैसी पत्नी चाहते थे प्रकाश, तुम्हे वैसी ही पत्नी मिल जाए।"

प्रकाश मुस्कराकर बोला, "इसी वर्ष लॉ फर्स्ट डिवीजन मे पास किया है इसने। बडी चतुर लडकी है।"

"अरे वाह ! तब तो सोने को सोहागा मिल गया। रूप और विद्या दोनो का सामजस्य हो गया। फिर तुम ही क्या कम हो किसी बात मे ? मेरा भाई प्रकाश भी तो सर्वगुण-सम्पन्न है।" किशोर बोला।

"किशोर ! कोई कमी नही है मालती मे। मैने दो दिन इसके साथ रहकर पूरी गहराई के साथ देखा है। इसके अग-अग का विधाता ने बडी कुशलतापूर्वक निर्माण किया है। क्या मजाल जो कही बाल बराबर भी किसी चीज मे कोई कमी दृष्टिगोचर हो। हर चीज का निर्माण विधाता ने नाप-तोलकर किया है।" प्रकाश बोला।

किशोर की आखो के सम्मुख इस समय मानो मालती बैठी मुस्करा रही थी। उसकी रूप-आभा उसके सम्मुख बिखरी पडी थी। किशोर को वह आभा अपने छोटे भाई सरीखे मित्र प्रकाश के बहुत उपयुक्त जची। वह मुक्तकण्ठ से बोला, "प्रकाश ! तुम जैसी पत्नी चाहते थे विधाता ने घर बैठे वैसी ही तुम्हारे पास भेज दी। सरोज भाभी की बहिन के रूप और गुणो में कोई कमी नही है। भय केवल एक ही बात का प्रतीत हो रहा है प्रकाश, कि कही यह भी तुम्हारी ही तरह तर्क-वितर्क करनेवाली लडकी न हो, और होगी यह अवश्य।"

"यह कैसे जाना तुमने !" आश्चर्यचकित होकर प्रकाश ने पूछा।

"ऐसा न होता तो यह लॉ पास न करती। इसका वकालत पास करना इसका द्योतक है। इसके अन्दर यह प्रवृत्ति न होती तो यह वकालत पास करने का स्वप्न न देखती।" किशोर बोला।

प्रकाश बोला, "तर्क-वितर्क का कुपरिणाम मनो मे मैल होने पर बुरा निकल सकता है किशोर ! परन्तु मालती के प्रति मन मे मैल उत्पन्न होने का तो मुझे कोई कारण प्रतीत नही होता। और उसके मन मे भी भला

मैल क्यो पैदा होगा ? तुम कम से कम मेरे स्वभाव से तो परिचित ही हो।"

किशोर मुस्कराकर बोला, "सरोज भाभी की बहिन सचमुच बहुत रूपवती है प्रकाश ! इसके विषय मे दो मत नही हो सकते। मुझे इसके रूप और गुणो मे कोई कमी प्रतीत नही होती, तुम चाहो तो माताजी भी आकर देख ले इसे।"

"तुमने मेरे मुह की बात छीन ली किशोर ! मै आज स्वय आनेवाला था माताजी के पास इस कार्य के लिए। तुम आ गए, यह अति उत्तम हुआ।" प्रकाश बोला।

आज किशोर की माताजी प्रकाश के घर आई और नीचे सरोज के घर मे प्रवेश करके बोली, "सरोज रानी ! तुम तो जैसे मुहल्ले से लापता हो गई। किशोर की बहू नित्य दोपहर मे तुम्हारी राह देखती है और तुम्हारे न आने पर निराश होकर रह जाती है।"

किशोर की माताजी को अपने आगन मे खडी देखकर सरोज ने आगे बढकर उन्हे प्रणाम किया और उनके बैठने के लिए पीढा डालकर वे स्वय चटाई पर बैठते हुए अपनी बहिन की ओर सकेत करके बोली, "दो दिन से यह छोटी बहिन आ गई थी मेरी ! इसीसे आपके यहा न आ सकी। क्षमा करना माताजी ! और विमला से भी मेरी क्षमा-याचना कह देना।"

किशोर की माताजी सरोज की बहिन की ओर देखकर बोली, "अच्छा, अच्छा ! तो बहिन है यह तुम्हारी छोटी। कितनी मिलती है यह तुम्हारी सूरत से ? क्या नाम है इसका सरोज रानी ?"

"मधुमालती।" सरोज ने कहा।

"कितना मधुर नाम है इसका। रूप और माधुर्य को मानो विधाता ने एक ही स्थान पर लाकर एकत्रित कर दिया है। बिटिया कुछ पढी-लिखी भी है सरोज ?" किशोर की माताजी ने पूछा।

सरोज भाभी सगर्व बोली, "इसी वर्ष फर्स्ट डिवीजन मे लॉ पास किया है माताजी ! बडी ही तीव्र बुद्धि है इसकी।"

"हा हा, क्यो नही सरोज रानी ! तुम्हारी बहिन होकर इतनी तीव्र बुद्धि भला क्यों न होती।" किशोर की माताजी ने सहर्ष कहा। उन्हें मालती बहुत पसंद आई।

मालती के रूप ने किशोर की माताजी को बहुत प्रभावित किया। वे मालती को देखकर अपने घर चली गई। किशोर के पिताजी अभी-अभी पूजा से उठे थे। उन्होने पूछा, "आज इतना सवेरे ही सवेरे किधर चली गई थी किशोर की माताजी ?"

किशोर की माताजी प्रसन्नतापूर्वक बोली, "मिठाई खिलाने का वायदा करो तो एक बहुत मीठी बात सुनाऊ आपको।"

"हा, हा, मिठाई क्यो नही खिलाएगे तुम्हे जब तुम मीठी बात सुनाओगी ?" इतना कहकर उपहास मे किशोर के पिताजी घूघट मे बैठी विमला की ओर देखकर बोले, "क्यो बेटी! तुम्हारे पिताजी तुम्हारी माताजी को मीठी बात सुनाने पर मिठाई खिलाते है ना! सो मैं भी आज तुम्हारी सास को खिलाऊगा।"

विमला के हृदय मे ससुर के उपहास का मधुर रस भर गया। उसके निरतर गम्भीर बने चेहरे पर भी आज हास्य की रेखा खिच गई।

किशोर की माताजी मुग्ध मन से बोली, "आपके लाडले प्रकाश की होनेवाली बहू को देखने गई थी।"

"अरे सच! यह लडका तो बडा पाजी निकला। हमसे पूछा भी नही और बात पक्की कर ली।" वे बोले।

किशोर की माताजी प्रसन्नतापूर्वक बोली, "परन्तु बहू अपने अनुरूप ही छाटी है उसने। बहुत सुन्दर है किशोर के पिताजी, और इसी वर्ष उसने फर्स्ट डिवीजन मे लॉ पास किया है।"

"लॉ पास किया है!" किशोर के पिताजी की जबान से अनायास ही निकल गया। "फिर वह शादी किसलिए करेगी किशोर की माताजी! वह वकालत नही करेगी ? वह गृहिणी नही बन सकती। प्रकाश के जीवन मे वह शान्ति का सचार नही कर सकती। और हा, जरा यह भी तो सुनू कि वह है, कौन ?"

"वह सरोज रानी की छोटी बहिन है मालती।" किशोर की माताजी हर्षित मन से बोली।

किशोर के पिताजी का यह सब सुनकर माथा ठनक उठा। उन्हे यह सब कुछ पसद नही आया। वे दुखी मन से बोले, "आज प्रकाश के पिताजी

जीवित होते तो वे कदापि इस रिश्ते को स्वीकार न करते।"

वे बाहर को चलने लगे तो किशोर की माताजी बोली, "किशोर के पिताजी, आप प्रकाश से कुछ कहना नही। उसने उसे बडे मन से पसद किया है। आप कही कुछ बुराई न ले बैठना इस विषय मे।"

किशोर के पिताजी बोले, "मैं बुराई नही लूगा किशोर की माताजी! परन्तु मुझे यह पसद कतई नही आया। लडकी का रिश्ता लेने के लिए केवल लडकी का रूप ही नही देखा जाता। रूप के अतिरिक्त भी बहुत-सी चीजे होती है देखने के लिए। उसके परिवार का पूर्ण ज्ञान किए बिना रिश्ता स्वीकार नही करना चाहिए।"

किशोर के पिताजी का यह विरोध सुनकर किशोर की माताजी सहमी-सी रह गई। उनका सारा उत्साह भग-सा हो गया। वे एक शब्द भी न बोल सकी, परन्तु उनके मन मे भी कुछ आशका-सी अवश्य उत्पन्न हो गई। उन्होने गम्भीर दृष्टि से मालती के विषय मे सोचा तो उन्हे मालती के बिखरे हुए रूप मे भारतीय सभ्यता की झलक दिखलाई नही दी। बहू-बेटियो को चाहिए कि वे अपने रूप को समेटकर रखे, बिखराकर नही। जो रूप जितना बिखरा हुआ होगा उसके उतना ही शीघ्र मैला होने की सम्भावना बनी रहेगी।

वे न जाने क्यो प्रकाश के लिए चिंतित-सी हो उठी। उनके पति द्वारा प्रदर्शित आशका उनके मस्तिष्क मे घर कर गई। परन्तु साथ ही उनके समक्ष अपने पुत्र और पुत्रवधू का परस्पर बिगडा हुआ सम्बन्ध भी था। वे फिर बहुत देर तक उसपर सोचती रही और सोचती रही कि आजकल के लडके-लडकिया अपने विवार-सम्बन्धो के बीच से अपने माता-पिता को बिलकुल निकाल फेकना चाहते है। क्या उनका यह विचार उचित है?

उनका मन कुछ खिन्न-सा हो उठा। परन्तु उन्होने इस खिन्नता को अपने चेहरे पर नही उभरने दिया।

थोडी देर में किशोर ने बाहर से आकर पूछा, "क्या गई थी माताजी आप प्रकाश के घर?"

"गई थी बेटा!"

"सरोज भाभी की बहिन देखी आपने?"

"देखी बेटा!"

"कैसी लगी आपको ?"

"बहुत सुन्दर है ।"

यह सुनकर किशोर का मन खिल उठा। वह बोला,"भाग्य से प्रकाश को उसकी इच्छा के अनुरूप ही लडकी मिल गई । न मिलती तो उसका मन बडा उदास रहता।" और वह तुरन्त प्रकाश के पास जा पहुचा।

प्रकाश अकेला अपने कमरे में बैठा था। किशोर को देखकर वह खडा हो गया और बोला,"माताजी आकर देख गई है सरोज भाभी की बहिन को।"

किशोर ने कहा, "और उन्होने सरोज भाभी की छोटी बहिन को बहुत पसद भी किया प्रकाश !"

"क्या सच ?" कहकर प्रकाश उछल पडा। उसे पूर्ण आशा थी कि माताजी मालती को निश्चित रूप से पसद करेगी।

दोनो मित्रो की ये बाते चल ही रही थी कि तभी सरोज भाभी वहां आ गई और मुस्कराकर बोली, "किशोर ! माताजी को मालती कैसी पसद आई ?"

"बहुत पसद आई भाभी !" किशोर सहर्ष बोला। "अब आप इस शुभ कार्य को करने मे देर न करे।"

सरोज भाभी का मन मुग्ध हो गया यह समाचार पाकर। उन्हे अपनी छोटी बहिन के सौंदर्य पर गर्व हो उठा। उन्होने मन ही मन कहा, 'रूप भी कोई चीज है दुनिया मे ! उसपर दृष्टि पडे और सराहना न हो, यह कभी सम्भव नही। मालती का रूप ही ऐसा है कि जो हर देखनेवाले पर ठगोरी डालता है। रूप नारी का सबसे बडा आकर्षण है।'

इसके पश्चात् किशोर अपने घर चला गया और सरोज भाभी नीचे अपने घर चली आईं।

प्रकाश अकेला अपने कमरे मे बैठा रह गया। उसका मन आज प्रसन्न था। वह अपने विवाह की कल्पना कर रहा था। वह उसीके विषय मे सोच रहा था।

प्रकाश पुराने ढग का विवाह अपना नही करेगा, यह उसने निश्चय कर लिया था। घोडी पर चढकर जाना, बारात निकालना इत्यादि 'फ्यूडल

एज' के रीति-रिवाज उसे पसद नही थे। बाजे-गाजे और रोशनी इत्यादि पर भी अधिक व्यय करना उसे अच्छा नही लगता था। अपने इष्टमित्रो और नाते-रिश्तेदारो की एक दावत करना वह उचित समझता था। वह अवश्य करेगा।

मालती के लिए साडिया और अन्य कपडे तथा जेवर की व्यवस्था करनी होगी। इसके विषय मे मालती से ही पूछ लिया जाएगा। जैसी-जैसी जो चीजे मालती पसद करेगी तैयार करा दी जाएगी।

सध्या तक प्रकाश यही सब कुलाबे मिलाता रहा। सध्या समय तभी उसकी दृष्टि जीने की ऊपरी सीढी पर पडी, तो देखा मालती इठलाती हुई उसीकी ओर आ रही थी। वह मस्ती मे कुछ गुनगुना रही थी।

सिर खुला था मालती का और काले लम्बे-लम्बे बाल पीठ पर पडे लहरा रहे थे। पीली साडी पर बैगनी ब्लाउज ने शोभा को दोबाला कर दिया था। प्रकाश मालती का यह रूप देखकर ठगा-सा रह गया।

प्रकाश दृष्टि घुमाकर ऐसे बैठ गया मानो उसने मालती को देखा ही नही और चुपके से अपनी किसी पुस्तक के पन्ने पलटने लगा।

परन्तु मालती के गालों पर हास्य की रेखा खिच गई। वह समझ गई कि प्रकाश बाबू बन रहे है क्योकि उन्हे अपनी ओर देखते वह देख चुकी थी।

मालती हलके-हलके गुनगुनाती हुई मस्ती के साथ प्रकाश के सम्मुख इस प्रकार चली आ रही थी कि मानो यह उसका अपना ही घर था और वह अभ्यस्त थी इसी प्रकार नित्य आने की इस घर मे।

लज्जा या सकोच उसके बदन को छू तक नही गए थे। वह मुस्कराती हुई आई और प्रकाश के सम्मुख खडी होकर बोली, "आपकी दिल्ली के लोग बनना और बनाना खूब जानते है प्रकाश बाबू ! आज मैने इसका दूसरा नमूना देखा।"

प्रकाश प्रश्न सुनकर पहले तो तनिक सकपकाया, परन्तु तुरन्त बोला, "वह कैसे मालती ?" और नेत्र मालती के चेहरे पर टिका दिए।

मालती बोली, "वह ऐसे कि कल आप मुझे बना रहे थे और आज अपने को बना रहे है अर्थात् स्वय बन रहे है।" कहकर मालती हस पडी।

प्रकाश तनिक लजा-सा गया मालती की यह बात सुनकर, परन्तु

फिर सतर्क होकर बोला "मै बन नही रहा हू मालती ! तुम्हारे प्रखर रूप को देखने के लिए अपने-आपको तैयार कर रहा हू ।"

प्रकाश की बात सुनकर मालती और भी जोर से खिलखिलाकर हस पडी। प्रकाश को लगा कि रूप बिखर पडा। मालिन के सिर पर रखी पुष्पो की गठरी की गाठ यकायक खुल पडी और पुष्प चारो ओर को बिखर गए।

मालती हसती-हसती ही बोली, "आप सचमुच बनने और बनाने की कला मे अति प्रवीण है प्रकाश बाबू ! मैं मान गई बस आपको !"

मालती को खडी देखकर प्रकाश बोला, "बैठ जाओ मालती ! खडी कैसे रह गई ?"

मालती बोली, "ऊहू ! आज बैठने का दिन नही है।"

"तब फिर, किस चीज का दिन है मालती ?"

"कैनाट प्लेस की सैर करने का !" मालती ने मुस्कराकर कहा।

प्रकाश बोला, "वहा भी चले चलेगे मालती, बैठो तो सही। क्या खडे ही खडे चल देना है कनाट प्लेस की सैर को !"

"ऊहू !" उसी मुस्कराती मुद्रा मे मालती ने कहा, "कपडे पहनिए और तैयार हूजिए। तब तक मै आपके कमरे का निरीक्षण करती हू कि इसमे रखे सामान पर कल से आज तक कितना गर्दा और जमा हो गया।"

"उपहास कर रही हो मालती ! किसीकी दुर्बलता पर बार-बार आघात नही किया जाता।" प्रकाश मुस्कराकर बोला, "जब तक मैं कपडे बदलू तुम यह मेज ठीक कर दो। देखू तो सही तुम्हे क्या कुछ करना आता है !"

मालती फिर हस पडी। आज पता नही उसका मन कितना प्रसन्न था कि वह मुस्कराना चाहती थी और हास्य फूट पडता था। उसके हृदय का पुष्प पूर्ण रूप से खिल चुका था। उसकी मादक गन्ध ने उसके मानस को भर दिया था। आज उसे अपने जीवन मे एक नई ताजगी-सी प्रतीत होती थी। जो चीजे भी उसकी दृष्टि के सम्मुख आती थी वे सब रगीन दिखलाई देती थी। उन सभीमे आकर्षण दिखलाई देता था। वह आज एक नवीन दुनिया मे विचरण कर रही थी।

प्रकाश ने फुर्ती से कपडे पहन लिए और तैयार होकर बोला, "चलो

मालती ! परन्तु सरोज भाभी को भी साथ ले लेते तो अच्छा रहता। भाभी सोचेगी कि दोनो मक्कार लोग सैर के लिए अकेले ही अकेले उड गए।"

मालती बोली,"आप पूछ ले जीजी से। वह चलना चाहे तो ले चलिए उन्हे भी। मुझे इसमे क्या आपत्ति हो सकती है ? परन्तु वे चलेगी नही, इतना आप जान लीजिए।"

प्रकाश ने मालती के साथ नीचे आगन मे उतरकर सरोज भाभी से कहा, "भाभी ! मिस मालती कनाट प्लेस चलने के लिए कह रही है। आप भी साथ चले तो कितना अच्छा रहे।"

प्रकाश की बात सुनकर सरोज भाभी मुस्कराकर बोली, "मैं भला कैसे चल सकती हू इस समय लालाजी ! अभी तो तुम्हारे भाई साहब भी दफ्तर से नहा लौटे। दिन-भर के थके-मादे आएगे और मैं यहा नही मिलूगी तो भला क्या कहेगे वे ? तुम दोनो घूम आओ, परन्तु जल्दी आ जाना।"

प्रकाश और मालती चादनीचौक फव्वारा से सवारी लेकर कनाट प्लेस पहुचे और वहा की रौनक देखी।

प्रकाश की कई मित्रो से आज घूमते-घूमते भेट हुई। मालती प्रकाश के साथ न होती तो शायद वे कन्नी काटकर आगे निकल गए होते, परन्तु आज बडे तपाक से उन्होने प्रकाश से हाथ मिलाया। सभीने थोडी देर खड़े होकर बाते करने का प्रयास किया।

प्रकाश अपने उन मित्रो की हरकते देखकर अन्दर ही अन्दर मुस्करा उठा, परन्तु ऊपर से सरल ही बना रहा। उसने भी शान के साथ सभीसे हाथ मिलाया और मुस्करा-मुस्कराकर बाते की।

सवारी से ओडियन पर उतरकर कनाट प्लेस के बराडे मे बायी दिशा को प्रकाश और मालती जा रहे थे। बराडे मे भीड-भाड देखकर दोनो पटरी पर खुले आकाश के नीचे चलने लगे। प्रकाश को भी आज कनाट प्लेस की सैर मे कुछ विचित्र-सा आनद आ रहा था।

चलते-चलते फिर वे बायी दिशा मे मुडनेवाली सडक पर घूम गए और सिंधिया हाउस के बराबर से निकलकर इण्डिया कॉफी हाउस के सामने से होकर एल्प्स रेस्ट्रा के सम्मुख पहुच गए।

मालती बडे चाव से कनाट प्लेस की दुकानो को देख रही थी। वह एल्प्स के सम्मुख पहुचा तो रुककर खडी हो गई और बोली, "क्या एल्प्स रेस्ट्रा यही है ?"

प्रकाश खडा होकर बोला, "चाय पीना चाहती हो क्या मालती ?"

मालती मुस्कराकर बोली, "सुना है बहुत अच्छा रेस्ट्रा है यह। हमारी एक प्रोफेसर कहा करती थी कि जब वे अपना विवाह करने के पश्चात् हनीमून मनाने के लिए मसूरी जा रही थी तो सध्या समय का भोजन उन्होने अपने पति के साथ इसी रेस्ट्रा मे किया था। चलिए देखे तो सही इसमे ऐसी क्या विशेषता है जिसका बखान करते-करते वे अघाती नही थी।"

चलते-चलते प्रकाश बोला, "सोच लो मालती, रेस्ट्रा मे प्रवेश करने से पूर्व। इस रेस्ट्रा का वातावरण ही कुछ ऐसा है।"

मालती मुस्कराकर बोली, "सोच लिया मैने प्रकाश बाबू! परन्तु पता नही आपको रेस्ट्रा मे प्रवेश करने मे इतना सकोच क्यो हो रहा है। ऐसे रेस्ट्रा मे अकेले जाने का सम्भवत कभी आपने साहस न किया हो। और अकेले जाने मे सचमुच यहा भय भी है। परन्तु अब तो मै हू आपके साथ, फिर चिंता की क्या बात ?"

प्रकाश समझ न सका मालती की इस बात को। प्रकाश का जन्म दिल्ली मे ही हुआ था और आज तक का उसका जीवन भी दिल्ली मे ही व्यतीत हुआ था, परन्तु उसे इस प्रकार होटलो मे घूमने और सिनेमाओ के चक्कर लगाने का शौक कभी नही रहा।

उसके जीवन के आज तक के शौक, अच्छा खाना-पहनना, जमकर अपना अध्ययन करना, खेलना-कूदना और अधिक से अधिक किशोर के साथ ओखला, महरौली या ऐसे ही अन्य स्थानो की कभी-कभी सैर को निकल जाना, रहे थे। स्कूल-कालेज मे होनेवाले उत्सवो मे वह खूब भाग लेता था। वहा के कार्यक्रमो मे उसका विशेष भाग होता था। इन होटलो मे वाही-तबाही घूमनेवाले कालेज के छात्रो मे वह कभी नही रहा। इन होटलों की शक्ल भी उसने कभी नही देखी थी। यहा तक कि नई दिल्ली तक मे आने का उसे कभी कोई शौक नही रहा। परन्तु आज मालती के आग्रह को टालना उसके लिए असम्भव था। मालती का आकर्षण उसकी सब प्रवृत्तियों पर

छा गया था। वह मालती को मना नही कर सकता था किसी बात के लिए।

प्रकाश को लगा कि उसके जीवन मे नवीन प्रवृत्तिया प्रवेश करना चाहती है। उसने मुस्कराकर मालती से पूछा, "इन होटलो मे अकेले आदमी को जाने मे क्या भय होता है मालती ?" कहकर प्रकाश ने प्रश्नवाचक दृष्टि से मालती के चेहरे पर देखा।

मालती ने मुस्कराकर कहा, "मालूम होता है आप दिल्ली मे रहकर भी दिल्ली के होटलो की दुनिया से पूर्णतया अनभिज्ञ है। आपने इस दुनिया मे कभी प्रवेश ही नही किया।"

प्रकाश ने उतनी ही सरलता से स्वीकार किया, "तुम्हारा अनुमान ठीक ही है मालती ! मैंने आज तक के अपने जीवन मे केवल एक बार होटल मे प्रवेश किया है और वह भी तब, जब हमारे कालेज की टीम को पार्टी दी गई थी। वह होटल भी पुरानी दिल्ली का ही था। नई दिल्ली का नही। मै इन होटलो मे कभी नही आया।"

मालती मुस्कराकर बोली, "तब चलिए आज आपको नई दुनिया का ज्ञान करा दू। अच्छा हुआ आप मेरे साथ इस दुनिया मे प्रवेश कर रहे है। वरना न जाने आज क्या दशा होती आपकी। कही भटक जाते तो जीजी आपको खोजती ही फिरती !"

प्रकाश और मालती ने एल्प्स रेस्ट्रा मे प्रवेश किया तो सचमुच प्रकाश वहा का वातावरण देखकर स्तब्ध रह गया। सुन्दर, शानदार सोफो के बीच सुन्दर मेजें लगी थी, जिनपर अधिकाश अग्रेज पुरुष और स्त्रिया बैठे थे। कुछ अकेले और कुछ पेयर्स मे थे। कुछ हिन्दुस्तानी युवक और युवतिया भी थे, परन्तु वे भी अग्रेजो के ही नाती प्रतीत होते थे। बेपदर्गी मे वे अग्रेजो को भी मात कर रहे थे।

प्रकाश ने यह सब देखा तो उसे वहा का वातावरण कुछ भला प्रतीत नही हुआ। उसके मन मे इस नई दुनिया के प्रति कोई आकर्षण पैदा नही हुआ।

मालती मुस्कराकर बोली, "आप तो सचमुच सहमे-से रह गए इस दुनिया को देखकर। दिल्ली मे रहकर भी आप इस रगीन दुनिया से

अपरिचित ही रहे। यह विचित्र बात है। देखिए कितने आनदमग्न प्रतीत होते है ये सभी लोग। जीवन का उल्लास इनके जीवन से फूटा पड रहा है।"

तभी सामने स्टेज पर बैठे कुछ साजिन्दो की टोली ने आरकेस्ट्रा पर एक धुन छेडी, होटल मे बैठे लोग उसे सुनकर झूम उठे। मालती भी आनद-मग्न हो उठी।

प्रकाश का मन इस वातावरण से अन्दर ही अन्दर कुछ क्षुब्ध-सा हो उठा परन्तु उसने कुछ कहा नही, क्योकि उसने देखा कि मालती उस सबमे बहुत रस ले रही थी।

यहा बैठे-बैठे पर्याप्त समय बीत गया। प्रकाश की दृष्टि अपनी कलाई पर बधी घडी पर गई तो देखा आठ बज चुके थे।

प्रकाश बोला, "मालती, अब चलो। देखो आठ बज गए है। भाभीजी ने कहा था कि आने मे विलम्ब न करना।"

मालती मुस्कराकर बोली, "चलते है अभी! आरकेस्ट्रा की यह धुन समाप्त होने पर चलेगे। सचमुच बहुत अच्छे आर्टिस्ट है इस रेस्ट्रा मे! हमारी प्रोफेसर उचित ही प्रशसा करती थी इस रेस्ट्रा की। देहरादून मे यह सब कुछ नही है प्रकाश बाबू! दो-चार रेस्ट्रा है अवश्य, परन्तु उनमे यह रौनक कहा! यहा की रौनक देखकर तो सचमुच दिल मचल उठता है।"

आरकेस्ट्रा की धुन समाप्त होने पर दोनो उठकर बाहर आए।

बाहर निकलकर प्रकाश ने खुलकर सास ली। वहा बैठे-बैठे उसका दम कुछ घुटने लगा था। वहा का निर्लज्ज वातावरण उसे कतई पसद नही आया।

दोनो ने एक टैक्सी ली और चादनीचौक की ओर चल दिए। इस समय दोनो के मन बहुत प्रसन्न थे।

मार्ग मे मालती ने मुस्कराकर पूछा, "कैसी लगी आपको यह रेस्ट्रा की रगीन दुनिया?"

"तुम्हे पसंद आई मालती तो मुझे भी अच्छी ही लगी, परन्तु सच यह है कि मै कुछ अधिक दिलचस्पी नही ले सका इसमे। हद दर्जे की निर्लज्जता थी यहा के वातावरण मे। मुझे जीवन का यह रूप कतई पसद

नही है। मेरा तो यदि सच पूछो तो दम-सा घुटने लगा था।"

"निर्लज्जता! क्यो निर्लज्जता की यहा क्या चीज़ देखी आपने? आमोद-प्रमोद मे सब लोगो का इतना समय दुनिया की रगीनियो के साथ निकल गया। अब सब लोग मौज के साथ अपने-अपने घर जाकर आराम करेंगे और कल सुबह तरोताजा उठकर अपने-अपने काम पर जाएगे। तमाम दिन काम करके जब ये लोग यहा आते है तो यहा के वातावरण मे दिन-भर की थकान को भूल जाते है।"

मालती की बात सुनकर प्रकाश मुस्करा दिया। परन्तु उसका मन उस रगीनी की ओर आकर्षित न हो सका।

मालती ने सोच लिया आज पहला ही तो दिन था। आते-आते बान पड जाएगी इन्हे। आज जो दुनिया इन्हे आकर्षक नही लगी, कल इसी वातावरण मे सैर करनेवाले पछी बन जाएगे ये भी। प्रथम बार किसी नये वातावरण मे प्रवेश करने पर सकोच होता ही है।

मोटरगाड़ी तीव्र गति से आगे बढ रही थी।

८

विमला का जीवन सब प्रकार से सुखी था। विधाता ने उसे सभी सुख प्रदान किए थे। घर-बार अच्छा मिला था उसे। सास-ससुर उसे प्यार करते थे, अपने दिल का एक टुकडा समझते थे, अपनी आखो का एक तारा मानते थे। उसके सुख तथा शाति के लिए वे अपना जीवन उसपर न्योछावर कर सकते थे। धन-धान्य से घर भरा-पूरा था। परन्तु यह सब होने पर भी उसका मन उदास ही बना रहता। उसका हृदय क्लांत रहता था। क्यों? केवल इसलिए कि अपने जीवन की वास्तविक निधि को वह प्राप्त न कर सकी थी। वह अपने प्राणनाथ के जीवन मे सुख तथा शाति का सचार न कर सकी थी।

विमला की सास विमला के जीवन में आनेवाली इस दुर्घटना से अपरिचित नहीं थीं। इसीलिए वे कभी उसे अकेली नहीं छोड़ती थीं और

किशोर के पिताजी भी जब घर मे प्रवेश करते थे तो सबसे पहले ये ही शब्द होते थे उनकी जबान पर, "हमारा विमल बेटा कहा है किशोर की माताजी ! क्या कर रहा है वह ?"

ससुर के ये स्नेहपूर्ण शब्द सुनकर दो घडी के लिए विमला का मन कुछ और-सा हो जाता था। परन्तु फिर वही पीडा उसके हृदय और मस्तिष्क पर छा जाती थी। स्थायी कष्ट उसकी आत्मा को कचोटने लगता था और उसका मन दु खी हो उठता था।

आज वह अनायास ही किशोर के कमरे मे चली गई और वहा जाकर उसने देखा कि एक कोने मे इकतारा रखा हुआ था।

विमला ने वह इकतारा उठाया और उसपर धुन निकालनी प्रारम्भ कर दी। वह कमरे मे एक ओर बिछे तख्त पर बैठ गई और इकतारा बजाती-बजाती धीरे-धीरे गुनगुनाने लगी। वह अपना वही प्रिय गीत गाने लगी—जिसे गाकर वह दो घडी के लिए अपने हृदय के व्यापक दु.ख पर विजय प्राप्त कर लेती थी।

"मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, दूसरो न कोई।" यही विमला का सबसे प्यारा गाना था।

सगीत का स्वर सम्पूर्ण घर के वायुमडल मे व्याप्त हो गया। किशोर की माताजी को लगा कि मानो घर मे आनद की लहर दौड गई। घर मे सुख तथा शाति का साम्राज्य छा गया।

उसी समय किशोर ने घर में प्रवेश किया और वह सामने आगन मे बैठी अपनी माताजी के पास जा बैठा।

आज किशोर का मन भी बहुत उदास-सा था। वह कई बार प्रकाश के घर गया था परन्तु प्रकाश से उसकी भेट नही हो सकी थी। जब जाता था तो आगन मे सरोज भाभी ही हस्तिनी के समान झूमती और इठलाती हुई मिलती थी।

दो घडी उनसे बाते करने मे निकालकर किशोर वापस लौट आता था। उन्हीसे उसे पता चलता था कि प्रकाश मालती के साथ कही गया है सैर-सपाटे के लिए। सम्भवत: नई दिल्ली की सैर को गया है और शायद सिनेमा गए हो दोनो।

वह निराश मन अपने घर लौट आता था। इस समय भी वह वही से आ रहा था।

उसकी माताजी ने पूछा, "कहा से आ रहे हो किशोर ?"

"प्रकाश के घर से।" किशोर ने भारी मन से कहा।

"क्या कर रहा था प्रकाश नटखट ?"

"था नही घर पर। सरोज भाभी ने बतलाया कि उनकी छोटी बहिन मालती के साथ सिनेमा गया है।"

"सिनेमा ! और कुवारी लडकी के साथ !"

अपनी माताजी की बात सुनकर किशोर मुस्कराकर बोला, "कुआरी भी अब चन्द दिन मे ब्याही हो जाएगी माताजी ! सरोज भाभी कहती थी कि प्रकाश ने 'हा' कर दी है मालती के साथ विवाह करने के लिए।"

तभी विमला के मधुर रस मे डूबे उसके सगीत के बोल किशोर के कानो मे पडे तो उसे लगा कि मानो अमृत की बूदे किसीने उसके कानो मे गिरा दी। उसका हृदय सगीत की लहरो पर तैरने लगा। सगीत की मिठास उसके कानो मे भरने लगी। वह सगीत-रस मे धीरे-धीरे डूबता जा रहा था। उसका हृदय और मन तरगित हो उठे। इतना सरल और मीठा स्वर उसके कानो मे प्रथम बार पडा था।

किशोर स्वय भी सगीत मे अच्छी दक्षता रखता था। अपने कालेज की हर प्रतियोगिता मे उसने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया था। वह अपने मधुर कठ के लिए कालेज मे ही नही नगर-भर मे ख्याति प्राप्त कर चुका था। अच्छे-अच्छे सगीत-समारोहो मे वह भाग लेता था और उसकी प्रशसा से समारोहो का वातावरण भर उठता था।

आज अचानक इस स्वर ने उसके कानो मे प्रवेश किया तो उसका सगीतप्रिय मन प्रफुल्लित हो उठा। एक रस की धारा अनायास ही उसके हृदय मे प्रवाहित हो चली। वह शाति के साथ उसे सुनने लगा और अपनी माताजी से उत्सुकतापूर्वक पूछा, "माताजी ! कोई गा रहा है घर मे ? कौन गा रहा है इतने मधुर स्वर में ?"

"इतना मधुर कौन गा सकता है भला किशोर ?" किशोर की माताजी ने मुस्कराकर कहा।

किशोर कुछ समझा नही अपनी माताजी की बात। वे मुस्करा रही थी और मुस्कराती हुई ही बोली,"मेरी बहूरानी गा रही है किशोर! वह बहुत अच्छा गाती है और नृत्य करती है तो प्रतीत होता है कि मानो राज-रानी मीरा उतर आई है हमारे घर के प्रागण मे। सगीत और नृत्यकला की अवतार है मेरी बहूरानी!"

किशोर स्तब्ध-सा रह गया अपनी माताजी की बात सुनकर। उसके कानो मे इस समय सरोज भाभी के वे शब्द बज उठे जो उन्होने कल ही उसका उदास चेहरा देखकर उससे कहे थे। उन्होने कहा था, "देवरजी! आपने विमला का रग-मात्र ही देखा, उसके रूप तक आपकी दृष्टि नही पहुच सकी, और उसके गुणो को तो परखने का कोई प्रयत्न ही नही किया आपने। विधाता ने कला की देवी बनाकर भेजा है उसे ससार मे!"

मालती गाती-गाती मुग्ध हो उठी थी। उसे सुध-बुध ही न रही कि वह कहा बैठी गा रही थी। उसने आज इकतारे पर बहुत दिन पश्चात् गाया था। इकतारे पर गाना उसे बहुत प्रिय था। यह साज उसे आज अपने मन-पसद मिला था। वह आत्मविभोर हो उठी थी गाते-गाते। उसे अपने तन-बदन की सुध ही नही रही थी।

विमला का सगीत इतना स्वरमय था कि किशोर तन्मय हो उठा। उसकी आत्मा सगीत की ओर को खिचती चली जा रही थी। उस मधुर सगीत के अतिरिक्त अब कोई और चीज ही मानो नही रही उसके सम्मुख।

अबोध बालक के समान वह उठा और अपने कमरे की ओर चल दिया। परन्तु कमरे के द्वार पर जाकर उसके पैर ठिठक गए। वह द्वार पर जाकर खडा हो गया। उसके आगे बढते हुए कदम रुक गए। वह वही पर खडा रह गया।

किशोर का यह आकर्षण बहूरानी के सगीत की ओर देखकर किशोर की माताजी के मन की मुरझाई हुई कलिका अनायास ही खिल पडी। उनका हृदय गुदगुदा उठा। उनके मन मे आया कि उसी समय किशोर के पिताजी को जाकर इस शुभ समाचार की सूचना दे।

किशोर द्वार पर पहुचा तो कमरे मे प्रवेश करने का उसमे साहस नही हुआ। इतनी विलक्षण कलाकार का अपमान करके वह किस मुह से

उसके सम्मुख जाए ? किशोर लज्जा से गडा जा रहा था। उसे बहुत दिन पूर्व की वह बात स्मरण हो आई जब एक बार प्रकाश अपनी धुन मे नारी के बाहरी रूप की प्रशसा किए चला जा रहा था तो उसने क्षुब्ध होकर कहा था, 'तुम क्या कहे जा रहे हो प्रकाश ! यह रूप, जिसकी तुम इतने मुक्तकण्ठ से प्रशसा कर रहे हो केवल नेत्रो का सुख-मात्र है। इससे अधिक कुछ नही। यह हृत्तत्री को तरगित नही कर सकता। आखो की प्यास-मात्र बुझा सकता है। रस की धारा प्रवाहित नही कर सकता व्यक्ति के मानस में। नारी का जो रूप हृदय मे रस की धारा प्रवाहित कर सकता है वह है उसकी कलाकारिता और उसका सरल स्वभाव। यह ऊपरी रूप तो केवल धोखा-मात्र है।'

नारी के जिन गुणो की किशोर ने उस दिन इतने मुक्तकण्ठ से प्रशसा की थी आज जब वह उसके अपने जीवन मे आया तो वह उसके प्रति उदासीन होकर बैठ गया। वह स्वय भी नारी के उसी रूप का शिकार हो गया जिसकी प्रकाश प्रशसा कर रहा था।

किशोर अपने प्रति क्षोभ से भर उठा। उसने अपने अन्दर आत्मग्लानि का अनुभव किया। उसे लगा कि वह विमला के समक्ष जाने के योग्य नही था।

किशोर ने चाहा कि वह द्वार से लौट पड़े और जाकर माताजी के पास आगन मे बैठ जाए, परन्तु उसके पैर मानो जड हो गए। वह एक पग भी पीछे नही रख सका। वह चाहकर भी वापस न लौट सका। विमला के सगीत-स्वर ने उसकी आत्मा को कसकर अपने बधन मे बाध लिया था। वह बेबस था इस समय।

विमला उन्मुक्त वाणी मे गा रही थी। किशोर ने देखा कि वह साक्षात् मीरा के समान उसके तख्त पर उसीका इकतारा लिए गा रही थी। वह खिड़की की ओर मुह किए बैठी गा रही थी। उसे पता ही नही था कि उसके द्वार पर कौन खडा था। उसे क्या पता था कि उसकी सगीत-कला ने उसके जीवन के सुख तथा शान्ति को बटोरकर उसके द्वार पर ला खड़ा किया था। उसे क्या पता था कि उसके हृदय का स्वामी आज उसके गुणों पर मुग्ध होकर उसके द्वार पर खडा था।

किशोर का मन तरंगित हो उठा। विमला के काले रूप की छाया किशोर के नेत्रो की पुतलियो से तिरोहित हो गई। उसका सुन्दरतम रूप उसके सम्मुख आ गया। नारी के रूप की अपनी परिभाषा उसके मानस मे साकार हो उठी।

किशोर अपने-आपको रोक न सका। वह धीरे-धीरे कमरे मे प्रवेश कर गया। और आगे बढकर विमला के निकट पहुच गया।

विमला को किशोर के कमरे मे प्रवेश का कोई ज्ञान न हुआ। वह आत्मविभोर होकर गाती रही। उसके नेत्र बन्द थे और उसकी आत्मा उसके सगीत मे एकाकार हो गई थी।

किशोर विमला के बिलकुल निकट पहुचकर मौन खडा हो गया। वह प्रस्तर-मूर्ति के समान खडा था।

किशोर की माताजी ने किशोर को विमला के कमरे मे प्रवेश करते देखा तो उनका हृदय हर्ष से बासो उछलने लगा। उन्होने मन ही मन कहा, 'विधाता उनपर आज दयालु हो उठे। बहूरानी के मधुर सगीत ने किशोर का मन बदल दिया।' वे हर्ष से कम्पायमान हो उठी। उन्हे आज अपने जीवन मे उस आनन्द की प्राप्ति हुई जिसके प्रति वे निराश हो उठी थी।

किशोर ने ध्यानपूर्वक देखा कि सगीत जिसने उसके हृदय मे रस की धारा प्रवाहित की थी और उसके मानस मे आनद को भर दिया था, वह विमला के हृदय की मार्मिक पीडा मे डूबकर उसके पास तक पहुचा था। उसने देखा कि विमला रो रही थी और उसके नेत्रो से मुक्त प्रवाह के साथ अश्रुओ की धारा बह रही थी। उसके नेत्रो से निकलकर बहनेवाले अश्रुओ का प्रवाह जितना तीव्र होता जाता था विमला की वाणी मे उतनी ही मिठास भरता जाता था। वह रोती जाती थी और गाती जाती थी।

किशोर का हृदय अपने दुर्व्यवहार की याद करके टुकडे-टुकडे हुआ जा रहा था। उसके मस्तिष्क मे आज असीम पीडा थी। उसके हृदय मे अथाह वेदना थी। वह कर सकता तो इस देवी के चरणो पर मस्तक टिका-कर अपने अपराध की क्षमा-याचना करता।

विमला आत्मविभोर होकर गा रही थी। उसके हृदय की पीडा उसके

स्वर मे भरकर उसके स्वर को मधुरतम बना रही थी। उसके सगीत से रस की धारा प्रवाहित हो चली थी।

गाते-गाते वह व्याकुल हो उठी और अचानक ही तख्त पर एक ओर को निर्जीव-सी ढुलक पडी। उसे अपनी सुधबुध ही न रही।

विमला के हृदय की व्यापक पीडा ने विमला को गाते-गाते अचेत कर दिया।

किशोर भी यह देखकर व्याकुल हो उठा। वह लपककर तख्त पर चढ गया और विमला को अपने अक मे भरकर सभाला। उसने स्नेह से विमला का सिर उठाकर अपनी गोद मे रख लिया।

किशोर ने धीरे-धीरे विमला के मस्तक पर हाथ फेरा। उसके बालो को अपनी उगलियो से सहलाया और उसके रूप को निहारा तो वह स्तब्ध रह गया। विमला के चेहरे की बनावट को उसने देखा। उसके लम्बे चिरवा, बन्द नेत्रो को उसने देखा। उसके पतले-पतले होठ और सुडौल ग्रीवा पर उसकी दृष्टि पडी तो उसका सावला रग मानो उसके समक्ष व्यर्थ हो उठा। किशोर के हृदय मे अथाह पीडा और हर्ष का सगम एकसाथ बन उठा।

किशोर ने मन ही मन कहा, 'इतने सुन्दर रूप को गोरा-चिट्टा होने की क्या दरकार? यह रूप दिखाना नही चाहता। इसीलिए विधाता ने इस रूप को सावली आभा से ढक दिया है। न ढकता तो यह रूप मैला हो जाता।'

किशोर अपने-आपसे बोला, 'तू कितना मूर्ख निकला किशोर! विधाता ने तुझे इतना अलौकिक रूप प्रदान किया और तू अपनी मूर्खता-वश उसका भी स्वागत न कर सका। तूने विमला का तिरस्कार करके विधाता का अपमान किया! तू इस अनुपम रूप के प्रति अधा हो गया!'

किशोर अचेतन अवस्था मे ही विमला को न जाने कितनी देर तक लिए बैठा रहा। उसे विमला का रूप आज न जाने कितना अच्छा लग रहा था। उसे विश्वास ही नही हो रहा था कि यह वही विमला थी जिसे उसने उस दिन देखा था जब वह रात-भर पलग पर पडा-पडा आखें बन्द किए उसासे भरता रहा था और यह उसके पलग के तकिये के सहारे खडी-खडी रोती रही थी।

किशोर विमला के रूप-दर्शन मे इतना खो गया कि उसे यह भी ध्यान

न रहा कि विमला उसकी गोद मे अचेत हुई पडी थी। उसे जाग्रत् अवस्था मे लाने का उसने कोई प्रयास नही किया। वह मुग्ध होकर अपने मन मे उसके रूप की प्रशसा करता रहा और अपने भाग्य की सराहना करता रहा।

लगभग आधा घटे पश्चात् विमला की चेतना लौटी। वह सकपकाकर उठना ही चाहती थी कि किशोर ने उसे धीरे से सभालकर कहा, "लेटी रहो विमला! तनिक मन और ठीक हो जाए तो उठना।"

विमला चुपके से सिर रखकर वही लेटी रह गई। उसने नेत्र बन्द कर लिए। वह अपने पति किशोर की गोद मे सिर रखकर लेटी हुई थी। उसे यह सुख आज जीवन मे प्रथम बार प्राप्त हुआ था। उसे अपनी अचेतन अवस्था मे अचानक वह सुख प्राप्त हो गया जिसकी वह कल्पना भी नही कर सकती थी। उसे विश्वास नही हुआ इसपर। उसने एक बार फिर नेत्र खोलकर किशोर के चेहरे पर देखा तो पाया कि किशोर डबडबाए नेत्रो से एकटक उसके मुख पर दृष्टि पसारे मौन बैठा था। वह धीरे-धीरे उसके मस्तक पर हाथ फेर रहा था। उसके स्पर्श से विमला को अलौकिक आनद की प्राप्ति हो रही थी।

किशोर ने धीरे से पूछा, "अब कैसा मन है विमला ?"

विमला लजाकर कुछ बोली नही। उसने नेत्र बन्द कर लिए, परन्तु उसके चेहरे पर हर्ष की स्पष्ट रेखा खिची देखी किशोर ने। किशोर ने विमला के श्वास-प्रवाह का अनुभव किया कि उसकी गति तीव्र हो चली थी। उसका हृदय हर्ष से पुलकायमान हो उठा।

प्रकाश का अपना श्वास भी पहले से तीव्र गति से बह चला था। उसके हृदय मे आज वह आनन्द भर उठा था जिसका अनुभव-मात्र ही वह कर सकता था।

किशोर इसी प्रकार विमला को सभाले न जाने कितनी देर बैठा रहा और विमला किशोर की गोद मे सिर रखे स्वर्गिक आनन्द के सागर मे डुबकिया लगाती रही। वह आनन्द के इस सरोवर मे स्नान कर रही थी जिसमे प्रवेश करने के लिए प्रथम बार पग बढाते ही वह सरोवर के किनारे की कीचड मे फिसलकर गिर पडी थी। परन्तु कितनी उदार निकली सरोवर की लहरे कि वे स्वय उस कीचड मे पडी विमला को उठाकर

अपने अक मे ले गई और अब वे उसे स्नान कराकर उसके अग पर लगे पक को धोकर उसके रूप को निखार रही थी।

विमला का मानस पुष्प के समान महक उठा। उसके सावले-सलौने रूप मे और निखार आ गया। उसका मन पुलकायमान हो उठा। उसने मन ही मन मुरलीवाले मनोहर की स्मृति की, और श्रद्धापूर्वक कहा, 'गिरिधर गोपाल ने आखिर मेरी प्रार्थना सुन ही ली!' उसका मन अपने इष्टदेव के चरणों मे श्रद्धा से झुक गया। उसे लगा कि उसका पीडा से कराहता हुआ भारी मन पुष्प के समान हलका होकर आनन्द की मौजों मे हिलोरें लेने लगा। वह आनन्दमग्न हो उठी।

किशोर ने धीरे-धीरे विमला के मस्तक को सहलाना आरम्भ किया तो विमला को पता नही कितना सुख मिला। उसे लगा कि मानो उसके प्राणनाथ ने उसे छूकर उसके मानस मे दहकनेवाली ज्वाला को शात कर दिया।

वह इस समय अपने पति के क्रोड मे सिर धरे नही लेट रही थी बल्कि सुख तथा शान्ति की शय्या पर पडी चैन की बसी बजा रही थी। वह आनन्द की सरिता मे स्नान कर रही थी। उसके जीवन का सारा सन्ताप, सारी वेदना, सारी जलन काफूर हो चुकी थी।

किशोर की माताजी ने कनखियो से खडी होकर यह दृश्य देखा तो वे आत्मविभोर हो उठी। उनके दिल मे जलनेवाली भयकर ज्वाला मानो एकदम शात हो गई। उन्हे आज आत्मिक सुख की प्राप्ति हुई। उनका जो आनन्द विधाता ने उनसे कुछ दिन पूर्व छीन लिया था वह आज उन्हे फिर लौटा दिया।

उन्हे विश्वास न हुआ अपनी आखो पर तो वे खडी होकर दुबारा देखने गई। विमला को किशोर की गोद मे सिर धरे लेटी और किशोर को उसके मस्तक पर हाथ फेरते देखकर उनके आनन्द का पारावार न रहा। उनकी कामना का सूखता हुआ वृक्ष मानो फिर से हरा-भरा हो उठा। उन्होने उसे लहलहाते और पुष्पो से आच्छादित होते देखा।

उन्होंने अपने घर के उस छोटे-से पूजागृह में जाकर राधाकृष्ण के सम्मुख हाथ जोडकर गद्गद स्वर मे कहा, "देव! तुमने मेरी प्रार्थना सुन

ली। मेरी मनोकामना आपने पूर्ण कर दी। मेरे इकलौते पुत्र की उजडती हुई दुनिया को तुमने आबाद कर दिया। उसे घोर निराशा के सागर मे डूबने से बचाकर आप उसे किनारे पर ले आए !"

वे बहुत प्रसन्न थी इस समय। उनका मन आनन्द मे भर उठा था और सोच रही थीं कि इस सुखद घटना को वे किशोर के पिताजी से कैसे कहेगी। वे कैसे उन्हे बतलाएगी कि कैसे किशोर बहूरानी के स्वर मे बधा हुआ उसके निकट जा पहुचा और किस प्रकार उसके सिर को अपने अक मे रखकर उसके मस्तक को सहलाने लगा। कैसे बहूरानी के मधुर स्वर की सरस धारा ने किशोर के हृदय की सूखी हुई धारा को भर दिया और कैसे उनके बच्चे के जीवन की सूखती हुई खेती हरी-भरी होकर लहलहा उठी। उन्हे तभी अपने पति के वे शब्द स्मरण हो आए जब उन्होने विमला की प्रशसा करते समय उसके मधुर कठ की सराहना की थी और कहा था, "नारी का रूप उसकी गोरी चमडी ही नहीं होती किशोर की माताजी ! नारी का वास्तविक रूप उसके गुण होते हैं।"

वे तो आज तक समझ ही न पाई थी कि उनका इतना सरल और सरल किशोर कैसे ऐसा कुठित हृदय बना बैठा कि अपनी प्राणेश्वरी के रूप और गुणो को परखने की क्षमता भी उसमे न रही। नारी के सफेद चिट्टे बगुले जैसे रूप के प्रति अनायास ही उनके मन मे खीज-सी उत्पन्न हो उठी। वे अपने मन मे बोली, 'मरा कितना बुरा है नारी का यह बगुले जैसा गोरा-चिट्टा रूप, कि जिसने मेरे पुत्र किशोर की आखो पर पर्दा डाल दिया। जिसने इतने दिन के लिए मेरे पुत्र और मेरी पुत्रवधू के जीवन को क्लान्त कर दिया।'

किशोर धीरे से अपना मुह विमला के कान तक लेजाकर बोला, "विमला ! मुझसे तुम्हारे प्रति, न जाने क्यो, जो घृणित व्यवहार हुआ है, क्या उसके लिए तुम मुझे क्षमा कर सकोगी ? मेरी आत्मा बहुत दुखी है अपने दुर्व्यवहार के प्रति !"

विमला का हृदय अपने पति के ये मधुर वाक्य सुनकर उद्वेलित हो उठा। उसे स्वप्न मे भी आशा नही रही थी कि यह शुभ घडी भी कभी उसके जीवन मे आएगी जब वह अपने पति का प्रेम प्राप्त कर सकेगी। आज अनायास

ही अपने को इस सुख-सागर मे स्नान करते देखकर उसके नेत्रो मे स्नेह-जल उमड आया और उसकी चिरवा आखो के दो कोनो मे दो मोटे-मोटे अश्रु उभरकर दो मुक्ताओ के समान दमक उठे।

किशोर ने धीरे से अपना रूमाल निकालकर उन अमूल्य मोतियो को उसमे भर लिया और हलके-से विमला की ठोडी के नीचे उगली लगाकर बोला, "विमला! मेरी आखो पर पर्दा पड गया था। मैं अपने सिद्धान्त और बुद्धि दोनो के मार्ग से विचलित हो गया था। मैने बहुत बडी मूर्खता की। तुम क्षमा कर दो मुझे!"

विमला ने धीरे से किशोर के अपने मस्तक पर फिरते हुए हाथ पर अपनी हथेली रख दी। किशोर का हाथ स्थिर हो गया। उसने विमला का हाथ अपने हाथ मे ले लिया। पति के प्रति नारी के हृदय की कोमल भावना के किशोर ने दर्शन किए। उसका हृदय उद्वेलित हो उठा। उसकी आशा का सागर तरगित हो उठा।

किशोर धीरे से बोला, "तो समझ लू विमला कि तुमने मुझे क्षमा कर दिया? मै अथाह निराशा के सागर मे डूबा जा रहा था विमला! तुम मुझे उसके अन्दर से निकालकर किनारे पर ले आई। मेरा सरस और मधुर जीवन एकदम नीरस और कडवा हो उठा था। मुझे प्रकृति असुन्दर प्रतीत होने लगी थी और सुन्दर से सुन्दर वस्तु की भी सराहना करने की मुझमे क्षमता नही रह गई थी। मेरे मानस पर ससार की कुरूपता छा गई थी। मुझे दुनिया की प्रत्येक वस्तु काली और कुरूप दिखलाई देने लगी थी विमला! मेरी दृष्टि कुठित हो गई थी। मेरी अतश्चेतना विलुप्त हो गई थी। मेरा हृदय अधा हो गया था, नेत्र दृष्टिविहीन हो गए थे। मै कुछ सोच नही सकता था विमला, कुछ समझ नही सकता था विमला! तुमने एक बार फिर मेरे हृदय को गति प्रदान कर दी और मेरे नेत्रो को दृष्टि। मेरी आखो के सम्मुख जो अधेरा बादल छा गया था, तुमने उसे चीर डाला। तुम वह विमला नही हो विमला, जिसे मैंने प्रथम दिन देखा था। वह तुम ही होतीं तो क्या मैं इतना अधा हो जाता कि इतने अनुपम रूप की भी सराहना न कर पाता?"

किशोर की बात सुनकर विमला के मुख पर स्निग्ध हास्य की रेखा खिच

गई। उसने नेत्र खोलकर किशोर के मुखमडल को निहारा, उस रूप को देखा जिसे घूघट की ओट से देख-देखकर वह उसकी दीवानी हो गई थी। वह बोली नही फिर भी कुछ। उसके अधर-पल्लव खुल ही न सके। उसकी वाणी मौन ही रही। उसके नेत्र पति-दर्शन का सुधा-रस पान करते रहे।

विमला के होठो की मुस्कराहट से किशोर का मानस महक उठा। उसने आज एक अलौकिक सुख की अनुभूति की। अपने जीवन के सरलतम रस की प्राप्ति की। उसका मानस सुख तथा शाति से भर उठा। उसके जीवन की निराशा का तिमिर प्रभात के सूर्य की किरणो ने भेद डाला। उसका हृदय-कक्ष आलोकित हो उठा।

किशोर बोला, "विमला! सचमुच वहुत मधुर गाती हो तुम! मैंने इतना मधुर सगीत आज तक नही सुना। तुम्हारे मधुर कठ मे पाषाण को भी पिघला देने की शक्ति है। तुमने आज मेरे पाषाण हृदय को ही पिघलाया है विमला! मेरा हृदय सचमुच पाषाण बन चुका था। उसमे चेतना होती तो क्या मै ऐसा घृणित कार्य करता जैसा मैंने किया? मेरा हृदय पाषाण बन चुका था। मैंने विधाता का उपहास किया विमला!"

विमला फिर भी कुछ न बोली। वह किशोर के मुखचन्द्र से बरसनेवाले सुधा-रस का पान करती रही। ऐसे अद्भुत आनन्द की कल्पना के समय अपने मौन को वह चन्द शब्दो की गडगडाहट से खडित नही करनेवाली थी। जो सुख उसे आज विधाता ने प्रदान किया था उसकी अवधि को वह जितना भी आगे बढा सकती थी बढाना चाहती थी। वह चाहती थी कि जिस आनन्द मे वह लेटी थी उसी आनन्द मे जीवन-भर लेटी रहे।

अब विमला बिलकुल स्वस्थ और प्रसन्न हो गई थी। उसने धीरे से अपना सिर उठाया और साडी का आचल सवारकर सिमटी-सी एक ओर को बैठ गई।

किशोर बोला, "विमला! तुम्हे कभी क्रोध तो नही आया मेरे दुर्व्यवहार पर।" और फिर सरल दृष्टि से विमला के चेहरे पर देखा।

विमला ने किशोर के नेत्रो मे अपने नेत्र डालकर धीरे से सिर हिलाकर 'ना' का सकेत किया।

"फिर मुझे क्या समझा तुमने?"

"अपने को समझने का तो आपने अधिकार ही नही दिया था प्राणनाथ! मै तो केवल यही समझ पाई कि मैं अपने-आपको आपके सम्मुख ऐसी योग्य वधू के रूप मे प्रस्तुत न कर सकी जो आपकी कृपापात्र बन जाती।" विमला सरल वाणी मे बोली।

किशोर विमला की सरल और निश्छल वाणी सुनकर लज्जित हो उठा। उसने अपने उथले और विमला के गम्भीर चिंतन पर एकसाथ दृष्टि डाली और फिर विमला की ओर देखा तो देखता ही रह गया वह।

किसने कहा कि विमला रूपवती नही है? कौन कहता है विमला सुन्दर नही है? विमला को विधाता ने वह रूप प्रदान किया है जो अन्यत्र मिलना दुर्लभ है।

आज किशोर ने विमला के मुखमडल को आखे गडा-गडाकर देखा तो पाया कि रूप की अद्‌भुत काति छिटक रही थी उसपर। विमला का ढका हुआ सौंदर्य अनावरण होकर उसके नेत्रो के सम्मुख आ गया था। वह मुग्ध हो उठा उसपर और विमला का हाथ अपने हाथ मे लेकर बोला, "मेरे मन की रानी विमला! तुम्हारा रूप अवर्णनीय है। तुम्हारे रूप ने मेरे अधकारपूर्ण मानस को प्रकाशपूर्ण कर दिया। मेरे हृदय की कुम्हलाई हुई कली को तुमने अपने रूप-जल से सीचकर खिला दिया। मेरे दग्ध हृदय को तुमने शीतल कर दिया!"

अपने पति के मुख से अपने को रूपवती सुनकर विमला के हृदय की क्या दशा हुई, यह वही जाने। उसे विश्वास नहीं हो रहा था अपने कानों पर। वह क्या सुन रही थी आज। क्या सचमुच उसके पति की दृष्टि में उसका रूप इतना आकर्षक हो उठा था? क्या सचमुच उसने अपने पति के मुरझाए हुए हृदय-पुष्प को खिला दिया था? क्या सचमुच उसने अपने दग्ध हृदय को शीतलता प्रदान की थी?

विमला ने किशोर के चेहरे पर देखा तो दीनता और सरलता की आभा मिली उसे। किशोर की वाणी में किशोर का हृदय बोल रहा था, उसकी आत्मा बोल रही थी।

विमला से रहा नही गया। वह किशोर के हृदय को और कष्ट नहीं पहुचा सकती थी। वह मधुर स्वर में बोली, "प्राणनाथ! मैं अपने इष्टदेव

भगवान कृष्ण की पूजा का गीत गाती न जाने कैसे और कब अचेत हो गई। मै स्वप्न देख रही थी और मेरे इष्टदेव मेरे सम्मुख खडे थे। मैंने उनसे कहा, "देव ! मेरे मनमन्दिर का देवता मुझसे रूठ गया है। वह मेरे द्वार पर आते ही न जाने क्यो इतना कुंठित हो उठा कि उसके नेत्र बन्द हो गए। उसने मेरे मन-मन्दिर मे प्रवेश करने से पूर्व ही ' " कहते-कहते विमला की वाणी रुक गई। उसके नेत्र छलछला आए। उसके हृदय की धडकन तीव्र हो गई।

विमला तनिक धैर्य धारण करके बोली, "प्राणनाथ ! तभी मेरे इष्ट-देव प्रसन्न होकर बोले, "तुम्हारे सौभाग्य को तुमसे कोई नही छीन सकता विमला !" और उनके इता कहते ही मेरी मूर्छा भग हो गई। मैं सचेत हो उठी। मैने अपने बदन को आपकी अक मे पडा पाया तो मुझे लगा कि मै तब भी स्वप्न ही देख रही थी। मै समझ ही न पाई कि यह सब क्या हुआ? मेरे इष्टदेव भगवान कृष्ण का वरदान सार्थक हो उठा।" इतना करकर विमला ने कातर दृष्टि से किशोर की ओर देखकर डबडबाए नेत्रो मे जल भरकर कहा, "नाथ, मैंने आपके हृदय को बहुत पीडा पहुचाई। इसके लिए क्षमा-याचना करती हू।"

किशोर के पास अब शब्द नही थे 'क्षमा' करने के लिए। क्षमा मागता-मागता किशोर स्वय विमला की 'क्षमा' के सागर मे गोते खाने लगा।

दो बिछुडे हुए हृदय मिलकर आज एक हो गए। दो साथ-साथ मिल-कर बहने वाली सरिताए जो दुर्भाग्य से पृथक्-पृथक् बहने लगी थी वे फिर एक-दूसरे की बाहुपाश मे आबद्ध हो गई।

किशोर बोला, "विमला ! एक बार फिर अपना वही मधुर सगीत सुनाओ जिसने इन दो हृदयो की उजडती हुई दुनिया को फिर से आबाद कर दिया। जिसने दो प्राणियो की सूखती हुई खेती पर अपने स्नेह-जल की वर्षा करके उसे लहलहा दिया। लाओ मै इकतारा बजाऊगा और तुम गाना प्रारम्भ करो।"

किशोर ने इकतारा अपने हाथ मे ले लिया और उसपर वही धुन छेड दी जिसे विमला गा रही थी। विमला के कठ से एक बार फिर मधुर रागिनी

फूट पडी। किशोर के घर का वायुमडल उसकी मिठास से भर गया।

तभी किशोर के पिताजी अपनी कपडे की कोठी से घर आए तो किशोर की माताजी ने लपककर द्वार पर ही होठो पर उगली रखकर उन्हे न बोलने का सकेत किया। उन्हे भय था कि कही वे बोल पडे तो किशोर और विमला का रस भग हो जाएगा।

किशोर की माताजी ने चुपके से यह दृश्य किशोर के पिताजी को दिखलाया तो उनकी आत्मा प्रसन्न हो उठी। उनके दिल की मुरझाई हुई कलिका खिल गई।

९

मालती से प्रकाश के विवाह की बात निश्चित हो गई। प्रकाश ने आधुनिक रीति से विवाह किया। न स्वय अधिक व्यय किया न सरोज भाभी को ही करने दिया। व्यर्थ दिखावे की उसने कोई आवश्यकता नही समझी।

प्रकाश ने अपने इष्ट-मित्रोको दावत दी। मालतीकी इच्छा से इस दावत का प्रबन्ध नई दिल्ली के मेरीना होटल मे किया गया। प्रकाश के सब मित्रो ने मालती के रूप की प्रशसा की और उसकी योग्यता का भी सभीपर प्रभाव पडा। मालती को देखकर सभीको हर्ष हुआ। इस जोडी की सभी ने सराहना की।

किशोर के माता-पिता ने भी प्रकाश की शादी के उपलक्ष्य मे अपने यहा एक विशाल भोज का आयोजन किया। प्रकाश अपनी शादी मे कोई बाजा-गाजा नही ले गया था परन्तु आज किशोर के मकान पर बाजे-गाजो का वही ठाट था जो विवाहोत्सवों पर होता है। पूर्ण रूप से भारतीय ढग की व्यवस्था थी वहा।

अपने ढग की यह भी शानदार दावत रही।

प्रकाश और किशोर ने लगभग साथ-साथ अपने गृहस्थ-जीवन मे प्रवेश किया।

किशोर अपनी दूकान पर बैठने लगा और प्रकाश हिन्दू कालेज मे प्रोफेसर हो गया। अब ये दोनो केवल प्रकाश और किशोर न रहकर प्रोफेसर प्रकाश और किशोर भाई बन गए। इनके नामो को भी इन्ही आदर-सूचक उपाधियो के साथ पुकारा जाने लगा। सक्षेप मे इनके इष्ट-मित्र इन्हे प्रोफेसर साहब और भाईजी कहकर भी अपना काम चलाने लगे। प्रकाश नित्य नियम से अपने कॉलेज जाने लगे और किशोर भाई अपनी कोठी का काम देखने लगे।

मालती घरपर अपनी बहिन सरोज के साथ रहने लगी। परन्तु इसी बीच बाबू ब्रिजकिशनजी का दिल्ली से तबादला हो गया और उन्हे कलकत्ता जाना पडा।

बाबू ब्रिजकिशन और सरोज भाभी के दिल्ली से चले जाने पर प्रोफेसर प्रकाश का घर खाली-खाली-सा हो गया। प्रोफेसर प्रकाश जब कालेज चले जाते थे तो उनके पश्चात् मालती अकेली रह जाती थी घर पर।

मालती ने अपना यह खाली समय काटने के लिए कुछ दिन पुस्तको का सहारा लिया परन्तु हर समय बैठकर पुस्तके ही पढते रहना भी उसके लिए कठिन हो गया। आखिर हर समय पुस्तके ही कैसे पढती रहे बैठी-बैठी।

प्रोफेसर प्रकाश ने प्रोफेसरी प्रारम्भ करते ही डॉक्टरेट करने के लिए एक थीसेस का विषय ले लिया और वे अपने काम मे ऐसे लिप्त हुए कि उनका सारा समय कालेज और स्टडी मे ही व्यतीत होने लगा।

मालतीकी नया विवाह करके सैर-सपाटा करनेकी आकाक्षाओकी ओर प्रोफेसर प्रकाश ध्यान न दे सके। मालती नित्य सोचती कि प्रोफेसर प्रकाश सध्या को कालेज से लौटेगे तो कनाट प्लेस घूमने चलेगे, परन्तु प्रोफेसर प्रकाश लौटे तो उनकी बगल मे चार मोटी-मोटी पुस्तके दबी हुई थी।

मालती ने पूछा, "ये इतनी पुस्तके आप क्यो उठा लाए?"

प्रोफेसर प्रकाश हसकर बोले, "मालती! ये पुस्तके मैं जो शोधग्रन्थ लिख रहा हू उसके विषय मे अध्ययन करने के लिए लाया हू। पुस्तको के नोट्स लेकर इन्हे एक सप्ताह मे पुस्तकालय को लौटा दूगा। तुम जानती

हो कि सब पुस्तके खरीदी नही जा सकती।"

यह सुनकर मालती का मन मुरझा-सा गया। वह मस मारकर बोली, "सारा दिन तो आपको पुस्तको और लडके-लड़कियो मे सिर खपाते बीत जाता है। यह सन्ध्या का समय मिलता है कही जाने-आने के लिए, सो इस समय के लिए आप यह बला उठा लाए। मैं सारा दिन यहा बैठी मक्खिया मारती रहती हू और सोचती रहती हू कि आप सन्ध्या को लौटेगे तो नई दिल्ली की ओर घूमने चलेगे। परन्तु आप आते है तो आपको अवकाश ही नही होता कही जाने के लिए।"

मालती का उतरा हुआ चेहरा देखकर प्रकाश बाबू ने पुस्तके मेज पर पटक दी और हसकर बोले, "रूठ गई, बस ! इन पुस्तको को पढने का कौन समय बीता जा रहा है मालती ? थीसेस दो वर्ष मे समाप्त नही होगा तो तीन वर्ष ले लेगा। थीसेस के लिए क्या तुम्हें अप्रसन्न होने दूगा ? चलो चलते है घूमने के लिए। जिधर तुम्हारी इच्छा हो चलो, साडी पहन लो और हा आज वह बैंजनी रग की साडी पहनना जिसे पहनकर तुम शादी के समय फेरो पर बैठी थी।"

प्रो० प्रकाश की बात सुनकर मालतीदेवी का मन खिल उठा। उन्होने तुरन्त जाकर वस्त्र बदल लिए और उसी बैंजनी रग की साडी पर बैंजनी ब्लाउज पहना। मालती का रूप दमदमा उठा। प्रोफेसर प्रकाश मालती के साथ जाकर सिर-समान शीशे के सम्मुख खडे हुए और दोनो ने दोनो की सूरत देखी तो दोनो के आनद का पारावार न रहा। प्रकाश मालतीदेवी के सौदर्य पर मुग्ध हो उठा और मालतीदेवी अपने पति के पौरुष और रूप पर अपने को भूल गई।

दोनो नई दिल्ली पहुचे। वोल्गा रेस्ट्रां मे बैठकर दोनो ने शान के साथ चाय पी। वहा की रगीन दुनिया की सैर की और फिर कनाट प्लेस का एक राउण्ड लगाकर दोनो प्रसन्न मुद्रा में अपने घर लौटे। दोनो का चित्त बहुत प्रसन्न था।

लगभग एक वर्ष यह जीवन चला जिसमें मालती की प्रवृति सैर-सपाटे की ओर बढी और प्रकाश को उसकी ओर से विरक्ति-सी होने लगी। फिर प्रोफेसर की आय भी इतनी नही होती कि वह नित्य होटलबाजी

कर सके । दो प्राणियो की छोटी-सी गृहस्थी को चलाने के लिए प्रोफेसर प्रकाश की डेढ सौ रुपये की आय पर्याप्त थी । मकान अपना घर का होने से प्रो० प्रकाश को बडी सुविधा थी, परन्तु जब उनका सारा वेतन ही होटलो के हवाले होने लगा तो उनके मन मे चिन्ता उत्पन्न हुई । उन्हे इस होटलबाजी के जीवन से घृणा होने लगी और वे उसकी ओर से खिचने लगे ।

इस होटलबाजी ने उनका अध्ययन-कार्य भी चौपट कर दिया था। कालेज से लौटते थे तो मालतीदेवी नई दिल्ली को सैर-सपाटे के लिए चलने को तैयार बैठी मिलती थी । मालतीदेवी को दुखाने का साहस प्रो० प्रकाश मे नही था । वे अपने मन से मालतीदेवी को न जाने कितनी कोमल मानते थे । इसीलिए कभी कोई ऐसा शब्द भी वे अपनी जबान से नही निकालते थे, जिससे मालती देवी के हृदय को तनिक-सी ठेस लगे। यह जानते हुए भी कि नित्य सैर सपाटे मे निकल जाने से उनके कार्य में हानि हो रही है, वे कभी मालतीदेवी के प्रस्ताव की अवज्ञा नही करते थे। मालतीदेवी चलने को कहती थी और प्रोफेसर प्रकाश उनके साथ-साथ हो लेते थे।

आज रात्रि को भोजन के उपरात जब प्रो० प्रकाश और मालती अपने ड्राइग रूम बैठे मे तो प्रो० प्रकाश सरल वाणी मे बोले, "मालतीदेवी, एक बात कहू तुमसे ?"

"कहिए !" मालती ने मुस्कराकर कहा ।

प्रो० प्रकाश भी मुस्कराकर ही बोले, "तुम्हे पता है कि अब हमारा खर्चा बढनेवाला है ।"

मालती तनिक लजाकर बोली, "मालूम मुझे न होगा तो और किसे प्रकाश बाबू !"

"तो अब हमे यह नित्य की होटलबाजी बन्द कर देनी चाहिए । इस-मे व्यर्थ समय नष्ट होता है और धन का भी अपव्यय होता है ।" प्रोफेसर प्रकाश बोले ।

"क्या कहा आपने ? हमें होटलो मे जाना बन्द कर देना चाहिए !" मुस्कराकर मालतीदेवी बोली, "या हमे अपनी आमदनी बढाने का प्रयास

करना चाहिए ? मै सोच रही हू प्रकाश बाबू कि मुझे अब वकालत प्रारम्भ कर देनी चाहिए। क्योकि इसके अतिरिक्त मुझे आय बढाने का अन्य कोई मार्ग सुझाई नही दे रहा।"

प्रोफेसर प्रकाश ने गम्भीरतापूर्वक पूछा, "तो क्या तुमने सचमुच निश्चय कर लिया मालती ! कि तुम वकालत प्रारम्भ करोगी ? क्या तुम्हे मेरा प्रस्ताव पसद नही आया ?"

मालतीदेवी मुस्कराकर बोली, "काम सभीको करना चाहिए प्रकाश बाबू ! मै नही चाहती कि मैंने जो कुछ पढा है उसे निरर्थक कर दू। फिर हम लोगो को अपनी आय भी बढानी चाहिए। आय बढाने से ही हम लोग अपना स्टैण्डर्ड ऊचा उठा सकेंगे। आपके मित्र किशोर बाबू की आय अधिक है तभी तो उनके पास मोटरगाडी है। क्या हम लोगो के पास मोटरगाडी नही होनी चाहिए ?"

प्रोफेसर प्रकाश मालतीदेवी की बात सुनकर कुछ समझ नही सके। उन्हे अपनी आय पर सन्तोष था। दो प्राणियो के छोटे-से परिवार के लिए क्या उनकी आय पर्याप्त नही थी ? यह सच था कि इतनी आय में मोटर-गाडी नही रखी जा सकती परन्तु सभी लोगो पर मोटर होना आवश्यक भी तो नही है। मालतीदेवी से कुछ कहा नही उन्होने।

अब मालतीदेवी ने सचमुच वकालत प्रारम्भ कर दी और उनकी ऐसी चली कि कमाल हो गया।

वर्ष दो वर्ष मे ही मालतीदेवी की वकालत चार-पाच सौ रुपया मासिक की हो गई। उन्हे गर्व हो उठा अपनी आय पर।

इसी बीच मे प्रोफेसर के घर मे एक पुत्र का जन्म हुआ जिसकी प्रसन्नता मे दम्पति ने एक दावत दी। इस दावत का प्रबन्ध मालतीदेवी ने मेडेन्स होटल मे किया। प्रोफेसर प्रकाश ने चाहा कि दावत का प्रबन्ध वे अपने मकान पर ही करे, परन्तु मालतीदेवी इसके लिए सहमत न हुई। वे नही चाहती थी कि उनके बडे-बडे क्लाइण्ट्स उनके इस सडे मुहल्ले के सड़े मकान पर आकर नाक-भौं सिकोडे और उन्हे लज्जा से अपना सिर झुकाना पडे।

इस दावत मे प्रोफेसर प्रकाश के मित्रो ने भी भाग लिया और

मालतीदेवी के क्लाइण्ट्स भी आए । प्रोफेसर प्रकाश के अधिकाश मित्र बेचारे खरामा-खरामा घूमते हुए या किराये की सवारियो मे ही दावत-स्थल तक पहुचे, परन्तु मालती के क्लाइण्ट्स प्राय सभी अपनी मोटरकारो मे आए । उनमे अधिकाश नगर के धनी व्यक्ति थे ।

मालतीदेवी उनकी कारो की पक्ति की ओर सकेत करके प्रोफेसर प्रकाश से बोली, "देखिए प्रकाश बाबू ! यदि हम लोग दावत का प्रबन्ध अपने मकान पर करते तो कितनी कठिनाई सामने आती इन लोगो के । ये लोग अपनी कारे कहा पार्क करते ? फिर हमारा मकान भी बहुत छोटा था इस इतने बडे आयोजन के लिए ।"

प्रोफेसर प्रकाश आजकल अपना डाक्ट्रेट का थीसेस लिखने में लगे थे और मालतीदेवी ठाट के साथ अपनी वकालत कर रही थी । वे अब अपने क्लाइण्ट्स के साथ ही नई दिल्ली की सैर को चली जाती थी । प्रोफसर प्रकाश को उनके कार्य मे वे डिस्टर्ब नही करती थी । वे कभी पूछती भी नही थी उनसे अपने साथ चलने के लिए ।

मालतीदेवी ने धीरे-धीरे अपने सम्बन्ध दिल्ली की बडी-बडी पार्टियो से बना लिए थे और उनकी वे लीगल एडवाइजर बन गई । एक दिन मालतीदेवी जब सध्या को एक रेस्ट्रा मे बैठी थी तो तभी हाईकोर्ट के एक जज महोदय ने रेस्ट्रा मे प्रवेश किया । उनकी दृष्टि मालतीदेवी पर पडी तो वे सीधे उन्हीकी टेबल पर पहुच गए और बोले, "श्रीमती मालती-देवी बैठी है ।"

मालतीदेवी जज साहब को देखकर खडी हो गई और मुस्कराकर बोली, "आइए मिश्राजी !"

मिश्राजी मालती के बराबर ही सोफे पर बैठ गए । दोनो ने साथ-साथ चाय पी और फिर बैरे को बिल लाने के लिए आज्ञा की । बिल का पेमेण्ट श्रीमती मालती ने किया । मजिस्ट्रेट साहब ने लाख अनुरोध किया बिल पेमेट करने का परन्तु मालती ने उन्हे पेमेट नही करने दिया ।

सेठ दामोदरप्रसाद के लडके लाला किशोरीलाल भी उस समय इसी रेस्ट्रा मे अपनी मित्रमडली मे बैठे थे । उनकी दृष्टि मालतीदेवी और हाई-कोर्ट के जज मिश्राजी पर गई तो उन्होने आज ही मालतीदेवी से भेट करने

का निश्चय किया। उनका एक पच्चीस लाख का केस मिश्राजी की अदालत मे चल रहा था।

श्रीमती मालती की ख्याति दिन-दूनी और रात-चौगुनी बढती जारही थी। अदालत के मजिस्ट्रेटो और जजो पर उनका प्रभाव बढता जा रहा था। श्रीमती मालतीदेवी का रूप, उनकी योग्यता और तर्क-बुद्धि तीनो एकसाथ अदालत पर प्रभाव डालते थे। उनके समक्ष आकर विपक्षी वकीलो के होश उड जाते थे।

आज रात्रि को मालतीदेवी अपने कमरे मे बैठी तो एक नया ही क्लाइण्ट उनके यहा आया और उसने मालती देवी के कार्यालय पर चारो ओर दृष्टि फैलाकर कहा, "श्रीमती मालती देवी ! आपकी इतनी बडी प्रेक्टिस है और यह कार्यालय है आपका। आपको चाहिए कि आप नई दिल्ली मे अपना कार्यालय बनाए।"

इस क्लाइट की बात सुनकर मालतीदेवी बोली, "आपका फरमाना उचित ही है, परन्तु नई दिल्ली मे स्थानो का बहुत अभाव है। मैं जानती हू कि वहा पहुचने से मेरी प्रेक्टिस बढ सकती है परन्तु धनाभाव मे मै अभी यही पर काम चला रही हू। यह हमारा अपना घर का मकान है। यहा कोई किराया नही देना होता हमे।"

क्लाइण्ट मुस्कराकर बोला, "मेरा मकान नई दिल्ली मे है। उसे भी आप अपना ही मकान समझे। मैं आपके लिए कार्यालय की व्यवस्था कर सकता हू। आप चाहे तो चलकर देख सकती है वह स्थान।"

"सच !" आश्चर्यचकित होकर मालतीदेवी ने कहा, "नई दिल्ली मे किस स्थान पर है आपका मकान ?"

"ओडियन सिनेमा के ठीक सम्मुख है। वह पूरी बिल्डिग आपकी अपनी ही है।" इस क्लाइण्ट ने कहा।

मालतीदेवी मुग्ध हो उठी यह सुनकर। उनकी आत्मा प्रसन्न हो उठी। वे अनुभव कर रही थी कि अब इस मालीवाडे के कार्यालय से उनका काम नही चल सकता। इसमे रहकर उनकी प्रेक्टिस आगे नही बढ सकती। इस कार्यालय मे बडे-बडे क्लाइण्ट्स को डील नहीं किया जा सकता। और जब तक बडे-बड़े क्लाइण्ट्स हाथ मे नही आते तब तक उनकी आय और

अधिक नही बढ सकती ।

मालतीदेवी की आय अब लगभग सात-आठ सौ रुपया मासिक हो गई थी परन्तु इससे उन्हे सन्तुष्टि नही थी । वे एकदम उन्नति के उच्चतम शिखर पर पहुच जाना चाहती थी ।

मालतीदेवी बोली, "तो आप वह स्थान कब दिखलाएगे मुझे ?"

क्लाइण्ट बोला, "अभी, इसी समय ।"

"इसी समय !" मालतीदेवी ने मुस्कराकर कहा ।

क्लाइण्ट बोला, "हा ।"

"तो चलो ।" कहकर मालतीदेवी उठकर चलने को तैयार हो गई ।

प्रोफेसर प्रकाश बराबर के कमरे मे बैठे मालतीदेवी और इस क्लाइण्ट की ये बाते सुन रहे थे । उन्हे ये बाते भली नही लग रही थी । वे दोनो के निकट आकर मालतीदेवी से बोले, "मालती ! तुम अभी-अभी तो आकर बैठी हो और अभी फिर कही जाने को उद्यत हो गई । कल चली जाना । वह मकान कही उठकर तो नही चला जाएगा रात-रात मे ।"

मालतीदेवी मुस्कराकर बोली, "प्रकाश बाबू ! नेक कार्य जितना शीघ्र हो उतना शीघ्र कर लेना चाहिए । उसमे विलम्ब नही करना चाहिए ।" और इतना कहकर वे बिना प्रोफेसर प्रकाश के उत्तर की प्रतीक्षा किए क्लाइण्ट के साथ चल पडी ।

प्रोफेसर प्रकाश देखते के देखते ही रह गए । उनके हृदय पर भारी ठेस लगी । पुत्र के जन्मोत्सव की दावत मेडेन्स होटल मे करके मालतीदेवी ने प्रोफेसर प्रकाश की इच्छा के विरुद्ध कार्य किया था । और फिर वहा अपने क्लाइण्ट्स की मोटरो की कतार दिखलाकर मालतीदेवी ने प्रोफेसर प्रकाश और उनके सब मित्रो का अनादर किया था । परन्तु उन सब बातो पर एक सभ्यता का आवरण था । लेकिन आज जो कुछ हुआ वह उनकी इच्छा की स्पष्ट अवहेलना थी ।

प्रोफेसर प्रकाश का मन अपने काम मे न लग सका । उन्होने अपनी पुस्तके उठाकर एक ओर रख दी और खरामा-खरामा कमरे मे घूमने लगे ।

मालतीदेवी के जीवन मे धन की बढती हुई लालसा को देखकर उन्हे लग रहा था कि वे प्रोफेसर प्रकाश से दूर जा रही थी । उन्हे अब मालता

के हर काम मे अपनी उपेक्षा की बू आने लगी थी। वह उपेक्षा होती मुस्करा-कर ही थी परन्तु मालतीदेवी की यह मुस्कान प्रोफेसर प्रकाश के दिल मे गुदगुदी पैदा नही कर पाती थी। उलटी कुछ जलन और टीस का सा आभास उन्हे मिलता था अपने हृदय मे।

प्रोफेसर प्रकाश का मन चिन्ताग्रस्त हो उठा। उनके माथे मे हलका-हलका दर्द-सा होने लगा। उन्होने कमरे मे सामने लगे मालतीदेवी के चित्र की ओर देखा और वही खडे होकर चित्र की ओर मुह करके बोले, "मालती! जिस मार्ग पर तुम इतनी तीव्र गति से बढ रही हो। वह पता नही कहा ले जाएगा तुम्हे।" और फिर लम्बी उसास लेकर बोले, "जाओ मालती! प्रकाश तुम्हारे मार्ग मे रुकावट नही बनेगा कभी। तुमने आकर्षण से विक-र्षण का मार्ग चुना है तो चलो उसीपर। तुम जहा जिस रूप मे भी रहो सुखी रहो।" कहते-कहते प्रोफेसर प्रकाश की आखो मे आसू भर आए। उनका हृदय दग्ध हो उठा।

मालतीदेवी एक घटे पश्चात् लौटी तो उनके मानस मे आनन्द की हिलोरे उठ रही थी। उनकी प्रसन्नता का पारावार नही था। उनके पैर सही तौर पर भूमि पर नही पड रहे थे। उनका मन अपनी सफलता का ब्योरा प्रोफेसर प्रकाश के सम्मुख प्रस्तुत करने को उतावला हो रहा था।

वे प्रोफेसर साहब के पास आकर बैठी तो प्रोफेसर प्रकाश ने और भी ध्यान के साथ अपने नेत्र अपनी पुस्तक के पन्नो मे गडा लिए।

मालतीदेवी अपनी इस उपेक्षा को देखकर खीझ-सी उठी और कुढकर बोली, "क्या आज ही डॉक्ट्रेट की उपाधि लेने की ठान ली है आपने प्रकाश बाबू?"

मालती देवी की बात सुनकर प्रकाश बाबू ने गर्दन ऊपर उठाकर कहा, "तुम आ गई मालतीदेवी! चलो भोजन कर ले।"

परन्तु मालतीदेवी को कतई भूख नही थी। वे आज सेठ दामोदरप्रसाद के लडके लाला किशोरीलाल को अपना क्लाइण्ट बनाकर आ रही थी। कनाट-प्लेस के अन्दर शानदार आफिस के अतिरिक्त उन्होने पाच हजार रुपये का एक चेक भी मालतीदेवी को उनकी फीस के बतौर दिया था। एक केस था उनका हाईकोर्ट मे। उन्हे अपनी आज की असाधारण सफलता पर गर्व हो

उठा था। उन पाच हजार रुपये का नशा उनके नेत्रो की पुतलियो मे खुमार बनकर छा गया था। प्रोफेसर प्रकाश रात-दिन मरकर भी क्या इतना धन कभी कमा पाएगे। उनके सम्मुख प्रोफेसरी का पेशा अपने काम के सम्मुख चिउटी और हाथी की तुलना मे खडा दिखलाई दिया।

लाला किशोरीलाल को अपना क्लाइण्ट बनाकर फिर वे दोनो किसी रेस्ट्रा मे चले गए थे और दोनो ने ठाटदार भोजन किया था। मालतीदेवी को इस समय कतई भूख नही लगी थी। सच बात यह थी कि उन्हे घर के रसोइये का बनाया भोजन कुछ पसद भी नही आता था इसीलिए वे सध्या का भोजन किसी नई दिल्ली के रेस्ट्रा मे ही कर लिया करती थी।

प्रोफेसर प्रकाश इधर लगभग कई मास से यह प्रक्रिया देख रहे थे कि मालतीदेवी सध्या का भोजन घर पर नही करती थी। उन्हे मालतीदेवी का यह कार्यक्रम भला नही लगता था।

मालतीदेवी बोली, "कर लेना भोजन भी।" और फिर पाच हजार का चेक प्रोफेसर प्रकाश के सम्मुख मेज पर रखकर बोली, "आप रोक रहे थे न मुझे। मैं नही जाती तो पता नही कल यह क्लाइण्ट हाथ आता या नही। ऐसे क्लाइण्ट कभी-कभी ही हाथ मे आते है।"

प्रोफेसर प्रकाश के मन मे यह पाच हजार का चेक देखकर कोई उत्ते-जना पैदा नही हुई। उन्हे लगा कि यह कागज का टुकडा मालतीदेवी ने अपने पर्स से निकालकर उनकी मेज पर रख दिया था।

प्रोफेसर प्रकाश बोले, "मालूम देता है भूख नही है तुम्हे।" इतना कह-कर वे कुर्सी से उठ खडे हुए और रसोईघर मे जाकर पडित से बोले, "पडित, थाली लगाओ हमारे लिए।"

पडित ने प्रोफेसर साहब की थाली लगाकर पूछा, "क्या बहूजी भोजन नही करेगी?"

प्रोफेसर साहब हसकर बोले, "आज क्या कुछ नई बात है पडित! जो बहूजी भोजन करेगी। कही किसी होटल मे खा लिया होगा उन्होने। उन्हे घर का बना भोजन पसन्द नही है।"

पडित बोला, "मेरा खाना नित्य बचा रह जाता है बाबूजी! मुझे नित्य सवेरे यही बचा हुआ खाना खाना होता है।"

प्रोफेसर साहब हसकर बोले, "जब तुम जानते हो कि वे सन्ध्या का भोजन तुम्हारी रसोई मे नही करती तो बनाते ही क्यो हो ? न बनाया करो कल से।"

पडित रुग्रासा होकर बोला, "बाबूजी, घर मे रहनेवाले किसी भी ग्रादमी के लिए भोजन न बनाने पर बनानेवाले को पाप चढता है। ग्रौर फिर वह भी घर की मालकिन के लिए भोजन की व्यवस्था न करना तो ग्रौर भी बडा पाप है।"

पडित की भावुकतापूर्ण बात सुनकर प्रोफेसर प्रकाश के हृदय पर भारी ठेस लगी। उनके मन मे कुछ बेचैनी-सी पैदा हो गई।

वे भोजन करके चुपके से घर से बाहर निकल गए ग्रौर थोडा ग्रागे बढकर किशोर के घर चले गए।

किशोर के यहा ग्राए उन्हे काफी दिन हो गए थे। वे सीधे घर के ग्रागन मे गए तो किशोर की माताजी भोजन बना रही थी। प्रोफेसर प्रकाश ने जाकर उन्हे प्रणाम किया। किशोर की माताजी का मन हर्षित हो उठा, प्रोफेसर प्रकाश को देखकर वे बोली, "ग्ररे ! इतने दिन कहा रहा तू प्रकाश। ग्रपनी माताजी की भी सुध नही ग्राई तुझे। ऐसा किस काम मे फसा था जो यहा ग्राना भी भूल गया।"

प्रोफेसर प्रकाश तनिक लजाकर बोले, "कुछ काम मे फसा रहा माता-जी। डाक्ट्रेट का थीसेस लिख रहा हू। उसीमे रात-दिन उलझा रहता हू। बहुत कम ग्रवकाश मिलता है इधर-उधर जाने का।"

"ग्रच्छा-ग्रच्छा ! खूब पढो बेटा ! खूब विद्वान बनो। तुम्हारी योग्यता की बात सुनती हू तो मन फूला नही समाता।"

माताजी के मुख से ये शब्द सुनकर प्रोफेसर प्रकाश का भारी मन तनिक हलका हो गया। उन्हे सात्वना-सी मिली कुछ माताजी के इन शब्दों से। उनके मन की उदासी भी तनिक दूर हुई।

प्रोफेसर प्रकाश ने पूछा, "क्या किशोर भाई ग्रभी नही लौटे माताजी कलकत्ता से ?"

माताजी ने सामने किशोर के कमरे की ग्रोर सकेत करके कहा, "भोजन कर रहा है किशोर बेटा ! जाग्रो वही चले जाग्रो। यहा ग्रगीठी

की गर्मी भी हो रही है। वही पखे के नीचे बैठना।"

प्रोफेसर प्रकाश ने वही से देखा तो किशोर और विमलारानी दोनो चटाई पर बैठे एक थाली मे भोजन कर रहे थे और मीठी-मीठी बाते कर रहे थे मुस्करा-मुस्कराकर।

यह देखकर प्रोफेसर प्रकाश ने अपने हृदय मे महान शाति का अनुभव किया। किशोर भैया का भाभी के प्रति कुठित हुआ मन यकायक इतना विशाल हो उठा, यह देखकर उनका मन मुस्करा दिया। वे स्वय भी विधाता की विचित्रता पर मुस्करा दिए। किशोर भाई के जीवन के इस आकस्मिक परिवर्तन को देखकर उनकी आत्मा को महान शाति प्राप्त हुई।

प्रोफेसर प्रकाश की दृष्टि भाभी के अनावृत मुखमण्डल पर पडी तो वे चकित-से रह गए। उनका सावला वर्ण उनकी दृष्टि के सामने से धुल गया और उन्होने भाभी के रूप का जो निखार देखा उसे देखकर वे अपने-आप से कह उठे, 'क्या इसी रूपवती को तूने एक दिन 'काली-कलूटी' कहा था ?' उन्होने अपने शब्दो का स्मरण कर अपने मन मे लज्जा का अनुभव किया और अपने-आपको धिक्कारा।

वे कुछ देर तक बाहर ही खडे-खडे किशोर भाई और भाभी को भोजन करते हुए देखते रहे और फिर न जाने कब उनके पैर उन्हे किशोर के कमरे मे उठाकर ले गए।

उन्हे देखते ही विमला ने अपना घूघट तनिक नीचा कर लिया। किशोर भाई ने विमला को घूघट खिसकाते और हाथ का कौर थाल मे छोडते देख, मुडकर पीछे की ओर देखा तो उनका सारा बदन पुलकायमान हो उठा। उनका हृदय हर्ष से खिल उठा।

किशोर भाई खडे होकर प्रोफसर प्रकाश से लिपट गए और गद्गद स्वर मे बोले, "प्रकाश, अच्छे तो रहे इतने दिन। मै अभी-अभी भोजन करके तुम्हारे ही पास आने का विचार कर रहा था। आज ही सन्ध्या की गाडी से तो लौटा हू कलकत्ता से। घर पर सब कुशलपूर्वक तो है। हमारा मुनवा सुबोध और उसकी मा तो सकुशल है।"

प्रोफेसर प्रकाश के मन का भारीपन अब बिलकुल साफ हो गया। वे बोले, "सब कुशल है भैया किशोर! तुम तो सकुशल रहे कलकत्ता

मे । कोई परेशानी तो नही हुई परदेश मे ?"

"हां भैया, सब कुशल ही रही । अभी-अभी तुम्हारी भाभी कह रही थी कि इधर बीच मे तुम हमारे घर आए ही नही । ऐसे किस काम मे फसे रहे जो दो-चार घडी भी अवकाश नही मिला इधर आने का ?" किशोर भाई ने पूछा ।

प्रोफेसर प्रकाश बोले,"फसा ही रहा समझो किशोर भाई ! डॉक्ट्रेट करने का झमेला कुछ ऐसा पाल लिया है मैने कि रात-दिन उसीमे उलझा रहता हू । परन्तु अब लगभग कार्य समाप्त कर लिया है मैंने ।"

"अच्छा ! तो प्रोफेसर प्रकाश डा० प्रकाश बनने की तैयारी मे है। बहुत अच्छा भैया ! बहुत अच्छा ! मुझे गर्व है अपने भाई की योग्यता पर और खेद भी है कि मै अपने भैया का साथ न दे सका । परन्तु तुममे और मुझमे क्या कोई अन्तर है ? तुम डा० प्रकाश कहलाओगे तो मैं डा० प्रकाश का बडा भाई क्या नही कहलाऊगा ? एक वर्ष बडा हू न तुमसे ।" किशोर भाई सहर्ष बोले ।

प्रोफेसर प्रकाश अवसर देखकर विमला की ओर मुह करके बोले,"कुछ सुना भाभी आपने ! भैया यह बतलाकर कि ये मुझसे बडे है, आपसे कह रहे है कि फिर यह घूघट क्यो ? आप भैया के आशय को नही समझी, इसलिए मुझे व्याख्या करनी पड रही है। तुम्हारे देवर ने काम ही व्याख्या करने का चुना है प्रोफेसर बनकर ।"

किशोर भाई प्रोफेसर प्रकाश की बात सुनकर खिलखिलाकर हस पडे और विमला के घूघट को देखकर बोले, "विमला ! प्रकाश सच कह रहा है। इसे मैने आज तक अपने सगे छोटे भाई के तुल्य ही माना है। इसके सामने तुम्हारा घूघट करना उचित नही होता।" और फिर प्रोफेसर प्रकाश की ओर देखकर बोले, "प्रकाश, तुम स्वय भी तो अपनी भाभी के घूघट को खोल सकते हो। डरते क्यो हो आखिर तुम ?"

किशोर भाई का यह वाक्य सुनकर विमला देवी ने स्वय धीरे से अपना घूंघट ऊपर सरका लिया । उनके घूघट से बाहर निकले मुस्कराते मुख को देखकर प्रोफेसर प्रकाश को लगा कि चाद बदली [illegible] बाहर निकल आया । नील कमल को लजानेवाली विमला भाभी [illegible] निर्मल रूप को देखकर

प्रोफेसर प्रकाश के हृदय को महान सात्वना मिली। सरोज भाभी ने जो एक दिन विमला के रूप की प्रशसा उनके सम्मुख की थी, उन्हे आज उसपर विश्वास हुआ।

किशोर भाई प्रोफेसर प्रकाश को एकटक अपनी भाभी के चेहरे पर आखे गडाए देखकर बोले,"प्रकाश! सुन्दर है न तुम्हारी भाभी! ठीक वैसा ही है न जैसी तुम चाहते थे!"

प्रोफेसर प्रकाश श्रद्धापूर्ण स्वर मे बोले,"उससे भी कही अधिक सुन्दर है भाभी, किशोर भाई! इस रूप का सचमुच कोई उत्तर नही है।"

प्रोफेसर प्रकाश के मुख से अपनी पत्नी के रूप की प्रशसा सुनकर किशोर भाई मुग्ध हो उठे। वे और भी उत्साहपूर्ण स्वर मे बोले, "भैया प्रकाश! तुम्हे एक बात और बतलाऊ। तुम्हारी भाभी केवल शक्ल-सूरत मे ही रूपवती नही है, गुणो की भी खान है। यदि इनका मनोहर सगीत तुम किसी दिन सुनोगे तो तुम्हारी आत्मा को बहुत सुख मिलेगा।"

प्रोफेसर प्रकाश सरोज भाभी से विमलादेवी के सगीत की प्रशसा सुन चुके थे और उसे सुनने की उनके मन मे प्रबल आकाक्षा थी परन्तु किशोर भाई की उनके प्रति अनासक्ति ने इस घर का वातावरण इतना नीरस और निराशापूर्ण बना रखा था कि उनकी आकाक्षा का दम अन्दर ही अन्दर घुटकर रह जाता था। कई बार मन मे प्रबल इच्छा उत्पन्न होने पर भी वे मु ह नही खोल पाए थे।

आज उपयुक्त अवसर देखकर प्रोफेसर प्रकाश बोले,"भाभी का मधुर सगीत सुनने की प्रबल आकाक्षा को मैं कितने दिन से अपने मन मे दबाए बैठा हूं किशोर भाई! यह आप नही जानते। सरोज भाभी ने आपके मधुर स्वर की मेरे सम्मुख जिस दिन मुक्त कठ से प्रशसा की थी तो मेरा मन हुआ था कि मैं तभी यहा दौडा हुआ चला आऊ और भाभी से कहू, 'भाभी, वही गाना सुनाओ जिसने सरोज भाभी पर जादू कर दिया था।' आप सच जाने भैया! कि सरोज भाभी जितने दिन भी यहा रही, शायद ही कोई दिन ऐसा गया हो जिस दिन उन्होने मेरे सम्मुख भाभी के रूप और गुणो की प्रशसा न की हो। परन्तु सच यह था कि मैं वह सब कुछ समझ ही न पाया था। आपकी भाभी के प्रति अनासक्ति और सरोज भाभी की प्रशसा

मे कोई सामजस्य न देखकर मै विचारशून्य रह जाता था। आपके समक्ष इस विषय पर बाते करने का मुझमे साहस ही न होता था। परन्तु आज प्रत्यक्ष देख रहा हू कि सरोज भाभी ने जब-जब जो कुछ भी कहा वह कितना सत्य था।"

प्रोफेसर प्रकाश की बात सुनकर किशोर भाई ने अपने मन मे लज्जा का अनुभव किया। वे तनिक लजाते-से बोले, "प्रकाश! मुझसे सचमुच तुम्हारी भाभी के प्रति महान अनर्थ बन पडा। पता नही मेरी आखो पर कैसे वह पर्दा पड गया था कि जिसे चीरकर मेरी दृष्टि तुम्हारी भाभी के मुखचन्द्र की आभा को देख ही न सकी।" और फिर हसकर बोले, "सच बात बतला दू प्रकाश तो वह यह है कि मेरे नेत्रो मे तुम्हारी रूप की परिभाषा भरी हुई थी, उस समय जब मैंने तुम्हारी भाभी के मुख पर प्रथम दृष्टि डाली और मुझे जब इस चेहरे पर तुम्हारी परिभाषा की पहली शर्त का ही विरोधाभास मिला तो मेरे नेत्र बन्द हो गए। मेरे मन और नेत्र दोनो का उत्साह भग हो गया, उनकी गति रुक गई। मेरी विचार-शक्ति कुठित हो गई। परन्तु प्रकाश! मैंने अन्त मे अनुभव किया कि तुम्हारी रूप की परिभाषा को तुम्हारी भाभी ने गलत साबित कर दिया और मेरी ही परिभाषा सही निकली।"

कोई और समय होता तो सम्भवत प्रोफेसर प्रकाश इस प्रश्न पर तर्क करते। परन्तु आज तर्क करने का उनके पास कोई कारण नही था। रूप की अपनी परिभाषा की असारता उनके समक्ष अपनी पत्नी मालती के रूप मे साक्षात खडी थी।

प्रोफेसर प्रकाश का चेहरा गम्भीर हो उठा और वे उतनी ही गम्भीर वाणी मे बोले, "किशोर भाई, रूप के विषय मे आपकी ही परिभाषा सत्य निकली। अपनी परिभाषा का उथला स्वरूप जितना प्रत्यक्ष मेरे समक्ष आज है, उतना अन्य किसी समय मेरे सम्मुख नही आया।" ये शब्द कहते समय प्रोफेसर प्रकाश के समक्ष मालतीदेवी की सूरत आकर खडी हो गई थी और वे स्पष्ट देख रहे थे कि नारी के ऊपरी रूप का आकर्षण कितना निराधार है।

प्रोफेसर प्रकाश के चेहरे और उनकी वाणी मे यह आकस्मिक

परिवर्तन देखकर किशोर भाई स्तब्ध रह गए। परन्तु उन्हे प्रसन्नता बहुत हुई।

प्रोफेसर प्रकाश का हृदय अनायास ही अपनी पत्नी मालतीदेवी के अपने प्रति व्यवहार की याद करके पीडा से भर उठा था। उनका मन कह रहा था, 'वह रूप ही क्या जो अपने पति के हृदय और मस्तिष्क को शाति प्रदान न कर सके।'

जिस रहस्य को किशोर भाई समझने मे असमर्थ रहे उसे समझने मे विमला देवी को एक क्षण भी न लगा। वे मुस्कराकर बोली, "मालूम देता है आज देवरजी के हृदय को देवरानीजी ने अपने किसी व्यवहार से दु खी कर दिया है।" और फिर मुस्कराकर बोली, "परन्तु अब इस प्रकार गम्भीर बनने से काम नही चलेगा देवरजी ! उनकी कमिया आपको निभानी चाहिए। उनकी कमियो को आप नही निभाएगे तो कौन निभाएगा?"

"निभाऊगा भाभी ! प्राण रहते निभाने का प्रयास करूगा। जो भूल मुझसे जीवन मे बन पडी है, उसे सही करने का प्रयास करूगा। जब मैंने अपने विवाह की स्वीकृति सरोज भाभी को दी थी तो मुझे मालूम है कि आपके पिताजी ने अपनी असहमति प्रकट की थी। उन्होने स्पष्ट रूप से मुझसे कुछ नही कहा और यही कहा कि वे मेरे जीवन को सुखी देखना चाहते हैं, परन्तु उनकी वाणी मे वह जो कुछ भी होने जा रहा था उसके प्रति घोर निराशा थी। उन्होने दु खी मन से सहमति प्रदान की थी। उनकी वह निराशा जो उस समय मुझे भली नही लग रही थी आज सोच रहा हू कि मैंने क्यो नही उनकी उस घोर निराशा को अपने सीने से चिपटा लिया ? मेरी बुद्धि नारी के ऊपरी रूप मे आगे भी कुछ होता है यह समझने मे अनभिज्ञ रही। पिताजी के दीर्घकालीन जीवन-अनुभव की उपेक्षा का अभिशाप मैं देख रहा हू कि जीवन-भर मुझे दग्ध करता रहेगा।"

इसके पश्चात् प्रोफेसर प्रकाश ने किशोर भाई और विमला भाभी के समक्ष अपने और मालती देवी के आज तक के जीवन की पूरी कहानी सुनाई तो उसे सुनकर वे दोनो स्तब्ध रह गए। प्रोफेसर प्रकाश के जीवन मे घटनेवाली इस दुर्घटना का ज्ञान प्राप्त करके उन्हे असीम वेदना हुई और दोनो ने करुणापूर्ण दृष्टि से प्रोफेसर प्रकाश के चेहरे पर देखा। उन्होने

देखा कि प्रोफेमर प्रकाश के नेत्रो मे जल छलछला आया था। परन्तु भैया और भाभी के समक्ष अपनी आतरिक वेदना को स्पष्ट करके उनके हृदय को कुछ सात्वना अवश्य मिली। उनके मन का भार कुछ हलका-सा हुआ और उन्होने अपने हृदय मे उठनेवाले बवडर को दबाकर बलात् होठो पर मुस्कराहट लाकर कहा, "किशोर भाई! जो होना था वह हो चुका। अब तो सहन करने की बात शेष है। सो सहन करता रहूगा उस समय तक जब तक इस शरीर मे श्वास चलते रहेगे। प्रकाश का शेष जीवन अब सहन करने के अतिरिक्त और रह ही क्या गया है?"

आज इससे अधिक बाते न हो सकी। रात काफी हो गई थी। प्रोफेसर प्रकाश उठकर चले तो किशोर भाई उन्हे उनके मकान तक छोडने आए। मार्ग मे दोनो ने कोई बात नही की। किशोर भाई का मन प्रोफेसर प्रकाश के जीवन मे आनेवाली इस निराशा को देखकर दु खी हो उठा।

उन्होने अपने घर लौटकर विमला देवी से कहा, "विमला! मालती ने प्रकाश के जीवन को घोर निराशा के अधकार मे धकेल दिया। मुझे पहले ही भय था कि यह लडकी प्रकाश के जीवन मे शाति और सुख का सचार नही कर सकेगी। उसे अपनी वकालत मे जो सफलता मिली है उसने उसके मस्तिष्क को खराब कर दिया है। उसने प्रकाश का कहना न मानकर प्रकाश को आज बहुत कष्ट पहुचाया। ऐसा उसे नही करना चाहिए था।"

विमला देवी को इस समाचार ने बहुत कष्ट पहुचाया।

१०

मालतीदेवी को अपने प्रति किया गया आज प्रोफेसर प्रकाश का व्यवहार अत्यन्त अपमानजनक प्रतीत हुआ। उन्होने अपनी दृष्टि से आज तक कोई ऐसा कार्य नही किया था जिसपर प्रकाश बाबू को बुरा मानने का कोई कारण होना चाहिए।

उन्होने अपनी योग्यता से अपने परिवार को सम्पन्न बनाने का प्रयास

किया तो इसमे क्या अपराध किया उन्होने ? उनके अर्जित धन के प्रति प्रकाश बाबू के मन मे इतना उपेक्षा का भाव क्यो जाग्रत् हो ?

उन्हे होटलो की दुनिया पसद नही थी और सध्या को नित्य घूमने जाने से उनके कार्य मे हानि होती थी तो उन्होने इन दोनो कामो से उन्हे मुक्त कर दिया। इसमे क्या अपराध किया उन्होने ? उनके मन की किसी इच्छा का उन्होने कभी विरोध नही किया। विरोध प्रकाश बाबू ने भी कभी इनके किसी कार्य का नही किया, परन्तु पीडा उन्हे अवश्य पहुची। उनकी समझ मे प्रकाश बाबू की पीडा का कोई कारण न आ सका।

उन्हे लगा कि प्रकाश बाबू ने उनके प्रति अन्याय किया। यह भाव मन मे आते ही उनका मन अगारे के समान दहक उठा। उन्हे मन ही मन कुछ ग्लानि-सी अनुभव होने लगी पुरुषो के व्यवहार पर। आखिर प्रोफेसर प्रकाश क्या पत्नी को एक कठपुतली-मात्र समझते है, जिसकी चोटी उनके हाथ में रहे और वे जिस प्रकार उसे नचाना चाहे नचाए। एम० ए० तक शिक्षा प्राप्त करके भी इनके मस्तिष्क की रूढिया खडित न हो सकी। ये पत्नी को अपने उसी सकुचित दृष्टिकोण से परखते हैं जिसका इस घर की चारदीवारी से बाहर की दुनिया से कोई सम्पर्क ही नही होना चाहिए।

मालतीदेवी अकेले मे ही मुस्करा उठी। उन्हे प्रोफेसर प्रकाश की सकीर्णता पर दया आई, परन्तु उनके मन की जलन दूर नही हुई। उनके हृदय मे आज अथाह पीडा थी। उनका मन उनकी अदूरदर्शिता पर क्षुब्ध हो उठा।

जिस दिन प्रथम बार एल्प्स रेस्ट्रा के सम्मुख मालतीदेवी ने प्रोफेसर प्रकाश की आज की रगीन दुनिया मे अनासक्ति देखी थी तो उन्हे उसी दिन अपना निर्णय बदल देना चाहिए था। उन्हे प्रोफेसर प्रकाश की मनोवृत्तियो का अध्ययन करना चाहिए था, परन्तु उस समय वे प्रकाश बाबू के रूप पर मोहित हो उठी थी। उन्होने सोचा था कि वे प्रकाश बाबू के रूढ़िवादी स्वरूप को दूर करने मे समर्थ हो सकेगी। परन्तु जब एक वर्ष के निरन्तर प्रयास के फलस्वरूप भी उन्हे सफलता प्राप्त न हो सकी तो उन्हे अपना मार्ग बदलना पडा। उन्हे अपने जीवन का स्वतन्त्र मार्ग खोजना पडा। और अपने इस मार्ग पर वे प्रोफेसर प्रकाश की सीमित आय पर

आश्रित रहकर नही चल सकती थी। वे अपनी स्वच्छदता पर प्रकाश बाबू की उपार्जित निधि को व्यय करने के लिए उद्यत न हो सकी।

उस समय उनके पास इसके अतिरिक्त अन्य कोई चारा नही था कि वे अपनी वकालत प्रारम्भ करे। उन्होने कोई गलत कार्य नही किया। प्रोफेसर प्रकाश अपने मार्ग पर चले। वे उनके मार्ग मे कोई बाधा उपस्थित नही करेगी परन्तु उनका अपने मार्ग मे आना भी अब वे सहन नही करेगी। वे अपने मार्ग पर अपनी स्वेच्छा से ही चलेगी। प्रोफेसर प्रकाश उनके साथ चल सके तो उन्हे इसमे प्रसन्नता होगी और न चल सके तो इसका उन्हे खेद नही होगा।

आज मालतीदेवी ने अपने मन मे यह दृढ निश्चय कर लिया।

तभी प्रोफेसर प्रकाश ने पडित को आवाज दी और पडित ने द्वार खोल दिए।

प्रोफेसर प्रकाश अपने ड्राइग रूम मे आए तो मालतीदेवी को उसी कुर्सी पर बैठे पाया जिसपर बैठी छोडकर वे भोजन करने के लिए उठ खडे हुए थे।

"तुम सोई नही मालती, अभी तक! मैं तो समझ रहा था कि तुम सो गई होगी। किशोर भाई कलकत्ता से लौटे थे तो उनसे ज़रा मिलने के लिए चला गया था। वही इतनी देर हो गई।" प्रोफेसर प्रकाश ने कहा।

मालतीदेवी ने प्रोफेसर प्रकाश की बात का प्रश्नवाचक शब्दो मे उत्तर दिया, "आप सोने योग्य स्थिति मे छोड गए थे क्या मालती को?

प्रोफेसर प्रकाश सरल वाणी मे बोले, "दिन-भर के कामो से थककर नीद आ जाना स्वाभाविक ही था, इसीसे मैंने कहा। चलो सो जाओ अब। बहुत रात हो गई।"

प्रोफेसर प्रकाश के इन शब्दो से मालतीदेवी के दग्धहृदय को सात्वना न मिल सकी। वे अन्यमनस्क वाणी मे बोली, "सो जाऊंगी मैं। आप विश्राम करें। सोने मे अधिक देर होने से आपकी पढाई के कार्य मे बाधा पडेगी।"

प्रोफेसर प्रकाश मालतीदेवी के व्यग्य को समझकर मुस्कराते हुए बोले, "तो क्या सेठ दामोदरप्रसाद के लडके लाला किशोरीलाल के केस

की तैयारी तुम्हे सब ग्राज ही करनी है मालती ? कल कर लेना। ग्राखिर कुछ काम तो कल पर छोडने ही पडेगे। सभी काम तो ग्राज समाप्त नही हो सकते।"

मालतीदेवी ग्रपनी कुर्सी पर गम्भीर बनी बैठी रही। उन्होने प्रोफेसर प्रकाश की बात का कोई उत्तर नही दिया, ग्रौर मन मे कहा, 'ये मेरी सफलता का ग्रादर नही कर सके। मेरे कार्य की उन्नति इनके हृदय के विषाद का कारण बनी। ये इतने सकुचित विचारो के व्यक्ति निकलेगे, इसकी मुझे स्वप्न मे भी ग्राशा नही थी।'

प्रोफेसर प्रकाश मालतीदेवी की गम्भीर मुख-मुद्रा को देखकर स्वय भी गम्भीर हो उठे ग्रौर गम्भीर वाणी मे ही बोले, "मालतीदेवी ! यह दुर्भाग्यपूर्ण बात रही कि मेरा ग्रौर तुम्हारा जीवन दो विभिन्न दिशाग्रो मे बह चला। ग्रच्छा तो यही होता कि जो सगम हम दोनो के जीवन का बना था वह स्थायी होता ग्रौर वहा से हम दोनो की जीवन-धारा एक होकर ग्रागे बढती, परन्तु यह सम्भव प्रतीत नही हो रहा ग्रब। मेरे ग्रौर तुम्हारे विचारो मे गम्भीर मतभेद पैदा हो गया। ऐसी दशा मे मैंने सोचा, उचित यही है कि तुम्हारा जो व्यवहार मुझे ग्रच्छा न लगे उसे मैं सहन करू ग्रौर मेरा जो व्यवहार तुम्हे पीडा पहुचाए उसके लिए तुम मुझे क्षमा करती रहो। ऐसा करने से हम दोनो के व्यावहारिक जीवन मे शाति बनी रहेगी। विधाता ने यदि कभी चाहा ग्रौर हम दोनो की सहनशक्ति का बाध न टूट गया तो सम्भव है कभी हम दोनो की दो धाराए फिर बहती-बहती समुद्र के किनारे तक पहुचते-पहुचते ग्रापस मे जा मिले।"

प्रोफेसर प्रकाश की गम्भीर वाणी सुनकर मालतीदेवी के नेत्र छल-छला ग्राए। उनके नेत्र सजल हो उठे। उनके हृदय मे ग्रथाह पीडा उमड ग्राई।

प्रोफेसर प्रकाश ने ग्रागे बढकर मालतीदेवी का हाथ ग्रपने हाथ मे लेकर कहा, "उठो मालती। बहुत रात बीत गई। ग्रब सोना चाहिए। मैं ग्रपने विचारो को बदल नही सकता ग्रौर देख रहा हू कि यही तुम्हारी भी मन.स्थिति बन चुकी है।"

मालतीदेवी उठ खडी हुई। उनकी दृष्टि प्रोफेसर प्रकाश के चेहरे पर

गई तो उन्होने देखा कि उनके मुखमडल पर अथाह पीडा छाई हुई थी। उन्हे लगा कि उनके हृदय मे अथाह वेदना थी।

दोनो उठकर अपने शयनागार मे चले गए। फिर वे दोनो आपस मे एक-दूसरे से एक शब्द भी न बोले।

प्रोफेसर प्रकाश दूसरे दिन से फिर अपने थीसेस के कार्य मे व्यस्त हो गए और मालतीदेवी ने नई दिल्ली मे अपना कार्यालय बना लिया। वे नित्य नियम से नई दिल्ली के कार्यालय मे बैठने लगी।

नई दिल्ली मे कार्यालय पहुच जानेपर मालतीदेवी का कार्य बडी तीव्र गति से आगे बढा। उन्होने थोडे ही दिनो मे धन और ख्याति के क्षेत्र मे पर्याप्त उन्नति की।

तभी एक दिन लाला किशोरीलाल उनसे बोले, "मालतीदेवी ! देखी आपने इस कार्यालय की करामात ! वहा मालीवाडे के गदे और बदबूदार घर मे बैठी रहती तो आपकी योग्यता का जौहर कैसे खुलता ? वहा तो वे ही छोटे-मोटे क्लाइण्ट आपके हाथ लगते। यहा आते ही आपकी ख्याति केवल दिल्ली के ही क्षेत्र मे नही वरन् भारत-भर मे फैल गई।"

मालतीदेवी ने कृतज्ञतापूर्ण दृष्टि से लाला किशोरीलाल की ओर देखकर कहा, "आपकी मै हृदय से कृतज्ञ हू लाला किशोरीलालजी ! मेरे कार्य की उन्नति मे आपने जो सहयोग प्रदान किया उससे सचमुच मुझे उन्नति करने मे अत्यन्त सफलता मिली। मै आपकी हृदय से आभारी हू।"

लाला किशोरीलालजी बोले, "अब एक बात और कहू आपसे।"

"कहिए।" मालतीदेवी ने लाला किशोरीलाल के चेहरे पर आशापूर्ण नेत्र पसारकर कहा।

"आपका अब मालीवाडे के उस गदे मकान मे रहना मुझे अच्छा नही लगता। आपने जो केस मुझे जिताया है उसके पुरस्कारस्वरूप मैं आपको एक मोटरगाडी देना चाहता हू। परन्तु सोच रहा हूं कि आप मालीवाडे के उस मकान मे उसे कहा खडी करेगी। आप चाहे तो मैं बारहखम्भा रोड पर जो मैंने नई कोठी बनाई है, उसे आपको आपके निवास-स्थान के लिए दे दू।"

लाला किशोरीलाल की बात सुनकर मालतीदेवी का मन उनके

प्रति कृतज्ञता से भर उठा। मालतीदेवी के मन मे अपनी मोटरगाडी रखने की आकाक्षा बहुत दिन से थी। वे पुरानी दिल्ली का निवास-स्थान छोड-कर नई दिल्ली मे ही आना चाहती थी। धनाभाव के कारण ही वे ऐसा नही कर पाती थी। परन्तु अब नई दिल्ली के कार्यालय ने उन्हे मोटर-गाडी रखने योग्य बना दिया था।

उन्होने देखा कि आज लाला किशोरीलाल ने उनकी इन दोनो इच्छाओ को फलीभूत करने मे सहयोग प्रदान किया। उनका हृदय पुष्प समान खिल उठा। वे बोली, "लाला किशोरीलालजी! मेरे पास आपके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए शब्द नही है। आप कितने अच्छे है, मैं वर्णन नही कर सकती।"

"तो बात निश्चित रही।" लाला किशोरीलाल ने कहा।

"निश्चित, पूर्ण रूप से निश्चित!" मालतीदेवी बोली।

लाला किशोरीलाल चले गए तो मालतीदेवी अकेले मे आज इठला उठी। उन्होने अनुभव किया कि उनके जीवन मे इस समय नई चेतना ने प्रवेश किया। उनके जीवन का नया मार्ग उन्मुक्त हुआ। वे अब जीवन के उच्चतम शिखर पर पहुच सकेगी।

उन्होने सोचा कि आज जब वे अपनी सफलता की बात प्रोफेसर प्रकाश से जाकर कहेगी तो उन्हे असीम आनन्द की प्राप्ति होगी। इन साधनो की वृद्धि से उनके जीवन को भी नई दिशा मिलेगी। उनकी योग्यता को भी चार चाद लग जाएगे। उनकी अपनी मित्र-मडली मे उनका सम्मान बढेगा।

आनन्द की इस कल्पना को मन मे लेकर आज मालती ने घर मे प्रवेश किया तो देखा कि प्रोफेसर प्रकाश अपने छोटे-से मुनवा सुबोध के साथ खेल रहे थे। उसे अपनी पीठ पर बिठलाकर वे उसका घोडा बने हुए थे। सुबोध उनके ऊपर सवार होकर जीवन का आनन्द लूट रहा था।

प्रोफेसर प्रकाश का लडका अब चार वर्ष का हो गया था। अब वह बडी-बडी बाते बनाने लगा था और प्रकाश बाबू का तो यह एक खिलौना था जिसे लेकर खेलते समय वे अपने हृदय की व्यापक पीडा को भूल जाते थे। उन्होने अब इसीके रूप मे मालतीदेवी के रूप को देखना प्रारम्भ कर

दिया था। वे इसीको अपनी छाती से लगाकर आनन्द की लहरो मे तैरने लगते थे।

उनकी दृष्टि तभी कमरे के द्वार पर गई तो उन्होने देखा कि मालती-देवी खडी मुस्करा रही थी, उन्हे इस प्रकार सुबोध का घोडा बना देखकर।

मालतीदेवी बोली, "पिता-पुत्र का खेल चल रहा है ?"

प्रोफेसर प्रकाश मुस्कराकर बोले, "अपने जीवन का खेल समाप्त करके मालती, अब इस सुबोध के जीवन का खेल सम्पन्न कर रहा हू। आखिर कोई तो सहारा चाहिए ही जीवन चलाने के लिए। तुम्हे विधाता ने धन दिया और धन ने उन सुखो का मार्ग उन्मुक्त किया जिनसे तुम्हारी आत्मा को शांति प्राप्त होती है। मुझे परमात्मा ने यह खिलौना दे दिया। मैं इसीमे अपनी आत्मा का सुख खोजने का प्रयास कर रहा हू। मेरा सुबोध ही मेरी आत्मा को शाति पहुचाएगा।"

प्रोफेसर प्रकाश की बाते सुनकर मालतीदेवी का मन कुछ बुझ-सा गया। नई मोटरगाडी और नये बगले की प्रसन्नतापूर्ण सूचनाए उनके मस्तिष्क मे ही घुमडकर रह गई।

वे खडी-खडी दो-चार घडी सोचती रही कि प्रोफेसर प्रकाश से मोटर-गाडी और बगले के विषय मे कुछ कहे या नही, परन्तु वे रोक न सकी अपने उद्वेग को। आज की अपनी सफलता और उससे प्राप्त प्रसन्नता को वे प्रोफेसर प्रकाश पर प्रकट किए बिना न रह सकी।

वे सामने पडी कुर्सी पर बैठ गई और बोली, "प्रकाश बाबू! आज मैंने लाला किशोरीलाल को उनके केस की सफलता का समाचार दिया तो उनके आनद का पारावार न रहा। पूरा पच्चीस लाख का केस था यह। लोअर कोर्ट मे वे हार चुके थे और उन्हे इस केस को जीतने की कोई आशा नही रही थी। मैंने हाईकोर्ट मे अपील कराके उनका यह केस जितवा दिया। इसे सुनकर उनके पिताजी को भी असीम प्रसन्नता हुई। इसकी प्रसन्नता मे उन्होने मुझे एक नई मोटरगाड़ी देने का वायदा किया है और साथ ही उन्होंने अपनी बारह खम्भा रोड की नई बनी कोठी भी हमे रहने के लिए देने का वचन दिया है। यह कोठी कैसी रहेगी हम लोगो के रहने

के लिए ? क्या राय है आपकी ? उसीमे चलकर क्यो न रहा जाए ?"

मालतीदेवी की बात सुनकर प्रोफेसर प्रकाश का माथा ठनक उठा। उनके नेत्रो के सम्मुख अधकार छा गया। उन्हे लगा कि जो बची-खुची आशा की किरणे उनके जीवन मे थी वे भी अब अस्ताचल के गर्त मे विलीन हुआ चाहती है। उन्होने महान निराशा-भरी दृष्टि से मालतीदेवी के चेहरे पर देखकर कहा, "मैं तुम्हारी उन्नति की हृदय से प्रशसा करता हू मालतीदेवी ! परन्तु घर का मकान होने पर किराये की कोठीमे जाने की क्या आवश्यकता है ? आफिस आपका नई दिल्ली मे है ही। काम-काज के लिए आनेवाले सज्जनो को वहा पहुचने मे कठिनाई होती ही नही होगी।"

परन्तु मालतीदेवी कोठी मे रहने के सुख को तिलाजलि नही दे सकती थी। जब विधाता ने उन्हे मालीवाडे के इस सडे-गले वातावरण से निकल-कर नई दिल्ली की कोठी मे रहने का सौभाग्य प्रदान किया था तो उसे ठुकराना कहा की बुद्धिमत्ता थी। घर आई लक्ष्मी और साधनो को ठुक-राना मालतीदेवी के निकट मूर्खता के अतिरिक्त और कुछ नही था।

वे बोली, "यहा कार खडी करने की सुविधा नही है प्रकाश बाबू ! मैं समझ नही सकी कि आपको वहा चलकर रहने मे आपत्ति का क्या कारण है ? आपको इस मालीवाडे के सडे मकान का आखिर इतना मोह क्यो है? क्या आप अपने जीवन मे कतई परिवर्तन नही लाना चाहते ?"

प्रकाश बाबू गम्भीरतापूर्वक बोले, "मालतीदेवी ! मैं अपने साधनों की सीमा लाघकर अपने जीवन का मार्ग नही बदल सकता। जो भूल प्रकाश एक बार जीवन मे कर चुका उसे अपने बच्चे सुबोध के जीवन मे उतार देने के लिए मैं तैयार नही हू। मै ऐसा कदापि नही करूगा। तुम स्वतन्त्रतापूर्वक नई दिल्ली की कोठी मे जाकर रह सकती हो। मैं तुम्हारे मार्ग मे कोई बाधा उपस्थित नही करूगा।"

प्रोफेसर प्रकाश का इतना स्पष्ट उत्तर सुनकर मालतीदेवी को आश्चर्य हुआ। वे समझ ही न पाई कि क्या यह सचमुच वही प्रकाश बाबू है जिन्होने अपनी इच्छा न रहने पर भी आज तक कभी मालतीदेवी की इच्छा को नही ठुकराया, जिन्होने मालतीदेवी की किसी बात के लिए

कभी आज तक 'ना' शब्द का प्रयोग नही किया था।

मालतीदेवी निराश मन से दूसरे कमरे मे चली गई। आज रात-भर उनका मन अशात ही बना रहा। वे बहुत सवेरे तक निश्चय न कर सकी कि उन्हे क्या करना चाहिए। उनका मन बहुत ही उद्विग्न हो उठा था।

दूसरे दिन कोर्ट से लौटकर मालतीदेवी अपने कार्यालय मे पहुची तो नई मोटरगाडी उनके कार्यालय के नीचे खडी थी। नई मोटरगाडी को देखकर जैसे ज्योति उतर आई उनके नेत्रो मे। उन्होने इस मोटरगाडी को इसके चारो ओर घूमकर देखा।

वे कार्यालय की सीढियो पर चढकर ऊपर पहुची तो लाला किशोरीलाल वही बैठे मिले। मालतीदेवी को आते देखकर वे खडे होकर बोले, "मालतीदेवी! कार देखी आपने! नीचे सडक पर खडी है, आपके कार्यालय के जीने के सम्मुख।"

मालतीदेवी मुस्कराकर बोली, "बहुत सुन्दर है। मै ऐसी ही गाडी लेना चाहती थी लाला किशोरीलालजी! आपने ठीक मेरी रुचि के अनुरूप ही मोटरगाडी खरीदी है। इससे अधिक बडी गाडी भी मुझे पसन्द नही है।"

लाला किशोरीलाल प्रसन्न मुद्रा मे बोले, "कोठी भी आपको पसन्द आएगी। आज मैने स्वय जाकर उसकी सफाई कराई है। आप चाहे तो कल उसमे शिफ्ट कर सकती है। रग-रोगन होकर कोठी तैयार होगई है।"

"कल ही!" आश्चर्यचकित होकर मालतीदेवी ने कहा।

"और क्या? अब उसमे कोई कसर शेष नही रही। उसका सब कार्य समाप्त हो गया।"

मालतीदेवी के हर्ष का इस समय पारावार नही था। उन्होने निश्चय कर लिया कि यदि प्रकाश बाबू उनका साथ नही देगे तो न दे। वे जीवन मे आए इस अवसर की उपेक्षा नही कर सकती।

दूसरे दिन मालतीदेवी मालीवाडे का मकान छोडकर नई दिल्ली की कोठी मे रहने के लिए चल दी।

चलते समय उन्होने सुबोध की ओर अपने दोनो हाथ फैलाकर कहा, "सुबोध! मेरे साथ नही चलोगे क्या तुम?"

सुबोध प्रोफेसर प्रकाश की गर्दन से लिपटकर दृढतापूर्वक बोला, "नही।"

प्रोफेसर प्रकाश सुबोध का मुह चूमकर अश्रुपूर्ण नेत्रो से बोले, "सुबोध! तुम्हारी माताजी आज हमे छोडकर जा रही है बेटा! प्रणाम करो इन्हे। भगवान शायद कभी जीवन मे इन्हे इतनी सद्बुद्धि प्रदान करे कि ये फिर वापस हमारे पास लौट आए।"

सुबोध ने मालतीदेवी की ओर देखकर कहा, "आप हमे छोडकर कहा जा रही है मम्मी ?"

मालतीदेवी का मन सुबोध की सरल बात सुनकर तनिक भारी हो उठा। उन्होने एक लम्बा सास लेकर साहस बटोरा और चुपके से जीने की पैडियो से नीचे उतर गई।

प्रकाश बाबू सुबोध को गोद मे लिए-लिए मालतीदेवी के पीछे-पीछे जीने से नीचे उतरे और मोती बाजार से बाहर चादनी चौक मे खडी उनकी कार तक उन्हे पहुचाने गए।

मालतीदेवी कार मे बैठ गई तो प्रोफेसर प्रकाश अपनी आखे अपने कुर्ते की आस्तीन से पोछकर बोले, "मालती! कभी भूले-भटके अपने व्यस्त जीवन मे तुम्हे प्रकाश की याद आ जाए तो मिलने के लिए आ जाया करना।"

नेत्र मालतीदेवी के भी इस समय सजल हो उठे थे। वे बोली, "आपको भी कभी मालती की याद आए तो आप नही आएगे क्या ?"

प्रोफेसर प्रकाश बलात होठो पर मुस्कराहट लाकर बोले, "प्रकाश को तुम हर समय याद रहोगी मालती! प्रकाश मालती को कभी जीवन मे भुला नही सकता। परन्तु वहा आना मेरे लिए सम्भव न होगा। फिर भी यदि आना ही पडेगा कभी और मै समझूगा कि तुम्हे मेरी आवश्यकता है तो मै अवश्य आऊगा मालती। मुझे आना ही होगा उस समय।"

गाडी चलने को हुई तो प्रोफेसर प्रकाश की गोद से सुबोध बोला, "मम्मी जी प्रणाम !"

मालतीदेवी के कानो मे सुबोध के शब्द पडे तो उनका दिल धड-धड कर उठा। मन मे आया कि वे अपनी जिद छोडकर अपने पति और

बच्चे मे दूर न जाए परन्तु तुरन्त ही बारहखम्भे की वह कोठी उनकी आखो के सम्मुख आ गई। उन्होने अपने नेत्र बन्द कर लिए और ड्राइवर से कहा, "ड्राइवर गाडी चलाओ।"

मालतीदेवी की गाडी स्टार्ट होकर चल पडी। प्रोफेसर प्रकाश सुबोध को अपनी छाती से चिपकाए चादनी चौक बाजार की पटरी पर खडे रह गए। वे कई क्षण स्तब्ध-मे खडे रहे, सज्ञाविहीन-से। उन्हे लग रहा था कि उनकी आत्मा उनके शरीर के अन्दर से निकलकर चली गई। उनके नेत्रो का जल-प्रवाह जो एक बार बडे वेग से छलक पडा था, एकदम शात हो गया। उन्होने एक लम्बा सास लिया।

तभी सुबोध ने कहा, "पापाजी! मम्मी हमे छोडकर चली गई। अब चलो, घर चले।"

प्रोफेसर प्रकाश ने सुबोध के सरल मुख पर देखकर कहा, "चलो बेटा" और वे बाजार पार करके सीधे अपने घर लौट आए। उनके पैर लडखडा रहे थे इस समय और सारा बदन स्वेदपूर्ण हो उठा था।

उन्होने घर मे प्रवेश किया तो पडित रुआसा होकर बोला, "क्या बहूजी चली गई बाबूजी?"

प्रोफेसर प्रकाश ने भारी मन से कहा, "चली गई पडित!"

"आप रोक नही सके उन्हे बाबूजी?"

"उन्हे विधाता भी नही रोक सकता था इस समय पडित! मैं क्या रोकता उन्हे? उनका इकलौता लाल सुबोध भी नही रोक सका उन्हे।"

पडित भारी मन से बोला, "बहूजी बहुत निष्ठुर निकली बाबूजी! आप जैसे देवता पति को प्राप्त करके भी और जाने क्या प्राप्त करना शेष रह गया बहूजी को, जिसके पीछे अधी होकर दौडी चली जा रही है वे। बहूजी आपको छोडकर सुखी नही रह सकती बाबूजी! उन्हे अपनी करनी पर किसी दिन पछताना होगा।"

प्रोफेसर प्रकाश पडित के शोकग्रस्त चेहरे की ओर देखकर बोले, "परमात्मा उन्हे सुखी बनाए पडित! मेरी यही मनोकामना है उनके लिए।"

पडित ने गर्दन हिलाकर कहा, "नही बाबूजी! बहूजी ने अधर्म की बात की है यह! भगवान उन्हे कभी क्षमा नही कर सकते। उन्हे अपनी

करनी का दण्ड भगवान अवश्य देगे।"

पडित की सरल और पीडायुक्त बाते सुनकर प्रोफेसर प्रकाश का बदन हिल उठा। वे करुणार्द्र वाणी मे बोले, "पडित, ऐसा न कहो मालती के लिए। विधाता उसे कभी कोई कष्ट न दे, मेरी यही मनोकामना है। मैं हृदय से चाहता हू कि वह सुखी रहे।"

प्रोफेसर प्रकाश सुबोध को गोद मे लिए-लिए ही जीने से ऊपर चढने लगे तो उनके पैर भारी हो उठे। जाने कितनी देर मे वे धीरे-धीरे ऊपर की पौडी पर पहुचे और अपने कमरे तक पहुचना उनके लिए कठिन हो गया।

रात्रि को पडित ने भोजन तैयार करके सूचना दी तो बोले, "पडित! आज भूख नही है मुझे। तुम सुबोध का दूध और एक पराठा ले आओ।"

सुबोध बोला, "पापाजी! मैं तो आपके ही साथ खाना खाऊगा।"

प्रोफेसर प्रकाश ने सुबोध को अपनी छाती से लगाकर कहा, "अच्छा, पडिता खाना लगा लाओ।"

पडित थाली मे भोजन परसकर ले आया। प्रोफेसर प्रकाश ने कौर तोडकर सुबोध के मुह की ओर किया तो वह बोला, "पहले आप खाओ पापाजी!"

प्रोफेसर प्रकाश ने चुपके से कौर अपने मुह मे रख लिया और फिर दूसरा कौर सुबोध के मुह मे रखकर उसे दूध का घूट भराया। धीरे-धीरे उन्होने सुबोध को दूध पिला दिया, परन्तु उन्होने अपने मुह मे जो कौर रखा था उसे वे चबा न सके, निगल न सके। वह ज्यो का त्यो उनके मुह मे बना रहा।

पडित ज्यो का त्यो थाल उठाकर वापस ले गया। उसके मन मे भी आज अपार कष्ट था।

प्रोफेसर प्रकाश ने सुबोध को पलग पर लिटाया और दुलराकर सुला दिया। वे सब काम वह चार वर्ष से नित्य करते आ रहे थे। सुबोध को दूध पिलाना, उसे नहलाना-धुलाना और वस्त्र बदलकर, बालो मे तेल डालकर कघा करना, उसे गोद मे लेकर गाधी मैदान मे घुमाने के लिए ले जाना, यह सब प्रोफेसर साहब स्वय करते थे। मालतीदेवी को इस ओर

ध्यान देने का अवकाश नही मिला कभी। परन्तु आज जैसे उनका बदन यह सब करने मे थकान से चूर हो गया। उनका माथा दुख रहा था इस समय और हृदय व्याकुलता से टुकडे-टुकडे हुआ जा रहा था।

प्रोफेसर प्रकाश अपने ड्राइग रूम मे आए तो उनकी दृष्टि सामने लगे मालतीदेवी के चित्र पर पडी। उसके सम्मुख खडे होकर वे उसे देखने लगे और देखते-देखते ही उनकी आखो मे जल भर आया। वे एकात मे अकेले ही बोले, 'मालती ! तुमने यह सब क्या किया ? मेरी दुनिया को उजाडकर आखिर क्या मिला तुम्हे ? जिस धन और वैभव के पीछे तुम दीवानी बनी हो क्या वे वास्तव मे तुम्हारी आत्मा को शाति प्रदान कर सकेगे ? क्या तुम अपने को सुखी अनुभव कर सकोगी उस कोठी मे रह कर ? क्या तुम्हे मेरी और अपने सुबोध की कभी याद नही आएगी ?' कहते-कहते प्रोफेसर प्रकाश गम्भीर वाणी मे बोले, 'मालती, तुम्हे इतना रूप देकर विधाता ने बडी भूल की। इतना रूप दिया था तो उसके अन्दर कोमल हृदय की स्थापना भी तो करनी थी उसे। अपनी सारी कला-कुशलता पर विधाता ने स्वय अपने हाथ से पानी फेर दिया। अपने सौंदर्य की प्रतिमा को विधाता ने स्वय अपने हाथ से अपूर्ण कर दिया। मालती ! क्या तुम सचमुच इतनी पाषण हृदय हो ? मेरा मन नही कहता कि तुम इतनी पाषाण हृदय हो सकती हो। तुम्हारे जीवन मे अचानक धन ने प्रवेश करके तुम्हारे हृदय को पाषाण बना दिया। दिल्ली की रंगीनियो ने तुम्हारी दृष्टि बदल दी। वैभव के चमत्कार ने तुम्हारे मानस को कुठित कर दिया। तुम्हे विनाश के पथ पर ले जाकर खडा कर दिया। तुम्हारे वेग को रोकने की सामर्थ्य मुझमे नही हो सकी मालती ! मैं रोक नही सका तुम्हे।'

प्रोफेसर प्रकाश निराश होकर कुर्सी पर बैठ गए और बहुत देर तक एकटक मालतीदेवी के चित्र को देखते रहे। वे अन्त में उसी निराशा को अपने मन में लिए सुबोध के पास पलग पर जाकर लेट गए। कुछ देर सिसकिया-सीं लेते रहे और उनकी नाडी की गति बढती रही, उनका बदन गर्म होता गया।

उनकी दृष्टि अपने पलग के पास बिछे मालतीदेवी के पलग पर गई तो उनके हृदय मे विद्युत-सी कौंध गई। उनका हृदय टुकडे-टुकडे हो गया।

उनके माथे मे बहुत तीव्र पीडा होने लगी थी।

वे आखे बन्द करके लेटे रहे परन्तु अपने व्याकुल चित्त को शाति प्रदान न कर सके। उनके हृदय की धडकन बराबर बढती जा रही थी— उनके चित्त की व्याकुलता बढती जा रही थी। उनके नेत्र लाल हो उठे थे। उनके मन की अशाति ने उग्ररूप धारण कर लिया था। उनका सिर चकरा रहा था।

प्रोफेसर प्रकाश उठकर बैठे हो गए और अपने ड्राइगरूम की ओर बढना चाहा परन्तु एक पग भी आगे न बढ सके। उनके पैर लडखडा उठे और वे अस्वस्थ-से हो पलग पर गिर पडे। उन्हे अपनी सुध-बुध ही न रही।

११

प्रोफेसर प्रकाश रात-भर सो नही सके। सुबह तक उनका बदन तीव्र ज्वर मे जलने लगा था। वे अपने पलग पर पडे-पडे बौखला रहे थे।

नित्य नियम से प्रातःकाल चार बजे उठनेवाले प्रोफेसर प्रकाश आज जब सुबह सात बजे तक भी न उठे और पडित ने दूध गर्म करके नाश्ता तैयार कर लिया तो वह स्वय दबे पाव उनके कमरे मे उन्हे देखने के लिए गया।

पडित ने धीरे से कहा, "बाबूजी!"

प्रोफेसर प्रकाश ने पडित के शब्द सुनकर बडी ही दीन दृष्टि से पडित की ओर देखा। उनके नेत्र लाल अगारो के समान जल रहे थे। उनकी दशा बहुत खराब थी।

पडित ने भयभीत होकर, उनका बदन छूकर देखा तो वह भभक रहा था। यह देखकर पडित घबरा उठा। उसकी कुछ समझ मे न आया तो वह दौडा हुआ सीधा किशोर भाई के घर चला गया।

किशोर भाई ने पडित की यह दशा देखकर आतुरतापूर्वक पूछा, "अरे क्या बात है पंडित?"

"बाबूजी को बहुत तीव्र ज्वर है भैया, आप शीघ्रता करे चलने मे।"

"प्रकाश को ?" किशोर भाई ने घबराकर पूछा।

"हा भैया।"

"तुम चलो मै अभी आया।" किशोर भाई बोले।

किशोर भाई तुरन्त खूटी से कुर्ता उतारते हुए चप्पल पैरो मे डालकर प्रोफेसर प्रकाश के घर की ओर लपके तो विमला देवी ने कहा, "कहा जा रहे है आप इतनी जल्दी, नाश्ता करते जाते थोडा।"

किशोर भाई परेशानी की दशा मे बोले, "प्रकाश को बहुत तीव्र ज्वर हो गया है विमला! पडित कह गया है अभी।"

"देवरजी को!" आश्चर्यचकित होकर विमला देवी बोली, "परन्तु कल सध्या को जब यहा आए थे तो बिलकुल स्वस्थ थे वे। घटो यहा बैठे माताजी से बाते करते रहे थे। रात-रात मे ऐसा तीव्र ज्वर कैसे हो गया उन्हे ?"

किशोर भाई ने कुछ सुना नही। वे कुर्ते को गले मे डालकर उसकी बाहो मे हाथ डालते हुए घर से बाहर हो गए।

किशोर भाई सीधे प्रोफेसर प्रकाश के यहा न जाकर डाक्टर के पास गए और उन्हे साथ लेकर प्रोफेसर प्रकाश के घर पहुचे।

किशोर भाई ने जाकर देखा तो पडित सुबोध को अपनी गोद मे लिए खडा था और प्रोफेसर प्रकाश तीव्र ज्वर मे बौखला रहे थे।

डाक्टर ने प्रोफेसर प्रकाश को सावधानी के साथ देखा, और इजेक्शन लगाकर बोला, "इनके माथे पर आइस बैग रखो किशोर भाई और मेरे साथ किसी आदमी को भेज दो तो वह दवा ले आएगा। घबराने की कोई बात नही है। इन्हे कोई मानसिक आघात पहुचा है। उसीसे ज्वर हो गया है। आइस बैग से माथा ठडा रखना नितान्त आवश्यक है। उसमे लापरवाही न करना।"

पडित सुबोध को गोद मे लिए-लिए ही डाक्टर के साथ दवा लेने चला गया।

किशोर भाई ने प्रोफेसर प्रकाश के मस्तक पर हाथ रखकर देखा तो वह अगार के समान जल रहा था। यह देखकर किशोर भाई घबरा उठे।

उन्होने मालती-मालती कहकर कई बार पुकारा और एक क्षण मे ही सारा घर छान मारा, परन्तु मालती वहा कही नही मिली ।

किशोर भाई के हृदय पर गहरा आघात हुआ । उन्होने मन ही मन कहा, 'मालती, का यह दिखावटी रूप कितना निष्ठुर निकला । मेरे मित्रके शात और सरल जीवन मे इसने दहकती चिगारी के समान प्रवेश किया । प्रकाश के जीवन को इसने अपने रूप की भट्ठी मे झोककर भस्म कर दिया ।'

किशोर भाई दौडकर अपने घर गए और माताजी से बोले, "माताजी ! प्रकाश को बहुत तीव्र ज्वर है । जरा आइस बैग तो दे दो मुझे । और मै विमला को भी अपने साथ ले जा रहा हू । प्रकाश इतने तीव्र ज्वर मे पडा है और मालती का पता नही । पता नही कहा चली गई है वह । लापरवाही की हद कर दी उसने ।"

"मालती नही है ? यह क्या कह रहे हो किशोर ! वह कहा चली गई मेरे बेटे को ज्वर मे जलता छोडकर ?"

किशोर भाई बोले, "शीघ्रता करो माताजी ! मुझे आइस बैग ला दो आप । मेरा दिल घबरा रहा है । प्रकाश को बहुत तीव्र ज्वर है । वह अचेत पडा है ।"

किशोर की माताजी ने आइस बैग लाकर किशोर भाई को दे दिया । उन्हे महान कष्ट पहुचा प्रकाश के ज्वर को सुनकर ।

किशोर भाई विमला को साथ लेकर प्रोफेसर प्रकाश के घर की ओर चल दिए । रास्ते से किशोर भाई ने पाच सेर पानी की बर्फ लेकर अपने थैले मे डाल ली और तीव्र गति से चलकर दोनो प्रकाश के घर पहुच गए ।

विमलादेवी ने अपने देवर प्रकाश की यह दशा देखी तो उनकी आखें भर आई ।

किशोर भाई ने बर्फ कूटकर आइस बैग मे भरी और आइस बैग विमलादेवी के हाथ मे देकर बोले, "विमला ! तुम इसे प्रकाश के माथे पर रखो तब तक मै डाक्टर के यहा से दवा लेकर आता हू ।"

किशोर भाई जीने से उतरे तो सामने से उन्हे दीखा, पडित लपका हुआ चला आ रहा था ।

किशोर भाई ने दवा की शीशी पडित के हाथ से ले ली। एक सुघाने की दवा थी, एक माथे, हथेलियो और तलुओ पर मलने की। तीसरी दवा पिलाने की थी।

किशोर भाई ने सर्वप्रथम सुघाने की दवा सुघाई तो प्रोफेसर प्रकाश ने दो-तीन बार नेत्र खोले परन्तु वे देख नही सके कुछ। उनके नेत्र फिर बन्द हो गए।

किशोर भाई ने फिर मस्तक, तलुओ और हथेलियो पर दवा लगाई और फिर एक प्याली मे पीने की दवा उडेलकर एक चम्मच से उसे धीरे-धीरे प्रोफेसर प्रकाश के मुख मे डाला।

विमलादेवी प्रोफेसर प्रकाशके पास उनके मस्तक पर आइस बैग रखकर मस्तक को ठडा कर रही थी।

किशोर भाई हर दस मिनट पश्चात् प्रोफेसर प्रकाश की बगल मे थर्मामीटर लगाकर उनका ज्वर देख रहे थे।

लगभग दो घटे पश्चात् किशोर भाई ने देखा कि थर्मामीटर का पारा कुछ नीचे गिरा। उन्हे यह देखकर प्रसन्नता हुई और विमलादेवी को थर्मामीटर दिखलाकर बोले, "देखो विमला ! अब ज्वर शात होने लगा है। पारा एक सौ चार डिग्री से एक सौ तीन डिग्री पर आ गया।"

किशोर भाई ने ठीक समय पर प्रोफेसर प्रकाश को दूसरी खुराक दी, वह सुघाने की दवा भी सुघाई और मस्तक तथा तलुओ और हथेलियो पर दवाई लगाई। सूघने की दवा से प्रोफेसर प्रकाश ने एक बार फिर नेत्र खोले, परन्तु यह नेत्र खोलना भी स्थायी न रह सका।

प्रोफेसर प्रकाश का ज्वर धीरे-धीरे और कम होकर एक सौ दो और फिर एक सौ एक डिग्री पर आ गया परन्तु चेतना अभी तक नही लौटी। वे अचेतन अवस्था मे ही पडे थे और कभी-कभी जो बडबडाते थे वह कुछ समझ मे नही आता था।

यह देखकर विमलादेवी का हृदय व्याकुल हो उठा। किशोर भाई बोले, "विमला ! मैं अभी आता हूं। डाक्टर साहब को प्रकाश की दशा बतला के इन्हे चेतन अवस्था मे लाने की कोई दवा लाता हूं। इस प्रकार अचेतन बना रहना उचित नही है।"

यह कहकर किशोर भाई डाक्टर की ओर चले गए।

विमलादेवी का हृदय अपने देवर की यह दशा देखकर विदीर्ण हुआ जा रहा था। वे अपने को रोक न सकी। अपने इष्टदेव गिरिधर नागर की स्मृति करके उनके कठ से मधुर सगीत फूट पडा। वे व्याकुल होकर गा उठी :

"मीरा के प्रभु गिरिधर नागर
दूसरो न कोई। ."

विमलादेवी अपनी धुन मे गाती जा रही थी। उनके सगीत का मधुर स्वर प्रोफेसर प्रकाश के कानो मे पडा तो उन्हे लगा कि मानो कोई उनके तप्त बदन पर शीतल जल की वर्षा कर रहा था।

गाते-गाते विमलादेवी ने देखा कि प्रोफेसर प्रकाश ने धीरे से अपने नेत्र खोले और उन्हे विमला के मुख पर फैलाया। फिर धीरे से उन्होंने नेत्र बन्द कर लिए।

विमलादेवी अपने नेत्र बन्द करके बराबर मधुर कठ से गाए जा रही थी

"मीरा के प्रभु गिरिधर नागर
दूसरो न कोई। "

विमलादेवी के व्याकुल हृदय से जो वाणी प्रस्फुटित हुई उसने प्रोफेसर प्रकाश की हृत्तत्री को झकृत कर दिया। उनकी चेतना लौट आई।

प्रोफेसर प्रकाश ने नेत्र खोले तो अपने सिरहाने प्रेममयी भाभी को बैठे हुए पाया। उनके नेत्र मुदे हुए थे। इधर प्रकाश के मानस की सारी जलन जाने कहा चली गई। उनका जोर से धडकता हुआ हृदय अपनी साधारण गति पर चलने लगा।

रात्रि मे सोचते-सोचते जब वे निराशा के अधकार मे जा गिरे थे तो उन्हे लगा था कि अब उनका ससार मे कोई नही रहा। मालतीदवी उन्हें छोडकर चली गई। वे अब नही लौटेगी तो वे किसके सहारे से जी सकेंगे।

प्रोफेसर प्रकाश भाभी के नेत्र बन्द किए तन्मय होकर गाते हुए मुख-छवि को देखते रहे । उनके नेत्रो को भाभी के रूप ने शाति प्रदान की।

उनके कर्ण-द्वारो से प्रवेश कर भाभी के मधुर सगीत ने उनके हृदय की जलन को दूर किया । उन्हे लगा कि उनकी आत्मा उनके बदन मे लौट आई । उन्हे जीने का सहारा मिल गया ।

वे धीरे से बोले, "भाभी !"

'भाभी' शब्द सुनकर विमलादेवी ने नेत्र खोले और देखा कि प्रोफेसर प्रकाश के नेत्र खुले हुए थे । उनकी चेतना लौट आई थी ।

विमलादेवी आशापूर्ण स्वर मे बोली, "देवरजी !"

"हा भाभी !" प्रोफेसर प्रकाश ने कहा और करुण नेत्रो से उनकी ओर देखकर बोले, "भाभी, गाना बन्द न करो । गाए जाओ भाभी ! आपके संगीत ने मेरे बदन में सुलगनेवाली ज्वाला को शात कर दिया । मेरे मस्तिष्क को सात्वना प्रदान की हैं आपके मधुर स्वर ने ।"

विमलादेवी ने फिर आशा और उमग के साथ गाना प्रारम्भ कर दिया । उनके चेहरे पर प्रसन्नता नाच उठी । उनका हृदय आशा और उमग से भर उठा ।

प्रोफेसर प्रकाश तनिक सुधरकर लेट गए । उनका एक हाथ अनायास ही भाभी के पैर पर जा पडा और उन्होने श्रद्धा के साथ भाभी के पैर को पकड लिया ।

विमलादेवी गाती रही और प्रोफेसर प्रकाश उनके मधुर सगीत को सुनकर अपने हृदय को सात्वना देते रहे, अपने दिल की जलन को शात करते रहे ।

किशोर भाई थोड़ी देर मे एक थैले मे कुछ मौसमिया तथा डाक्टर से दवा लेकर आए तो द्वार मे प्रवेश करते ही विमलादेवी के मधुर सगीत का स्वर उनके कानों मे पडा ।

वे ऊपर आए तो उन्होने देखा कि विमलादेवी गा रही थी और प्रकाश शातिपूर्वक उनका मधुर सगीत सुन रहा था ।

किशोर भाई ने दबे पैर कमरे मे प्रवेश किया । यह देखकर कि प्रकाश सचेत हो गया उनके उद्विग्न मन को महान शाति मिली । उनका हृदय हर्ष से खिल उठा ।

थोड़ी देर मे जब विमलादेवी ने गाना बन्द किया तो किशोर

भाई मुस्कराकर बोले, "विमला ! तुम्हारे सगीत ने डाक्टर की सब ओषधियो को विफल कर दिया।"

"आपने सच कहा भैया ! भाभी का मधुर स्वर तप्त से तप्त हृदय को शीतलता प्रदान करने की क्षमता अपने अन्दर रखता है। मेरे हृदय की जलन को किसी डाक्टर की कोई ओषधि शात नही कर सकती थी।" गम्भीर वाणी मे प्रोफेसर प्रकाश ने कहा।

प्रोफेसर प्रकाश को बाते करते सुनकर पडित का मन भी कुछ ठीक हुआ। वह सुबह से बहुत घबराया हुआ था।

पडित सुबोध को अपनी छाती से चिपकाए इधर से उधर घूम रहा था। आज पडित के लाख प्रयास करने पर भी उसने दूध नही पिया था।

पडित कमरे मे प्रवेश करके बोला, "बाबू ! कैसा जी है अब आपका ?"

प्रोफेसर प्रकाश की दृष्टि पडित की ओर गई तो उसकी छाती से चिपके सुबोध को उन्होने देखा। वे बोले "पडित, मेरा जी ठीक है अब। ला, सुबोध को मुझे दे और जल्दी से जाकर इसका दूध तो गर्म कर ला। भाभी, आज दूध भी नही पिया होगा सुबोध ने। यह मेरे अतिरिक्त अन्य किसी-के हाथ से दूध नही पीता।"

"सचमुच नही पिया बाबूजी, मैंने लाख प्रयास किया परन्तु इसने पिया ही नही। मेरे कन्धे से चिपका यह बराबर आपकी ही ओर देख रहा है तब से। मुझसे पूछ रहा था, 'पडित, क्या हो गया मेरे पापाजी को ?' "

प्रोफेसर प्रकाश ने सुबोध को छाती से लगाकर कहा, "सुबोध, तुमने दूध नही पिया ?"

सुबोध मुह बनाकर बोला, "तब फिर आप ऐसे चुप होकर क्यो लेट गए थे ?"

विमलादेवी ने सुबोध की सरल वाणी सुनकर उसे अपनी गोद मे ले लिया और प्यार से बोली, "बेटा, बीमार हो गए तुम्हारे पापाजी। बीमार कोई स्वय नही होता। बीमारी तो कम्बख्त आकर चढ जाती है सिर पर। अपने मुनवा को मै दूध पिलाऊगी। लाओ पडित, दूध लाओ जल्दी से।"

"आप पापाजी को भी दूध पिलाओगी ताईजी ?" सुबोध सरल वाणी मे बोला।

"हा बेटा ! तुम्हारे पापाजी को भी पिलाऊगी। दोनो को दूध पिलाऊगी मै।" विमलादेवी मुस्कराकर बोली।

सुबोध का अपने प्रति स्नेह देखकर प्रोफेसर प्रकाश के नेत्रो मे आसू छलछला आए। वे करुण स्वर मे भाभी की ओर देखकर बोले, "भाभी ! सुबोध का यह सरल स्नेह भी प्राप्त न कर सकी मालती।"

यह सुनकर सुबोध विमलादेवी से बोला, "ताईजी ! मम्मी हमे छोडकर चली गई।"

"छोडकर चली गई ! कहा ?" आश्चर्यचकित होकर किशोर ने पूछा। "मालती कहा चली गई देवरजी ?" विमला ने बात जोडी।

सुबोध बोला, "मोटर मे बैठकर गई मम्मी। मैं नही गया उनके साथ। पापाजी मुझे दूध पिलाते है। वहा कौन पिलाता मुझे दूध ? पापाजी मुझे प्यार करते है, वहा कौन करता मुझे प्यार ?"

तभी पडित दूध लेकर आ गया। प्रोफेसर प्रकाश ने सुबोध को अपनी गोद मे बिठलाकर दूध पिलाया। वे बोले, "किशोर भाई ! यह दस दिन का था तभी से इसे इसी प्रकार दूध पिला रहा हू। इसके माता और पिता के जितने भी काम करने के है उन सबको चार वर्ष से मैं ही कर रहा हू। मालती ने कभी इसके मुह-हाथ धुलाना नही जाना, कभी इसे टट्टी-पेशाब कराना नही जाना, कभी इसे नहलाना-धुलाना नही जाना, कभी इसके वस्त्र बदलना, सिर मे तेल डालना और कघी करना नही जाना। यह सब काम मैं ही करता चला आ रहा हू चार वर्ष से।"

किशोर भाई और विमलादेवी यह सुनकर चकित रह गए। किशोर भाई ने पूछा, "परन्तु मालती चली कहा गई प्रकाश ?"

प्रोफेसर प्रकाश लम्बी सास भरकर बोले, "वह नई दिल्ली, बारहखम्भा रोड पर एक कोठी मे चली गई। उसके पास मोटरगाडी है अब। मालीवाडे के इस सडे मकान में गाडी कहा खड़ी की जा सकती थी? उसके बड़े-बड़े क्लाइण्ट्स् को यहा आने मे कठिनाई होती थी। उसे अब यहा रहते लज्जा प्रतीत होती थी। मालीवाडे के इस मकान मे रहना

अब उसकी शान के विपरीत था ।"

"लज्जा प्रतीत होती है !" आश्चर्यचकित होकर किशोर भाई बोले, "यहा रहना उसकी शान के विपरीत है ? क्या उसकी शान मेरे देवरजी से पृथक् हो गई ?" विमला ने कहा ।

प्रकाश बाबू बोले, "किशोर भाई ! मालतीदेवी ने मुझसे अनुरोध किया था कि मैं भी उसके साथ चलकर उसकी कोठी मे रहू । परन्तु मैं उसकी इस इच्छा की पूर्ति न कर सका । मैंने उसे कल से पूर्व कभी किसी बात के लिए 'ना' नही किया था, परन्तु कल मुझे अपनी असमर्थता देखकर 'ना' करना ही पडा । कल मालतीदेवी को मेरे इस मकान में रहने मे लज्जा प्रतीत हुई तो क्या आनेवाले कल को उसे अपने इस दो-ढाई सौ रुपया मासिक कमानेवाले पति को देखकर लज्जा नही आने लगती ? उस दशा मे मुझे क्या करना होता किशोर भाई ? यही तो, कि मुझे फिर आकर अपने इसी मालीवाडे के गले-सडे घर की शरण लेनी पडती ।"

"तुमने बिलकुल ठीक किया प्रकाश ! मालती माया के मोह मे पगली हो गई है । उसने अपने ही हाथो अपने परिवार के सुख तथा शांति को नष्ट कर दिया । तुमसे पृथक् होकर वह सुखी नही रह सकती प्रकाश ।" गम्भीर वाणी मे किशोर भाई ने कहा ।

किशोर भाई की बात सुनकर प्रोफेसर प्रकाश करुण स्वर में बोले, "किशोर भाई ! ऐसा न कहो । मालती जहा भी रहे सुखी रहे ।" और फिर सुबोध को छाती से लगाकर बोले, "मेरे जीवन का सहारा उसने मुझे दे दिया है । वह सचमुच पगली है जो झूठे सुख की ओर आखे बन्द करके दौड रही है । उसकी यह दौड एक दिन स्वय रुक जाएगी और तब वह अपनी भूल अनुभव करेगी । मुझे पूर्ण विश्वास है कि मालती को एक दिन अपने व्यवहार पर पछताना होगा । किशोर भाई, मालती देवी को एक दिन अवश्य लौटना होगा । दुनिया की इन रगीनियो के रग उसे तभी तक रगीन दिखलाई पडेगे जब तक उनके जीवन मे रगीनी शेष रहेगी । इस समय रूप और जवानी के तूफान मे उडी जा रही है मालती । धन और वैभव उसकी दृष्टि के सम्मुख है । वही उसके आनद की कल्पना बन गया है । इस समय उसे रोका नही जा सकता था ।"

किशोर भाई प्रोफेसर प्रकाश की उदार भावना और अटल विश्वास के सम्मुख नतमस्तक हो गए। वे बोले नही एक शब्द भी, परन्तु मालती को उनका मन क्षमा नही कर सका। उन्होने क्रोधपूर्ण दृष्टि से मालती के चित्र की ओर देखा और फिर घृणा से अपने नेत्र दूसरी ओर को कर लिए। उन्होने फिर उस चित्र की ओर देखना पसद नही किया।

वे विषय बदलकर बोले, "अब कैसी तबीयत है तुम्हारी प्रकाश ?"

"अब ठीक हू किशोर भाई !" प्रोफेसर प्रकाश बोले।

तभी किशोर भाई के पिताजी उनकी माताजी को अपने साथ लेकर यहा आ गए। उन्होंने आगे बढकर प्रोफेसर प्रकाश को पलग पर लेटे देखा। उन्होने किशोर भाई से पूछा, "अब कैसी तबियत है प्रकाश की ?"

"अब ठीक है पिताजी।" किशोर भाई ने उत्तर दिया।

प्रोफेसर प्रकाश ने भी दोनो को प्रणाम किया।

किशोर की माताजी ने प्रकाश के सिरहाने बैठकर स्नेहपूर्ण स्वर मे कहा, "प्रकाश।"

"जी माताजी !" प्रकाश बोला।

"अब तुम्हारा कैसा जी है बेटा।" माताजी ने पूछा।

"अब ठीक है माताजी।" प्रकाश ने उत्तर दिया।

किशोर की माताजी किशोर भाई और विमला देवी से बोली, "तुम दोनों घर जाओ बेटा। मैं खाना बनाकर रसोई मे रख आई हू। खा-पीकर फिर आ जाना। तब तक मैं और तुम्हारे पिताजी यहा प्रकाश के पास बैठते हैं।"

विमलादेवी और किशोर भाई सुबोध को अपने साथ लेकर घर की ओर चल दिए। किशोर की माताजी प्रोफेसर प्रकाश के माथे पर हाथ फेरती रही और किशोर के पिताजी की दृष्टि मालतीदेवी को खोजती रही। उन्हे कही मालती दिखलाई नही दी तो वह सीढियो से उतरकर रसोई-घर मे पडित के पास पहुंच गए और उससे पूछा, "पडित, मालती कहा है ?"

किशोर के पिताजी की बात सुनकर पडित एक क्षण अवाक्-सा उनके सम्मुख खडा रह गया। फिर धीरे-धीरे करुण स्वर मे बोला, 'लालाजी !

बहूजी कल यहा से चली गई।"

"कहा ?" आश्चर्यचकित होकर किशोर भाई के पिताजी ने पूछा।

"नई दिल्ली मे कोठी ले ली है लालाजी ! उन्होने। अब वे वही रहा करेगी।"

किशोर के पिताजी यह सुनकर स्तब्ध रह गए। उनका हृदय विदीर्ण हो गया। उनके मन मे प्रोफेसर प्रकाश के लिए किशोर भाई से किसी भी प्रकार कम स्नेह नही था। उन्होने मन ही मन कहा, 'मैंने आशका गलत नही की थी। प्रकाश की भूल ने इसकी जीवन-शाति इससे छीन ली। इस प्रकार की लडकिया गृहस्थी बसाकर नही चल सकती।'

वे भारी मन लेकर फिर प्रकाश के पास आ गए परतु उन्होने इस विषय मे प्रकाश से कोई बात नही की। प्रकाश की अस्वस्थता का कारण उनके मस्तिष्क मे स्पष्ट हो गया। वे समझ गए कि मालती के इस प्रकार चले जाने से प्रकाश के हृदय और मस्तिष्क पर गहरा आघात पहुचा है।

उन्होंने मन ही मन क्रोध मे भरकर कहा, 'दुष्ट कही की ! मेरे बेटे का जीवन खराब करके चल दी। मेरा वश चलता तो मैं प्रकाश का दूसरा विवाह कर देता, परतु प्रकाश की आदत मै जानता हू। वह एक से, लाख तक भी दूसरी शादी नही करेगा।'

तभी किशोर भाई और विमला देवी भोजन करके लौट आए और किशोर भाई के पिताजी और उनकी माताजी वहा से अपने घर की ओर चल दिए। घर आकर किशोर भाई के पिताजी अपनी पत्नी से बोले, "देख लिया तुमने किशोर की माताजी ! जो मैंने कहा था पूरा हुआ या नही ? वह दुष्टा आखिर प्रकाश को छोडकर चली ही गई। नई दिल्ली मे कोठी किराये पर लेकर ठाठ से रहने लगी। उसे अपने पति और बच्चे से क्या मतलब ?"

"क्या ?" आश्चर्यचकित होकर किशोर की माताजी ने पूछा।

"जी हा ! उसीकी तो यह बीमारी है प्रकाश को। कम्बख्त अपनी भरी-पूरी गृहस्थी को बर्बाद करके घर से चली गई। जाते समय अपने फूल-से बच्चे का भी लोभ नही आया उसे। उसे स्वतत्रता चाहिए। पति और पुत्र दोनो ही उसकी स्वतत्रता मे बाधक थे। वह कैसे रहती इनके पास।"

किशोर के पिताजी व्यग्य और क्रोधपूर्ण स्वर में बोले।

"क्या सचमुच चली गई मालती ?" किशोर भाई की माताजी बोली।

"तब क्या मैं झूठ बोल रहा हू। तुमने देख लिया अब, कि हमारी बहूरानी विमला और मालती मे क्या अतर है ? ये मालती जैसी लडकिया क्या गृहिणी बनने के योग्य होती है ! ये तो आजाद चिडिया होती है। वृक्ष की जिस डाली पर अच्छे फूल लगे देखे, उसीपर फुदककर पहुंच गईं।" कहकर किशोर के पिताजी ने बुरी तरह मुह सिकोड लिया।

१२

प्रोफेसर प्रकाश का स्वास्थ्य दो-तीन दिन मे ठीक हो गया। उनके जीवन का फिर वही कार्यक्रम बन गया। सुबोध को प्रात काल नहला-धुलाकर उसके वस्त्र बदलना, उसे तैयार करके स्कूल भेजना और कालेज जाने की तैयारी करना। यही नित्य का क्रम था उनका।

सध्या को कालेज से लौटने पर अपने पुत्र के साथ बैठकर भोजन करना और फिर उसे सुलाकर अपना अध्ययन प्रारम्भ करना।

प्रोफेसर प्रकाश का डाक्ट्रेट का थीसेस, जो बीच में रुक गया था, उन्होने फिर सभाला और एक वर्ष में ही उसका कार्य समाप्त करके डाक्ट्रेट प्राप्त की। अब प्रो० प्रकाश डा० प्रकाश बन गए।

आज सध्या को प्रोफेसर प्रकाश अपनी डाक्ट्रेट प्राप्त करने की सूचना देने के लिए सुबोध को साथ लेकर किशोर भाई के मकान पर पहुंचे और सूचना दी तो किशोर भाई ने उन्हे अपनी छाती से लगा लिया। वे हर्ष से उछल पडे। उनकी छाती गर्व से फूलकर चौडी हो गई।

किशोर भाई हर्षित मन से बोले, "डा० प्रकाश ! तुम्हारी उपाधि की सूचना प्राप्त कर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई।" और फिर सुबोध को गोद में उठाकर बोले, "बेटा सुबोध, एक दिन तुम भी अपने पापाजी के ही समान डाक्टर बनोगे।"

"बनूगा ताऊजी।" गम्भीरतापूर्वक सुबोध बोला, "अवश्य बनूगा।"

सुबोध का सरल और गम्भीर उत्तर सुनकर उसकी मुख-मुद्रा पर विमलादेवी रीझ उठी। उन्होने उसे किशोर भाई की गोद से अपनी गोद मे लेकर उसका मुख चूम लिया और स्नेहार्द्र भाव से बोली, "अवश्य बनोगे बेटा! तुम अपने पिता से भी बडी उपाधि प्राप्त करोगे।"

डा० प्रकाश अब अपने विभाग के अध्यक्ष बन गए थे। उनका वेतन भी अब चार सौ रुपया मासिक हो गया था और उन्होने एक कार भी खरीद ली थी।

तीन वर्ष पश्चात् डा० प्रकाश ने डी० लिट्० की उपाधि प्राप्त की। इससे उनकी योग्यता को चार चाद लग गए और दो वर्ष पश्चात् ही वे अपने कालेज के प्रिंसिपल हो गए।

डाक्टर प्रकाश का कालेज की एक्ज़ीक्यूटिव कमेटी के सदस्यो मे बडा मान था। उनकी योग्यता, सदाचारिता और ईमानदारी की सभी पर छाप थी। उन्हे गर्व था कि उनकी सस्था का प्रिंसिपल इतना योग्य, सदाचारी और ईमानदार है।

डा० प्रकाश के प्रति उनके कालेज के विद्यार्थी भी बडा आदर-भाव रखते थे। डा० प्रकाश बच्चो मे मिलकर इस आयु मे भी अपने को बच्चा ही समझते थे। वे अपने कालेज की फुटबाल टीम मे स्वय भी खेलते थे और उन्हे फील्ड मे उतरते देखकर बच्चे हर्ष से खिल उठते थे। उनका साहस बढ जाता था।

सध्या को डा० प्रकाश घर आए और कपडे उतारकर भोजन करने बैठे तो पडित ने सूचना दी कि आज किशोर भाई के घर कन्या ने जन्म लिया है।

यह सुनकर डा० प्रकाश को इतनी प्रसन्नता हुई कि वे भोजन करना ही भूल गए और सुबोध से बोले, "सुबोध! जल्दी से भोजन कर लो, फिर तुम्हे एक छोटी-सी मुन्नी दिखलाकर लाएगे।"

"ताऊजी की मुन्नी पापाजी?" सुबोध ने पूछा।

डा० प्रकाश हसकर बोले, "हा, ताऊजी और ताईजी, दोनो की मुन्नी और मेरी तथा तुम्हारी भी मुन्नी है वह। वह सबकी मुन्नी है।"

सुबोध जल्दी-जल्दी भोजन करके बोला, "चलिए पापाजी! मै

तैयार हो गया मुन्नी को देखने के लिए।"

डा० प्रकाश बोले, "चलो बेटा।"

पिता और पुत्र दोनो किशोर भाई के घर पहुंचे तो वहां अपार हर्ष का वातावरण उपस्थित था। घर के सभी प्राणी प्रसन्न थे।

डा० प्रकाश प्रसन्न चित्त किशोर भाई की माताजी से बोले, "माताजी प्रणाम! यह सुबोध अपनी ताईजी की मुन्नी को देखने के लिए उतावला हो रहा है। तनिक इसे मुन्नी को दिखला लाइए।"

किशोर भाई की माताजी ने प्रसन्नतापूर्वक सुबोध को अपनी गोद मे उठा लिया और बोली, "मुन्नी को देखोगे बेटा!"

"हां दादीजी! पापाजी ने मुझसे कहा है कि हमारे यहा एक मुन्नी भेजी है भगवान ने, तो मैंने कहा, पापाजी पहले आप मुझे उस मुन्नी को दिखला लाए। और पापाजी मुझे लेकर चल दिए, बस। पापाजी कहते थे कि वह हम सबकी मुन्नी है।"

किशोर भाई की माताजी सुबोध की बाते सुनकर बहुत प्रसन्न हुई और उसे अपने साथ लेकर जच्चाखाने मे पहुची, जहा विमलादेवी पलग पर लेटी हुई थी और उन्हीकी बगल मे रेशमी छटूलना पहने एक छोटी-सी मुन्नी लेटी हुई थी।

सुबोध उसे देखकर हस पडा और बोला, "दादीजी! यह तो गुडिया है गुडिया।" और झट उसने आगे बढकर अपना मुह उसके मुह पर टिकाकर उसे स्नेह से चूम लिया। सुबोध को मुन्नी बहुत अच्छी लगी।

यह देखकर विमलादेवी और उनकी सास दोनो का मन हर्षित हो उठा। सुबोध की स्नेहप्रियता देखकर उनका हृदय गद्गद हो उठा।

सुबोध हसकर बोला, "दादीजी! बडे अपने से छोटो को प्यार करते है न। तो मैं भी तो इस मुन्नी से बडा हू। मुझे बहुत अच्छी लग रही है यह। तभी तो मैने इसे चूम लिया।"

सुबोध की बात सुनकर विमलादेवी मुस्कराकर बोली, "तुमने ठीक किया बेटा! तुम एक बार और चूम लो अपनी मुन्नी को।"

विमला ताईजी की बात सुनकर सुबोध का ध्यान उनकी ओर गया तो वह सकपकाकर बोला, "ताईजी! आप लेटी क्यों है इस तरह? क्या

तबियत ठीक नही है आपकी ?"

विमलादेवी सुबोध के सिर पर हाथ रखकर बोली, "हा बेटा ! मेरा जी खराब हो गया था रात ।"

यह सुनकर सुबोध बेचैनी-सी अनुभव करके बोला, "तो ताईजी, मैं डाक्टर साहब को बुला लाऊ ।"

सुबोध की बात सुनकर विमलादेवी मुस्कराकर बोली, "नही बेटा ! मै यूही ठीक हो जाऊगी दो-चार दिन मे ।"

सुबोध बोला, "नही, ताईजी ! एक बार पापाजी बीमार हुए थे तो ताऊजी डाक्टर को लाए थे । तभी तो तबीयत ठीक हुई थी पापाजी की । मै पापाजी के साथ जाकर अभी डाक्टर साहब को लिवा लाता हू ।"

किशोर भाई की माताजी बोली, "डाक्टर साहब आ चुके है बेटा ! वे दवा दे गए है तुम्हारी ताईजी को । अब ठीक हो जाएगी ये । तुम मुन्नी को खिला लो । तुम्हे अच्छी लगी यह मुन्नी ?"

यह कहकर उन्होने उस छोटी गुडिया जैसी मुन्नी को उठाकर सुबोध के हाथो मे देकर स्वय सभाले रखा उसे ।

सुबोध को बहुत अच्छी लग रही थी मुन्नी । उसने उसे पकडकर अपने हाथो मे भर लिया ।

सुबोध कमरे से बाहर निकला तो डा० प्रकाश ने पूछा, "मुन्नी देखी सुबोध तुमने ?"

"देखी पापाजी ।" सुबोध बोला ।

"कैसी लगी तुम्हे ?" डा० प्रकाश ने पूछा ।

"बहुत सुन्दर है पापाजी ! बहुत अच्छी लगी मुझे ।"

तभी किशोर भाई भी वहा आ गए ।

"इस छोटी-सी गुडिया ने घर मे प्रवेश करके घर के वातावरण को सतान-स्नेह से भर दिया ।" डा० प्रकाश सहर्ष बोले, "बच्चे के घर मे आ जाने से घर का वातावरण कुछ और ही हो उठता है ।"

डा० प्रकाश कुछ देर पश्चात् सुबोध को साथ लेकर अपने घर लौटे तो उन्होने क्या देखा कि बाबू ब्रिजकिशनजी और सरोज भाभी मय अपने सामान के डा० प्रकाश के घर के आंगन मे विराजमान थे ।

डा० प्रकाश सरोज भाभी और बाबू ब्रिजकिशन को इस प्रकार अचानक वहा देखकर खिल उठे और बाबू ब्रिजकिशन से सस्नेह कौली भरकर मिले। सरोज भाभी को भी उन्होने सादर प्रणाम किया।

सुबोध यह सब खडा-खडा देखता रहा। इन अपरिचित व्यक्तियो से इस प्रकार अपने पापाजी को सस्नेह मिलते देखकर वह समझ नही सका कुछ। सुबोध के सम्मुख इनके विषय मे कभी कोई विशेष चर्चा भी नहीं हुई थी। बाबू ब्रिजकिशनजी और सरोज भाभी के कलकत्ता से पत्र आते-जाते थे और डा० प्रकाश उसका उत्तर दे देते थे। इन पत्रों से सुबोध का कोई सम्बन्ध नही था।

डा० प्रकाश सुबोध की ओर देखकर बोले, "सुबोध बेटा! अपने ताऊजी और ताईजी को प्रणाम करो।"

सुबोध ने अपनी सरल वाणी मे इन अपरिचित व्यक्तियो को प्रणाम किया तो सरोज भाभी ने सुबोध को प्यार से अपनी गोद में उठा लिया। उन्होने उसे छाती से लगाया और फिर इधर-उधर देखकर बोली, "मालती कही दिखलाई नही दे रही लालाजी! क्या गई हुई है कही?"

डा० प्रकाश ने उनके आते ही सब किस्सा कहना उचित नही समझा। वे बोले, "जी! कही गई हुई है।" और फिर डा० प्रकाश बात बदलकर बोले, "आपके तबादले का क्या हुआ भाई साहब? मैं तो प्रतीक्षा मे ही रहा आपके पत्र की।"

बाबू ब्रिजकिशनजी बोले, "तबादला कराकर ही तो आया हू मैं इस समय यहा प्रकाश। कलकत्ता इतने दिन रहा अवश्य परन्तु वहा कुछ स्वास्थ्य ठीक नही रह सका मेरा।"

यह सुनकर डा० प्रकाश बहुत प्रसन्न हुए। वे तुरन्त पंडित से बोले, "पडित! खाना बनाओ, भाभी और भया के लिए।"

सरोज भाभी बोली, "नही लालाजी! खाना हमारे पास इतना है कि अभी दो दिन भी समाप्त नही होगा। हम सब लोग उसीको खाएगे आज। खाना बनवाने की आवश्यकता नही है पडित।"

डा० प्रकाश मुस्कराकर बोले, "मुझे और सुबोध को तो आज किशोर की माताजी ने इतना ठूंस-ठूसकर खिलाया है कि भोजन नाक तक आ

गया है भाभी। आज सचमुच बहुत खा लिया हमने।"

"किशोर भाई के घर आज कन्या ने जन्म लिया है। उसीको देखने हम दोनो गए थे।"

सरोज भाभी को यह समाचार पाकर बहुत प्रसन्नता हुई। वे सहर्ष बोली, "चलो, इतने दिन पश्चात् भगवान ने उन्हे कन्या दी है तो पुत्र भी देगा भगवान।"

फिर सब लोग ऊपर चले गए। जब सोने की भी तैयारी हो गई और मालती का अभी भी वहा कही पता नही चला तो सरोज भाभी तनिक सशंकित-सी होकर बोली, "लालाजी, सचमुच बतलाओ मालती कहां है?"

डा० प्रकाश मुस्कराकर बोले, "भाभी, मालतीदेवी को इस मकान मे रहते लज्जा आती थी। उन्होने बारहखम्भा रोड पर नई दिल्ली में एक कोठी किराये पर ले ली है और आजकल वे वही रहती है। कल आप और भाई साहब जाकर मिल आना उससे।"

डा० प्रकाश ने यह बात मुस्कराकर ही कही परन्तु उनके हृदय की वेदना को समझने मे सरोज भाभी को समय नही लगा। वे दु खी मन से बोली, "मालती! तू ऐसी निकली! तूने मेरे सब किए-धरे पर पानी फेर दिया। तूने मुझे लालाजी की दृष्टि मे इतना नीचे गिरा दिया।" और सचमुच उनकी आखो मे आसू आ गए।

डा० प्रकाश सात्वना-भरे स्वर मे बोले, "भाभी, इसमे किसीका कोई दोष नही है। दोष मेरे अपने ही भाग्य का है। मैं मालती के अनुरूप अपने को न बना सका और मालती अपने को मेरे अनुरूप न बना सकी। आपने अपने को भैया के अनुरूप बना लिया तो दोनो का जीवन आनन्दपूर्वक साथ-साथ चल रहा है। विमला भाभी ने अपने गुणो और अपनी तपस्या से किशोर भाई के अनुरूप अपने को बना लिया तो दोनो का जीवन स्वर्ग बन गया। हम दोनो दो विभिन्न धाराओ मे बह चले। मालती मेरी चाल को गलत समझ रही और मैं उनकी चाल को। इसीसे हम दोनो के जीवन दो दिशाओ मे बह चले।"

डा० प्रकाश की बात सुनकर सरोज भाभी गम्भीर वाणी मे दृढता-

पूर्वक बोली, "नही लालाजी ! चाल मालती की ही गलत है। कोठी तो क्या, उसे स्वर्ग मे भी अपनी इच्छा से अपने पति और पुत्र को छोडकर नही जाना चाहिए था। मालती ने भूल ही नही, महान पाप किया है। मैं उसकी कोठी पर जाना अपना अपमान समझती हू ।"

सरोज भाभी की बात सुनकर डा० प्रकाश का मन उनके प्रति श्रद्धा से झुक गया। उन्होने करुण दृष्टि से सरोज भाभी की ओर देखकर नेत्रो से अश्रु बरसाते हुए कहा, "भाभी ! मालती पाषाण बन गई। इतने सुन्दर रूप मे इतना कठोर पाषाण भी छिपा रह सकता है, यह मुझे मालती ने ही बतलाया।"

बाबू ब्रिजकिशन को यह सब सुनकर हार्दिक वेदना हुई और वे स्पष्ट वाणी मे बोले, "मालती ने निहायत घृणित कार्य किया है प्रकाश ! मेरा मन और मस्तिष्क उसे कभी क्षमा नही कर सकते।"

यह सुनकर डा० प्रकाश बोले, "भैया, मालती पर क्रोध न करो। मैंने आज तक जीवन मे उसकी हर भूल को क्षमा किया है। उसका हर अपराध मेरी दृष्टि मे क्षम्य है ! मैं देखना चाहता हू कि वह मेरे हृदय को कहा तक कष्ट पहुचा सकती है और मुझमे कितनी शक्ति है उसे सहन करने की।"

बाबू ब्रिजकिशनजी और सरोज भाभी दोनों डाक्टर प्रकाश के व्यक्तित्व के सम्मुख नतमस्तक हो गए। उन्होने डाक्टर प्रकाश के चेहरे पर अपूर्व श्रद्धा के साथ देखा।

दूसरे दिन प्रात.काल उठकर अपने नित्य कर्म से निवृत्त होकर बाबू ब्रिजकिशन अपने आफिस चले गए। सुबोध को डाक्टर प्रकाश ने नहला-धुलाकर नाश्ता कराया और फिर पडित को उसे स्कूल छोडने के लिए भेज दिया।

सरोज भाभी ने आज सवेरे उठते ही रसोई का काम अपने हाथो में ले लिया था। आज का नाश्ता और चाय उन्हीने तैयार की थी।

डाक्टर प्रकाश स्नान करके अपने ड्राइग रूम मे आए तो नाश्ता और चाय लेकर सरोज भाभी सामने आ गईं।

डाक्टर प्रकाश ने सरोज भाभी की ओर देखकर कहा, "भाभी, आपने यह कष्ट क्यों किया ? पडित सुबोध को स्कूल पहुचाकर लौट आता तो

कर लेता यह सब ।"

सरोज भाभी मुस्कराकर बोली, "पडित क्यो कर लेता लालाजी ! घर मे भाभी के आ जाने पर भी क्या रसोई के लिए नौकर की आवश्यकता है ?"

सरोज भाभी के इतना कहते ही डाक्टर प्रकाश के मानस मे अपने उन पाच वर्षो की स्मृति जाग्रत् हो उठी जिनमे सरोज भाभी ने कभी उन्हे बाज़ार मे भोजन करने के लिए नही जाने दिया था। अपने माता-पिता की मृत्यु के पश्चात् डाक्टर प्रकाश कुछ दिनो तक अपने मित्र किशोर भाई के यहा ही भोजन करते रहे थे और रहते भी प्रधानतया उन्हीके मकान मे रहे थे। इसी बीच मे बाबू ब्रिजकिशनजी डाक्टर प्रकाश के मकान मे किराये-दार बनकर आ गए थे।

तभी डाक्टर प्रकाश ने सरोज भाभी को अपने माता-पिता की मृत्यु की पीडाप्रद कहानी सुनाई थी और उसके पश्चात् सध्या को डाक्टर प्रकाश भोजन के लिए जब बाजार जाने लगे थे तो सरोज भाभी ने पूछा था, "लालाजी ! आप भोजन करने कहा जाते है ?"

डा० प्रकाश ने मुस्कराकर कहा था, "भाभी ! सध्या को यही पराठे-वाली गली मे दो-तीन पराठे खा लेता हू, और सुबह का भोजन जहा होता है कर लेता हू। कोई निश्चित नही रहता सुबह के भोजन का।"

सरोज भाभी ने तब स्नेहपूर्ण शब्दो मे सशासन उनसे कहा था, "देखिए लालाजी ! आज से आप बाजार मे भोजन नही करेगे। भोजन अब नित्य नियम से आपको घर पर ही करना होगा दोनो समय। इसका आगे से ध्यान रहे।"

फिर ठीक पाच वर्ष तक डा० प्रकाश ने सरोज भाभी के ही हाथ का बना हुआ भोजन किया था।

उसी दौरान मे एक दिन डा० प्रकाश ने सरोज भाभी से अपने भोजन का मूल्य लेने का आग्रह किया था तो सरोज भाभी रूठ गई थी और वे पाच दिन तक डा० प्रकाश से नही बोली थी। अन्त मे डा० प्रकाश को ही उनसे क्षमा-याचना करनी पडी थी।

आज सरोज भाभी को फिर छ वर्ष पश्चात् उसी स्नेह से अपना नाश्ता लिए सामने खडी देखकर डा० प्रकाश का हृदय उमड आया। वे

धीरे से बोले, "भाभी ! आपका अधिकार छीनने की सामर्थ्य क्या प्रकाश मे कभी हुई हे जो आज होगी।" और इतना कहकर वे कुर्सी पर बैठ गए।

सरोज भाभी ने नाश्ता तश्तरी मे लगाकर प्याली मे चाय उडेली और मुस्कराकर बोली, "लालाजी ! नाश्ते के साथ दूध छोडकर यह चाय पीनी कब से प्रारम्भ कर दी ?"

डा० प्रकाश भारी मन से बोले, "यह चाय की बान भी मालतीदेवी की ही डाली हुई है भाभी ! उसीने मेरा दूध पीना छुडाकर चाय पीने की आदत डाल दी और जब चाय पिलाने का समय आया तो आप मुझसे दूर जा बैठी।"

डा० प्रकाश के हृदय की पीडा का अनुभव करके सरोज भाभी बोली, "लालाजी ! अब तुम मेरे सम्मुख मालती को मालतीदेवी कभी न कहना। वह देवी होती तो क्या अपने पति को छोडकर इस प्रकार चली जाती ?"

डा० प्रकाश सकरुण स्वर मे बोले, "भाभी ! मैंने अपने हृदय और मन मे मालती के लिए जो स्थान एक बार बना लिया उसमे जीवन-भर कोई परिवर्तन होनेवाला नही है। मैंने अपने मन-मदिर मे उसे देवी के समान ही स्थापित किया है और वह मेरे लिए इस जीवन मे देवी ही रहेगी। और कोई उसे कुछ भी समझे और कहे परन्तु मैं अपनी धारणा मे परिवर्तन नही कर सकता। मै आज भी उसे उसी रूप मे देखता हू जिस रूप मे मैंने उसे एक बार स्वीकार कर लिया।

"मुझे विश्वास है कि मालती के जीवन मे एक दिन ऐसा अवश्य आएगा जब वह अनुभव करेगी कि जीवन का वास्तविक सुख विपुल धन, सम्पत्ति और एश्वर्य तथा दुनिया की रंगीनियों मे नहीं है, नारी के जीवन की शाति अपने पति और बच्चों के स्नेह मे है।"

सरोज भाभी ने डा० प्रकाश की बात सुनकर उनके चेहरे पर हार्दिक स्नेह और श्रद्धा की दृष्टि से देखा। वे दर्द-भरे स्वर मे बोली, "लालाजी ! मालती को मैंने अपनी बेटी के समान पाल-पोसकर इतना बडा किया और फिर जब तुम जैसा सुयोग्य वर भी मैं उसके लिए खोज सकी

तो मेरे हर्ष का पारावार नही रहा था। इसे मैंने अपने जीवन की उसके विषय मे सबसे बडी सफलता माना था। परन्तु लालाजी ! उसने अपने आचरण से मेरे हृदय को जो पीडा पहुचाई है, उसने मेरा हृदय विदीर्ण कर दिया। मेरा मन उसकी ओर से कुठित-सा हो गया। मै समझ नहीं पा रही कि उसे हो क्या गया। इतनी सीधी और सरल लडकी थी वह कि तुमसे क्या कहू ! कभी मुझसे पूछे विना उसने टुकडा नही तोडा और उसीने गत चार वर्ष के दौरान मे मुझे कभी एक भी पत्र अपनी कुशलता का लिखना उचित नही समझा। मैने यहा जो पत्र लिखे उनके उत्तर मे तुमने ही कभी मालती के विषय मे कुछ लिख दिया तो लिख दिया, उसने कभी एक पत्र अपनी बहिन को नही लिखा।"

डा० प्रकाश को सरोज भाभी से यह सूचना प्राप्त कर हार्दिक कष्ट हुआ।

अब उनका कालेज जाने का समय हो गया था। उन्होने जल्दी-जल्दी अपने वस्त्र बदले और कलाई पर बधी घडी देखते हुए बोले, "भाभी! अब मै चला। कालेज का समय हो गया है। केवल दस मिनट शेष रह गए।"

डा० प्रकाश मोतीबाजार से निकलकर चादनीचौक मे आए, जहां ड्राइवर ने उनकी कार लाकर खडी की हुई थी। वे कार मे बैठ गए और ड्राइवर ने गाड़ी स्टार्ट कर दी।

१३

मालतीदेवी अपनी कार मे बैठकर बारहखम्भा रोड की कोठी पर पहुची तो देखा कि लाला किशोरीलाल उनके स्वागत के लिए वहां पहले से उपस्थित थे। वे मालतीदेवी की प्रतीक्षा कर रहे थे।

लाला किशोरीलाल ने कार से अकेली मालतीदेवी को उतरते देखा तो उनकी आत्मा प्रसन्न हो गई। वे समझ गए कि प्रो० प्रकाश मालती-देवी के साथ रहने के लिए इस कोठी में नही आए।

लाला किशोरीलाल के मन मे यह देखकर अपार हर्ष हुआ। परन्तु वे अपने हृदय भर उठनेवाले हर्ष को हृदय के एक कोने में दबाकर सरल वाणी मे बोले, "मालतीदेवी ! क्या आपके पति प्रो० प्रकाश नही आए आपके साथ यहा रहने के लिए ?"

"आ जाएगे वे भी।" उपेक्षा के भाव से मालतीदेवी ने कहा।

लाला किशोरीलाल बोले, "मालतीदेवी ! मुझे कहना तो नही चाहिए कुछ, क्योकि पति और पत्नी के सम्बन्ध की बाते है, परन्तु इधर इतने दिन से देख रहा हू कि प्रो० प्रकाश को आपकी उन्नति देखकर हर्ष नही हुआ, बल्कि और पीडा ही उत्पन्न हुई उनके हृदय मे। उनके हृदय मे आपकी उन्नति देखकर डाह उत्पन्न होती है कुछ। उनका आपके साथ न आना भी इसी बात का प्रमाण है।" और फिर हसकर कहा, "नाली का कीडा नाली मे ही पडा रहना पसन्द करता है।"

लाला किशोरीलाल का यह अन्तिम वाक्य, जो उन्होने उनके पति के विषय मे कहा, मालतीदेवी को अच्छा नही लगा, परन्तु वे उसकी पीडा को अपने अन्दर ही घोटकर पी गई। लाला किशोरीलाल के उपकारों से दबी थी वे इस समय। उनको यह उज्ज्वल भविष्य उन्हीकी सुकृपा के फलस्वरूप प्राप्त हुआ था। वे हसकर बोली, "अपनी-अपनी इच्छा है लालाजी ! प्रो० साहब के रूढिवादी जीवन मे इस नवीनतम विकास के लिए बहुत कम स्थान है। उनका मत है कि जीवन की आवश्यकताओ को अपनी आय के अन्दर सीमित रखकर चलना चाहिए और मेरा मत है कि आवश्यकताओ के अनुसार मनुष्य को अपनी आय बढाने का प्रयत्न करना चाहिए। मै विकासवाद की समर्थक हू और वे सतोषवाद के। मैं उनके सतोषवाद को मनुष्य की उन्नति मे बाधक मानती हू और उनका मत है कि धन के पीछे दौडने से मानसिक शाति नष्ट होती है। मैं उनके मत से सहमत नही हू। मेरा मत है कि मनुष्य को अपनी आय जितनी भी वह बढा सकता है बढाने का प्रयत्न करना चाहिए। आय अच्छी होने पर मानसिक शाति भी प्राप्त हो ही जाती है। धन से ही मनुष्य के जीवन का विकास होता है।"

"इसमे क्या सन्देह है मालतीदेवी ! धन को मैं मानसिक शाति का

मूल साधन मानता हू। अभी उस दिन जब आपने मुझे मेरे केस मे जीतने की सूचना दी तो सच जानिए कि मै कह नही सकता मुझे कितनी मानसिक शाति प्राप्त हुई। मेरी मन की मुरझाई हुई कलिका खिल उठी। मेरा मानस फूल जैसा हलका हो उठा। मेरे नेत्रो के सम्मुख प्रकाश छा गया।"

लाला किशोरीलाल के शब्दो मे अपने मत का समर्थन प्राप्त कर मालतीदेवी उमग मे नाच उठी। उनकी दृष्टि अपने सामने की कोठी पर गई और उसकी आभा देखी तो मुक्त कठ से बोली, "कोठी बहुत सुन्दर बनवाई है आपने। बहुत ही शानदार बनी है यह कोठी।"

"सचमुच बहुत सुन्दर बनी है मालतीदेवी! मैं जब एक दृष्टि आपके चेहरे पर डालता हू और दूसरी इस कोठी पर, तो लगता है कि यह कोठी आपके ही लिए बनी है। इसमे रहकर आप देखेगी कि आप कितनी उन्नति करती है।" लाला किशोरीलाल बोले।

लाला किशोरीलाल के मुख से मालतीदेवी अपने कार्य की प्रशसा ही आज तक सुनती आई थी। अपने रूप की प्रशसा उनके मुख से मालतीदेवी ने आज तक नही सुनी थी। मालतीदेवी को यह प्रशसा भली नही लगी। उनके हृदय मे मानो उन्होने एक पिन-सी चुभा दी।

परन्तु इसे भी उन्होने शब्दो मे व्यक्त नही किया।

मालतीदेवी ने कोठी मे रहना प्रारम्भ कर दिया। वहा उनके पास बडे-बडे क्लाइण्ट्स् ने आना प्रारम्भ कर दिया। मालतीदेवी को अब कनाट प्लेस के कार्यालय मे जाने की भी आवश्यकता नही रही। उन्होने अपना कार्यालय कोठी मे ही बना लिया। जिसे गरज होती थी वह यही आता था उनके पास। मालतीदेवी की ख्याति क्लाइण्टस् को स्वय उनके पास खीचकर लाने लगी।

कोठी मे आने पर मालतीदेवी एकदम स्वतत्र हो गई। अपनी स्वतत्रता मे प्रो० प्रकाश को बाधास्वरूप तो उन्होने कभी पहले भी नही समझा था और सत्य यह था कि प्रो० प्रकाश ने कभी कोई बाधा उपस्थित भी नही की, परन्तु जब से उन्होने अपना कार्यालय नई दिल्ली मे बना लिया था तब से तो वे ऐसी स्वतत्र हो गई थी

कि कही आने-जाने के विषय मे उनसे कहने-सुनने की भी आवश्यकता नही रह गई थी।

अब कोठी के स्वतत्र वातावरण ने उन्हे और भी स्वतत्र बना दिया। मानो विधाता ने उनके सब कृत्रिम बधन काट दिए। उन्होने ससार के स्वतत्र वातावरण मे खुलकर श्वास लिया और धीरे-धीरे उनके पास आने-जानेवाले महानुभावो की सख्या मे भी वृद्धि होने लगी।

मालतीदेवी के पास आनेवालो की सख्या अधिकाशत उनके क्लाइण्ट्स् की ही थी जो समय-असमय बिना कामकाज के भी मालतीदेवी के पास मिलने आ जाते थे और सध्या समय नई दिल्ली के किसी अच्छे रेस्ट्रा में चलने या सिनेमा इत्यादि देखने का कार्यक्रम बना लेते थे।

लाला किशोरीलाल जो पहले मालतीदेवी की स्वतत्रता के बडे समर्थक थे, अब मालतीदेवी का इस प्रकार अपने अन्य क्लाइण्ट्स् के साथ नित्य होटलबाजी करते देखकर कुछ खिन्न-से हो उठे थे। उन्हे मालतीदेवी की इतनी स्वतत्र प्रवृत्ति कुछ खटकने-सी लगी थी।

इधर कई दिन से नित्य मालतीदेवी की कोठी पर कई-कई बार गए थे परन्तु मालतीदेवी से उनकी भेट नही हो रही थी। आज वे फिर कई बार आए और जब भी आए तो पडित से यही पता चला कि वे कोठी मे नही थी। यह 'नही है, नही है' सुनते-सुनते लाला किशोरीलाल का मन कुछ खीज-सा उठा। उनके कान पक चले थे इस 'ना' को सुनकर।

वे सोचने लगे कि ये मालतीदेवी भी आखिर क्या है जो दो घडी जमकर अपनी कोठी मे नही बैठ सकती। वे पोर्टिको मे खडे-खडे यही सोच रहे थे कि कोठी के द्वार मे उन्होने मालतीदेवी की कार को आते देखा।

कार को देखते ही लाला किशोरीलाल की बाछे खिल उठी। उनके मन की कुम्हलाती हुई पखुडिया खुलकर सतर हो गई। उन्होने कार की खिडकी से झाककर देखा तो मालतीदेवी लाला रतनलाल के साथ कार मे बैठी बाते करती चली आ रही थी।

कार पोर्टिको मे रुकी और दोनो कार से नीचे उतरे तो मालतीदेवी की दृष्टि लाला किशोरीलाल पर गई, जो पोर्टिको से ऊपर कोठी के बाहर-

वाले बराडे मे घूम रहे थे। मालतीदेवी के साथ लाला रतनलाल को आते देखकर उनका उत्साह कुछ भग-सा हो गया था।

मालतीदेवी लाला किशोरीलाल की ओर मुस्कराते हुए देखकर बोली, "आज लाला किशोरीलालजी इधर कैसे भूल पडे ? मैं तो आज सोच रही थी कि स्वय आपके यहा आऊगी। कई दिन से आपसे भेट नही हुई तो सच जानिए लालाजी, मुझे यहा कुछ सूना-सूना-सा लगने लगा था।"

लाला किशोरीलाल के दग्ध हृदय पर मालतीदेवी ने मानो ये शब्द उच्चारण करके शीतल जल की वर्षा कर दी। उनके मन की सारी जलन समाप्त हो गई। वे मुस्कराकर बोले, "मैं तो कई बार यहा आया मालतीदेवी, परन्तु आपके ही दर्शन न हो सके। जब भी आया तो आपके नौकर पडित ने यही सूचना दी कि आप कोठी मे नही है, किन्ही महाशय के साथ गई है।"

"क्या सचमुच आप कई बार पधारे ?" मालतीदेवी ने मुस्कराकर तिरछी दृष्टि से उनकी ओर देखते हुए कहा, "तब तो बहुत कष्ट हुआ आपको !" और फिर लाला रतनलाल की ओर देखकर बोली, "इधर कई दिन से यहा न मिलने का कारण आप है, लाला किशोरीलालजी ! इन बेचारो का एक पचास लाख का केस हाईकोर्ट में उलझा हुआ है। इनकी परेशानी मे मेरे कई दिन इन्हीके काम मे निकल गए। तीन-चार दिन सारा समय इन्हीकी कोठी पर व्यतीत हुआ। इनके पूरे रिकार्ड का मुआयना करना था, सो मैंने यही उचित समझा कि वही जाकर सब देख लू। क्योंकि पूरा रिकार्ड यहा उठाकर लाना इनके लिए कठिन होता।"

मालतीदेवी ने कई दिन लाला रतनलाल की ही कोठी पर व्यतीत किए यह जानकर लाला किशोरीलाल को हार्दिक वेदना हुई। परन्तु उस वेदना का प्रभाव उन्होने अपने चेहरे पर नही पडने दिया। वे मरे मन से मुस्कराकर बोले, "तो समझ लिया आपने लाला रतनलाल का केस ?"

मालतीदेवी प्रसन्न मुद्रा से मुस्कराकर बोली, "समझ लिया लाला किशोरीलालजी ! केस मे कुछ नही है। इनका वकील ही मूर्ख था जिसने

इन्हे इतना श्योर केस हरवा दिया। केस मेरे हाथ मे होता तो पहली ही पेशी पर उड जाता। वह एग्रीमेट ही इनवेलिड[1] है, जिसके आधार पर यह पचास लाख की डिक्री[2] हुई है इनपर। आप देखिए हाईकोर्ट मे यह केस कितना साफ छूटता है।"

"क्यो नही ? जिस केस की पैरवी मालतीदेवी करे और वह न छूटे, यह भला कभी सम्भव है।" लाला किशोरीलाल बोले।

लाला किशोरीलाल की बात सुनकर लाला रतनलाल के मन को महान सात्वना मिली। उन्हे आशा बध गई कि अब उन्हे इस केस मे अवश्य विजय प्राप्त होगी। लाला रतनलालजी अपनी फाइल लेकर लौट गए और मालतीदेवी तथा लाला किशोरीलालजी कोठी मे बैठे रह गए।

लाला किशोरीलाल और मालतीदेवी आमने-सामने दो सोफो पर जा बैठे।

मालतीदेवी बोली, "कहिए लालाजी! कारोबार कैसा चल रहा है आपका ?"

"बहुत अच्छा चल रहा है मालतीदेवी! सब कृपा है आपकी। आप कहिए, कोठी मे आने से आपकी प्रेक्टिस मे भी कुछ वृद्धि हुई या नही ? मै तो समझता हू आपको काफी सफलता मिली होगी।"

"हुई क्यो नही लालाजी! आपकी कृपा से काम कई गुना बढ गया यहा आने से, और क्लाइण्ट्स् सभी अच्छे-अच्छे हाथ लगे है।"

मालतीदेवी का काम दिन दूना और रात चौगुना बढा परन्तु आय के साथ-साथ उनका व्यय भी पराकाष्ठा को पहुच गया। सैर-तफरीह और होटलबाज़ियो मे उनका धन पानी की तरह बहने लगा। जिन क्लाइण्ट्स् से वे धन उपार्जित करती थी उन्हीकी चौकडी मे बैठकर उसे खुले दिल से खर्च भी करती थी।

मालतीदेवी के मन में अब यह बात कभी आती ही नही थी कि उनके पास आनेवाले इस धन की गति कभी मन्द भी पड सकती है। वे तो उसकी निरन्तर वृद्धि की ही कल्पना करती थी और सोचती थी कि इसकी गति कभी मन्द होनेवाली नही है।

---

१. गैरकानूनी २. डिग्री

इसी प्रकार का जीवन व्यतीत करते-करते मालतीदेवी के जीवन का स्वर्णकाल निकल गया। पूरे पन्द्रह वर्ष व्यतीत हो गए। इस बीच मे ऐसी बात नही कि उन्हे डा० प्रकाश और अपने बेटे सुबोध की कभी याद ही न आई हो, परन्तु उन्हे मालीवाडे के उस मकान मे जाते अब लज्जा प्रतीत होती थी। उनकी डा० प्रकाश इतनी उपेक्षा कर सकेगे इसकी उन्हे स्वप्न मे भी आशा नही थी। कभी कल्पना भी नही की थी उन्होने इस बात की। वे यही सोचकर यहा चली आई थी कि डा० प्रकाश उनके बिना रह नही सकेगे। उन्हे आना ही होगा एक दिन उनके पास, परन्तु हुआ यह सब कुछ नही। डा० प्रकाश उनकी कोठी पर नही आए।

मालतीदेवी समझ नही सकी कि इतना नर्मदिल इसान इतना कठोर कैसे बन सका। जो व्यक्ति उनकी तनिक-सी बेचैनी या असुविधा को भी कभी सहन नही कर सकता था, व्याकुल हो उठता था, वह आखिर उन्हे इस प्रकार कैसे भूल गया। आखिर वह कैसे उनके प्रति इतना उदासीन हो सका।

मालतीदेवी कभी-कभी घटो बैठी यही सोचती रहती थी और उनका मन उदास-सा हो उठता था। उस समय उनका अपना वैभव उन्हे अपने जीवन का उपहास-सा प्रतीत होने लगता था। यह कोठी, यह धन और यह सब कुछ उन्हे ऐसा लगने लगता था कि मानो उन्हे काटने को दौडते हैं। उन्हे इन सबसे घृणा-सी हो उठती थी।

तभी लाला किशोरीलालजी आ जाते थे और उनसे बाते करते-करते उनके हृदय की यह पीडा कुछ दब-सी जाती थी। उनके साथ बाते करने मे वे अपनी पीडा का भुला देती थी परन्तु इधर चार-पाच वर्ष से लाला किशोरीलाल का भी यहा आना बन्द हो गया था। उनका सम्बन्ध मालतीदेवी से एक मकान मालिक और किरायेदार के अतिरिक्त शेष कुछ नही रह गया था।

लाला किशोरीलाल के हृदय को मालतीदेवी के व्यवहार से बडी ठेस लगी थी। आखिर उन्होने क्या नही किया मालतीदेवी के लिए। वे उन्हे मालीवाडे की उस गदी गली से उठाकर नई दिल्ली मे न लाए होते तो वे इतनी चमक पाती? इनकी सारी योग्यता रखी ही रह जाती यदि

उन्होने इन्हे नई दिल्ली मे लाकर न बिठला दिया होता। उन्होने इन्हे पत्थर से हीरा बना दिया, तावे से सोना बना दिया। परन्तु मालतीदेवी ने उनके इन सब उपकारो पर तनिक भी ध्यान नही दिया।

यह सब कुछ किया था लाला किशोरीलालजी ने, इसमे कोई सदेह नही परन्तु यह सब क्या उन्होने मालतीदेवी के सतीत्व को खरीदने के लिए किया था ? मालतीदेवी के मन मे लाला किशोरीलालजी के लिए अपार श्रद्धा थी। वे उनका बहुत आदर करती थी, परन्तु जिस दिन उन्होने लाला किशोरीलालजी की कुदृष्टि देखी तो उसे वे कतई सहन न कर सकी। उनके मुख से वे डा० प्रकाश के लिए कई बार कुछ अपशब्द सुनकर भी उन्हे पी गई थी, परन्तु सत्य यही था कि उनकी जलन को वे भुला नही सकी थी। उनकी पीडा मालतीदेवी के हृदय मे बराबर बनी हुई थी।

उन्होने उस दिन मुक्त कठ से कहा था, "लाला किशोरीलालजी ! यह सच है कि मेरे और मेरे पति के दृष्टिकोण मे मतभेद है, परन्तु इसका यह अर्थ नही कि उनके लिए मेरे हृदय और मन मे किसी भी प्रकार कुछ कम श्रद्धा है। मालती को समझने मे आपने बहुत बडी भूल की है। और मेरे पति को समझना तो आपके लिए नितात असम्भव है। आपने जिस दृष्टि से मेरी ओर देखने का प्रयास किया, वह आपका नहीं करना चाहिए था। आपने अपने आजके व्यवहारसे अपने सब किये-धरे पर पानी फेर दिया। आपके प्रति मेरे मन मे बहुत आदर-भाव था परन्तु आज से आप समझ लीजिए कि नाली का कीडा मेरे पति डा० प्रकाश नही, आप है ! डा० प्रकाश मेरे पति है और उनका जो पवित्र स्थान मेरे हृदय मे है उसे प्राप्त करना तो बहुत वडी बात है, उसकी हवा भी किसी नाली के कीडे को प्राप्त नही हो सकती। डा० प्रकाश मेरे मन-मदिर के देवता है।"

जिस समय ये बाते हो रही थी तो मालतीदेवी का पुराना नौकर पडित चुपचाप एक ओर खडा सब सुन रहा था। मालतीदेवी की आज की बाते सुनकर पण्डित के मन मे अपार हर्ष हुआ। उसके मन मे मालतीदेवी के डा० प्रकाश के प्रति कुव्यवहार से जो घृणा पैदा हो गई थी, वह काफूर

हो गई।

मालतीदेवी की यह बात सुनकर लाला किशोरीलाल तिलमिलाकर रह गए थे। उन्हे लगा कि उन्होने एक कृतघ्न नारी के लिए व्यर्थ ही इतना सब कुछ किया। उन्होने व्यर्थ ही अपने धन का अपव्यय किया। उन्हे मालती-देवी के लिए एक पैसा भी खर्च नही करना चाहिए था।

और उसी दिन से वे मालतीदेवी से तटस्थ हो गए। उसी दिन उन्होने पाच वर्ष के किराये का पाच सौ रुपया मासिक का चिट्ठा बनाकर तीस हजार का हिसाब मालतीदेवी के पास भेज दिया।

मालतीदेवी लाला किशोरीलाल के हिसाब का चिट्ठा देखकर मुस्करा दी। वे मधुर शब्दो मे लाला किशोरीलाल के मुनीम से बोली, "मुनीम-जी! रसीद बनाइए और चेक लीजिए। लाला किशोरीलाल ने यह किराये का हिसाब भेजकर बडी कृपा की मुझपर।"

मालतीदेवी ने तीस हजार का चेक काटकर मुनीमजी के हवाले कर दिया और रसीद लेकर अपनी तिजोरी मे रख ली।

दूसरे दिन मालतीदेवी ने लाला किशोरीलाल के मुनीमजी को फिर अपनी कोठी के द्वार पर आते देखा तो कुछ समझ नही सकी वे उनके आने का कारण।

वे सामने आए तो मालतीदेवी ने मुस्कराकर पूछा, "कहिए मुनीम-जी! क्या कोई और आदेश भेजा है लालाजी ने?"

मुनीमजी ने मोटर की खरीद के कागज मेज पर रखकर कहा, "लालाजी ने एक बीस हजार का चेक और देने के लिए कहा है मालतीदेवी!"

मालतीदेवी ने मुस्कराकर कहा, "इसकी भी रसीद बनाइए।" और एक बीस हजार का चेक उन्होने लाला किशोरीलाल के नाम और काट दिया।

चेक देकर मालतीदेवी बोली, "लालाजी से कह दीजिए कि कहे तो वह पाच हजार रुपया जो उन्होने अपने केस की फीस के बतौर मुझे दिया था वह भी लौटा दू। लालाजी की मुझपर बहुत बडी कृपा रही है। उन्हीकी बदौलत आज यह इतनी बडी रकम मैं उन्हे अदा कर सकी।"

लाला किशोरीलाल के मुनीम ने यह बात जाकर लाला किशोरीलाल से कही तो वे लज्जा से गड गए। उनका विचार था कि मालतीदेवी पचास हजार की रकम एकमुश्त अदा नही कर सकेगी और उन्हे दबकर उनकी शरण में आना होगा।

लाला किशोरीलाल ने अपने मुनीमजी को मालतीदेवी के पास वास्तव मे रुपया लेने के लिए नही भेजा था। वे तो मालतीदेवी को किसी प्रकार झुकाकर अपने कब्जे मे लाना चाहते थे। उनके दृष्टिकोण से रुपये की मार किसी व्यक्ति पर सबसे बडी मार थी। और उसी अस्त्र का प्रयोग उन्होने मालतीदेवी पर किया था। परन्तु मालतीदेवी ने पचास हजार रुपये का भुगतान करके लाला किशोरीलाल के इस अमोघ अस्त्र को विफल बना दिया।

लाला किशोरीलाल के हृदय मे इन चेको को प्राप्त कर महान निराशा हुई। वे अपने उद्देश्य मे सफल न हो सके। इस हार से उनका घायल हृदय बहुत व्याकुल हुआ। अब वे मुह लेकर मालतीदेवी के समक्ष जाने योग्य भी न रहे।

मालतीदेवी उसके पश्चात् प्रति मास उनके पास पाच सौ रुपये का किराये का चेक पहली तारीख को ही अग्रिम भेज देती थी। केवल यही सम्बन्ध आजकल मालतीदेवी और लाला किशोरीलाल का रह गया था, इसके अतिरिक्त अन्य कुछ नही।

१४

डा० प्रकाश का जीवन सरोज भाभी के दिल्ली मे आ जाने से उतना उदासीन और नीरस नही रहा था जितना वह गत दो-तीन वर्ष से चल रहा था। उन्होने धीरे-धीरे अपने मन को सात्वना देकर अपने को जीवन-पथ पर शातिपूर्वक चलने योग्य बना लिया था।

अपने पुत्र सुबोध के जीवन-निर्माण को ही उन्होने अपने जीवन का एकमात्र लक्ष्य बना लिया था। सरोज भाभी ने सुबोध की माता का स्थान

ग्रहण कर लिया था। इससे डा० प्रकाश का जीवन बडा सरल हो गया था।

डा० प्रकाश अब हिन्दू कालेज के प्रिंसिपल के रूप मे दिल्ली के शिक्षित समाज मे एक सम्मानित व्यक्ति माने जाते थे। वे सस्कृत और हिन्दी के प्रकाड पडित थे। उनके लिखे ग्रथ अपने विषय पर ऑथॉरिटी माने जाते थे। अब वेतन भी उन्हे पद्रह सौ रुपया मासिक मिलता था। परन्तु इस बढती हुई आय ने उनके सादा जीवन मे कोई परिवर्तन नही किया था।

डा० प्रकाश का पुत्र सुबोध भी अपने पिताजी के ही समान सरल प्रकृति का था। डा० प्रकाश सुबोध के सरल रूप को निहारते थे तो उन्हे अपनी युवा अवस्था की याद आ जाती थी। विलकुल वैसा ही था सुबोध के बदन का गठन भी जैसा किसी समय उनका अपना रहा था। सब कुछ ठीक बना-बनाया यह वही ही था जो किसी समय डा० प्रकाश का था। परन्तु जब उसके चेहरे पर उनकी दृष्टि जाती थी तो उन्हे मालतीदेवी की स्मृति हो आती थी। लगता था मानो विधाता ने मालतीदेवी का चेहरा उतारकर सुबोध के धड पर चढा दिया था।

सरोज भाभी के आ जाने पर डा० प्रकाश ने अपने पुराने नौकर पडित को मालतीदेवी के यहा भेज दिया था। पडित को वहा भेजने का उनका अभिप्राय यह नही था कि वे उसे अपने यहा से पृथक् कर देना चाहते थे, वरन् यह था कि उन्हे मालतीदेवी के विषय मे सूचना मिलती रहे।

पडित से मालतीदेवी के विषय मे हर सूचना प्रति सप्ताह उन्हे मिलती रहती थी। रविवार को पडित डा० प्रकाश को सब सूचना दे जाया करता था और उसे डा० प्रकाश तथा सरोज भाभी बडी उत्सुकतापूर्वक सुना करते थे। उस दिन जब डा० प्रकाश ने पडित के मुख से लाला किशोरी-लाल को दी गई करारी फटकार का विवरण सुना तो डा० प्रकाश के हृदय मे मालतीदेवी के प्रति स्थायी प्रेम मे एक नया निखार आ गया। डा० प्रकाश के नेत्रो मे प्रकाश उतर आया था। यह सुनकर सरोज भाभी के भी दग्ध हृदय को थोडी सात्वना मिली थी।

इसके पश्चात् जब उन्हे यह पता चला कि मालतीदेवी ने लाला किशोरीलाल की कोठी का पाच वर्ष का किराया और उनसे प्राप्त कार

का मूल्य भी अदा कर दिया तो उनके हृदय पर मालतीदेवी के चरित्र की और भी गहरी छाप लगी थी।

लाला किशोरीलाल से मालतीदेवी का सम्बन्ध-विच्छेद होने की घटना ने डा० प्रकाश के मन से उस गहरी छाया को हटा दिया था जिसे स्मरण करके उनका हृदय कभी-कभी इतना मलिन हो उठता था कि वे सारे-सारे दिन के लिए विक्षिप्त-से हो जाते थे। उनका मस्तिष्क खराब हो उठता था और उन्हे मालतीदेवी के चरित्र के विषय मे सदेह हो उठता था।

डा० प्रकाश सोचते रहते थे बहुत देर तक मालतीदेवी के विषय मे। वे अपने मन में ही कहते थे, ‘प्रकाश ! तू कितना निर्बल व्यक्ति निकला जा अपनी पत्नी को भी कुपथ पर जाने से न रोक सका। क्या मालतीदेवी को इस कुमार्ग पर जाने से रोकने का तेरा फर्ज नही था। तू जो उसके प्रति एकदम इतना उदासीन हो उठा, क्या यह तूने भूल नही की। तेरी पत्नी दहकती हुई ज्वाला मे कूद पडी और तू खडा-खडा देखता रहा। तू एक इच भी आगे बढकर उसका साथ न दे सका।

‘तू अपराधी है प्रकाश ! यह सब तेरा ही दोष है। मालती के इस घोर पतन का एकमात्र तू ही प्रधान कारण है। तू अपने-आपको निर्दोष नही कह सकता।’

यह सोचते-सोचते वे हताश-से हो उठते थे।

एक दिन इसी प्रकार हताश हुए डा० प्रकाश बैठे थे तो सरोज भाभी ने उनके उदास चेहरे को देखकर पूछा, “इतने उदास-से क्यो बैठे हो लालाजी ?”

डा० प्रकाश बोले, “कुछ नही भाभी ! मैं सोच रहा हू कि मालती के पतन का मैं ही प्रधान कारण हू।”

सरोज भाभी हसकर बोली, “लालाजी ! तुम व्यर्थ अपने-आपको इस प्रकार दुखी न किया करो। मै तुम्हे किसी भी प्रकार दोषी नही मानती। मालती के लिए क्या तुम समझते हो कि मेरे हृदय मे किसी भी प्रकार कम वेदना है ? तुम मुझे भी दोषी कहोगे कि मैंने दिल्ली मे आने के पश्चात् उसके पास जाकर उसे समझाने का प्रयास क्यों नही किया। परन्तु यह सब गलत है। मालती अब वह बच्चा नही है जिसे समझाने की आवश्यकता

हो। उसके ऊपर जब तुमसे, अपने बच्चे सुबोध से अलग होने का कोई प्रभाव नही पडा तो क्या तुम समझते हो कि उसपर समझाने-बुझाने का कोई प्रभाव पडता ? नासमझ आदमी को समझाया जाता है। परन्तु मालती नासमझ नही है । वह सब कुछ समझती है और उसने जो कुछ किया है समझ-बूझकर ही किया है । समय आएगा जब वह स्वय अपनी भूल को समझेगी।"

"क्या आपको विश्वास है भाभी कि मालती कभी अपनी भूल को समझ पाएगी ? क्या मालती कभी वापस आएगी भाभी ?" डा० प्रकाश ने सरोज भाभी की ओर निराश दृष्टि से देखते हुए कहा।

सरोज भाभी गम्भीरतापूर्वक बोली, "उसे आना ही होगा एक दिन लालाजी ! दुनिया की ये रगीनिया जो मनुष्य को यौवनकाल मे दिखलाई देती है और जो उसे कुपथ पर भटकाती है, क्या सदा बनी रहती है लाला-जी ! यह दुनिया रगीन नही है लालाजी, यह दिखलाई रगीन देती है। क्या तुम समझते हो लालाजी कि व्यक्ति का यौवन चिरस्थायी होता है ? क्या यह ढलता नही कभी ? क्या मेरे चेहरे का रूप-रग आज भी वैसा ही है जैसा आज से पन्द्रह वर्ष पूर्व तुमने देखा था ?"

डा० प्रकाश उतनी ही गम्भीरतापूर्वक बोले, "भाभी, सच पूछती हो तो मुझे आपके रूप मे आज भी वही आभा दिखाई देती है जिसके मैंने प्रथम बार दर्शन किए थे। मुझे तो कही भी किसी प्रकार का आपके रूप मे कोई परिवर्तन दिखलाई नही देता।"

डा० प्रकाश की बात सुनकर सरोज भाभी का हृदय गुदगुदा उठा। वे मुस्कराकर बोली, " तुम मेरे रूप को अपनी इन दो आखो से नही देख रहे हो लालाजी ! तुम देख रहे हो अपने हृदय-चक्षुओ से। जिन आखो से तुम देख रहे हो उनसे तो तुम्हे मेरा रूप उस समय भी वैसा ही दिखलाई देगा जब तुम चिता पर रखने के लिए अपनी भाभी के शव को अपने कधे पर उठाकर ले जाओगे लालाजी ! परन्तु ये आखे दुनिया-भर के पास नही होती और होती भी है तो वे सरोज भाभी के रूप को देखने के लिए नही खुल सकती।

" मालती के रूप पर मडरानेवाले भौरो के पास आखे नही है और है

भी तो वे कभी मालती के रूप को देखने के लिए नही खुलेगी। वे आखे जो आज मालती के रूपपर टिकी है, एक दिन आएगा जब, अधी हो जाएगी। उनके अधा होते ही मालती का रूप फीका पडने लगेगा। वह अकेली रह जाएगी उस समय और फिर वह भटकेगी उन आखो को देखने के लिए जो उसके रूप को रूप कह सके। वे आखे फिर उसे कहा मिलेगी लालाजी! मालती को आना ही होगा! वे आखे तो उसे तुम्हारे और सुबोध बेटे के ही पास मिल सकती है, अन्यत्र कही नही। वे हृदय की आखे तभी खुलती है लालाजी जब हृदय मिलते है। इन ऊपरी आखो की दृष्टि बहुत छिछली होती है लालाजी! यह हृदय तक नही पहुच सकती। यह तो केवल शरीर के ऊपरी यौवन से टकराकर वापस लौट जाती है।"

सरोज भाभी की बात सुनकर डा० प्रकाश के मर्माहत हृदय को तनिक सात्वना मिली।

तभी सुबोध वहा पहुचा। किशोर भाई की पुत्री काता भी उसके साथ थी। सुबोध बोला, "पापाजी! यह काता आई है अपने पास होने का सन्देश आपको देने के लिए। काता मैट्रिक मे फर्स्ट डिवीजन मे पास हुई है। इस वर्ष काता ने दो परीक्षाए पास कर ली। प्रभाकर की परीक्षा इसने प्राइवेट पास की थी और आज इसका मैट्रिक का परीक्षाफल आया है।"

डा० प्रकाश हर्षित होकर बोले, "अरे वाह! काता, तुमने तो सचमुच कमाल कर दिया बेटी! एक वर्ष में दो-दो परीक्षाए पास कर ली!" और फिर सरोज भाभी से बोले, "भाभी, काता का मुह मीठा कराओ, हमारी काता बेटी पास होकर आई है।"

सरोज भाभी सहर्ष बोली, "कराऊगी क्यो नही मुह मीठा लालाजी!" कहकर सरोज भाभी ने सुबोध से मिठाई लाने को कहा। वे मुस्कराकर बोली, "घंटेवाले हलवाई के यहा से लाना बेटा! और रसगुल्ले बगाली मिठाईवाले के यहा से। काता बेटी को रसगुल्ले खाने का बहुत शौक है, मैं जानती हू।"

काता सरोज भाभी की बात सुनकर तनिक लजा-सी गई और सुबोध मिठाई लेने चला गया।

इसी बीच किशोर भाई का नौकर कांता के पास होने की मिठाई लेकर

आ गया।

सरोज भाभी हसकर बोली, "हमे क्या पता था कि मिठाई काता के पीछे-पीछे ही चली आ रही है।"

डा० प्रकाश बोले, "परन्तु यह मिठाई काता के खाने की नही है भाभी! इसे मै, तुम और भैया खाएगे। सुबोध को भी देगे थोडी इसमे से। वैसे भेजा उसे खिला-पिलाकर ही होगा विमला भाभी ने। क्यो काता! सुबोध तो छककर आया होगा न?"

काता ने मुस्कराकर गर्दन हिलाकर हा का सकेत किया।

"मै तो पहले ही जानता था। विमला भाभी के यहा मै जब भी जाता हू तो मेरे लिए मिठाई तैयार मिलती है भाभी! पता नही इन्हे मेरे वहा पहुचने की सूचना पहले से ही कहा से मिल जाती है।" डा० प्रकाश सहर्ष बोले।

तभी सुबोध मिठाई लेकर आ गया। सरोज भाभी ने काता को बडे प्यार से मिठाई खिलाई और बहुत देर तक उसकी माताजी के विषय मे बाते करती रही।

बाते चलती-चलती विमला भाभी के सगीत और नृत्य-कौशल का जिक्र छिड गया। इसे सुनकर सुबोध बोला, "पापाजी! सगीत और नृत्य-कला मे काता ने भी बहुत दक्षता प्राप्त कर ली है। गत वर्ष जो म्यूज़िक कानफ्रेस दिल्ली के सगीत-समाज ने आयोजित की थी उसमे काता ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया था।

"आगामी सप्ताह मे सगीत-समाज का फिर वार्षिक अधिवेशन होने जा रहा है। उसके लिए ताईजी ने काता को एक बहुत ही कलात्मक नृत्य सिखलाया है। आप उसे देखे तो मुग्ध हो उठे। और सगीत-समारोह के लिए ताईजी ने जो गाना तैयार कराया है वह भी बहुत सुन्दर है पापाजी!"

"तो यह बात है! बेटी काता, तुमने हमे अपना सगीत कभी नही सुनाया। तनिक हम भी तो सुने तुम सगीत-समारोह मे कौन-सा गाना सुनाओगी।" डा० प्रकाश बोले।

सुबोध काता की ओर देखकर बोला, "सुना दो काता! मुझे तो बहुत अच्छा लगा तुम्हारा वह गाना। पापाजी को भी बहुत अच्छा लगेगा तुम्हारा

गाना।"

काता मुग्ध हो उठी सुबोध के मुख से अपने सगीत की प्रशसा सुनकर। वह बोली नही कुछ, तो सुबोध बोला, "मै वीणा उठा लाता हू अभी। तुम गाना काता, और मैं वीणा बजाऊगा।"

सुबोध अपने कमरे से जाकर तुरन्त वीणा उठा लाया। वीणा काता को देकर बोला, "काता, तुम जरा इसका स्वर साधो, मैं तबला उठा लाऊ। ताईजी तबला बजाएगी।"

डा० प्रकाश और सरोज भाभी अपने बच्चो का यह उत्साह देखकर आनन्दमग्न हो उठे।

सुबोध तबला उठा लाया और सरोज भाभी ने उसे बजाने के लिए ठीक-ठाक किया।

उसी समय डा० प्रकाश ने देखा कि किशोर भाई विमला भाभी के साथ जीने पर चढे चले आ रहे थे। उन्हे आते देखकर डा० प्रकाश खडे हो गए और आदर-भाव से उन्हे अपने कमरे मे लाकर बोले, "आज हमने अपने यहा काता बेटी के पास होने के उपलक्ष्य मे सगीत-समारोह का आयोजन किया है किशोर भाई! आप लोग भी ठीक समय पर आ गए। मै सोच ही रहा था कि इस समय भाभी का यहा होना नितात आवश्यक था। भाभी न आती तो हमारा समारोह फीका ही रह जाता।"

डा० प्रकाश की बात सुनकर विमला भाभी मुस्कराकर सरोज भाभी की ओर देखकर बोली, "देवरजी अकेले ही अकेले सगीत-समारोह का आनन्द लूटना चाहते थे। परन्तु हम लोग भी पीछे रहनेवाले नही जीजी।"

विमला भाभी की बात सुनकर सरोज भाभी हसकर बोली, "विमला बहिन! तुम लालाजी को ठीक समझती हो। परन्तु हम लोग भी इन्हें अकेले ही अकेले आनन्द नही लूटने दे सकते। ये बुलाए या न बुलाए हम तो सम्मिलित हो ही जाते है ऐसे अवसरो पर आकर। इनके बुलाने की प्रतीक्षा करे तो प्रतीक्षा ही करते रह जाए।"

डाक्टर प्रकाश ने अपनी मेज एक ओर को सरका दी और सब लोग नीचे फर्श पर ही बैठ गए।

सुबोध ने वीणा बजानी प्रारम्भ की तो विमलादेवी उसे सुनकर मुग्ध

हो उठी। वे मुग्ध कठ से बोली, "बेटा सुबोध ! अब बहुत मधुर वीणा बजाने लगे हो तुम।" और फिर काता की ओर देखकर बोली, "बेटी काता ! सुना दो अपना वही गीत, जिसका तुमने आगामी सप्ताह मे होनेवाले सगीत-समारोह मे गाने के लिए रियाज किया है।"

काता ने गाना प्रारम्भ किया तो वहा का वातावरण बहुत ही सरस हो उठा।

डाक्टर प्रकाश भावुकतापूर्ण स्वर मे बोले, "काता बेटी ! तुमने तो कमाल कर दिया सचमुच ! तुम्हारे मधुर स्वर ने तो भाभी के स्वर को भी मात कर दिया।"

डाक्टर प्रकाश के मुख से काता के मधुर स्वर की प्रशसा सुनकर विमलादेवी आत्मविभोर हो उठी।

इसके पश्चात् काता ने अपना नृत्य भी दिखलाया। उसे देखकर तो डाक्टर प्रकाश अपने को भूल ही गए। उन्होने स्वप्न मे भी कभी कल्पना नही की थी कि काता इतनी सुन्दर कला मे प्रवीण हो चुकी है।

वे मुग्ध वाणी मे विमलादेवी की ओर देखकर बोले, "भाभी ! आपने काता को सगीत और नृत्यकला मे निपुण कर दिया। आज काता का सगीत सुनकर और नृत्य देखकर मेरा हृदय आनन्द से भर उठा। बेटी काता को आपने कला की देवी बना दिया।"

अपनी बेटी की प्रशसा सुनकर किशोर भाई मन ही मन मुग्ध हो रहे थे। उन्होने अपनी पुत्र को पुत्री के समान ही लाड-चाव से पाला था। भगवान ने उन्हे सतान-स्वरूप केवल एक कन्या ही प्रदान की थी और उसी-के अन्दर उन्होने अपने जीवन के सुख तथा शाति की कल्पना की थी।

किशोर भाई के माता-पिता के मन मे अपने अतिम काल तक पोते का मुख देखने की आकाक्षा वनी रही और इस आकाक्षा को अपने मन मे लिए-लिए ही वे दोनो इस ससार से विदा होगए। परन्तु किशोर भाई और विमला-देवी के मन मे कभी यह भावना उत्पन्न नही हुई। उन्होने तो सर्वदा पुत्र और पुत्री को समान रूप से देखा था। उनके निकट पुत्र और पुत्री मे कभी कोई अन्तर नही रहा। काता को वह अपना पुत्र और पुत्री दोनो ही समझते थे।

आज का दिन बहुत ही आमोद-प्रमोद मे व्यतीत हुआ। सभी का मन

हर्ष से भर उठा।

डाक्टर प्रकाश प्रसन्नतापूर्वक बोले, "किशोर भाई! आज का दिन काता बेटी के परीक्षा मे उत्तीर्ण होने के उपलक्ष्य मे बहुत आमोद-प्रमोद के साथ व्यतीत हुआ। इन बच्चो की खिलती हुई फुलवारी मे थोडा समय हम लोगो का भी देखो कितना हर्षपूर्ण हो उठा।"

किशोर भाई मुस्कराकर बोले, "अब तो इन्हीकी दुनिया है प्रकाश! हम लोगो का जीवन अब इन्हीके लिए तो है। ये फूल खिलते और मुस्कराते है तो हमारे जीवन मे भी बहार-सी आती प्रतीत होती है। इन्हे हसता-खेलता देखते है तो हमारे मन भी हिलोरे लेने लगते है। इनकी दुनिया में थोडा हस-खेल लेते है।"

आज सन्ध्या का भोजन सब लोगो ने यही पर किया और सरोज तथा विमला भाभी ने मिलजुलकर भोजन तैयार किया। भोजन करके सब लोग यही से घूमने के लिए निकल गए।

१५

जीवन मे वसन्त आता है और इठलाता है तो पतझर उसका उपहास करता है। वह मन ही मन मुस्कराकर कहता है, "हस-खेल ले दस-पाच दिन और इठला ले अपने यौवन पर। परन्तु भूल मत कि एक दिन तेरी यह जवानी मेरे हाथो मे आकर चूर-चूर हो जाएगी। तेरा यह इठलाना और मुस्कराना सब रखा रह जाएगा। आज तू हस रहा है और मैं रो रही हू और तब तू रोएगा और मै खिलखिलाऊगी।"

मालती के जीवन मे वसन्त आया तो उसने पतझर को भुला ही दिया। परन्तु वह वसन्त चिरस्थायी न रह सका। जीवन की मौजो और मस्ती मे इठलाकर उसने जीवन की रगीनियो से कहा, "तुम सब नाचती और खिलखिलाती हुई आओ और मेरे हृदय मे भर जाओ। तुम मेरे साथ खेलो और मैं तुम्हारे साथ खेलूगी, इठलाऊगी और जीवन के वसन्त की बहारे लूटूगी। यह जीवन आखिर है किसलिए? ये हसने और मुस्कराने के दिन क्या यूही

बर्वाद करने के लिए आए है जीवन मे ?"

मालती ने अपने मार्ग मे आनेवाली हर उस चीज की उपेक्षा की जो उसकी मस्ती मे बाधास्वरूप उपस्थित हुई। उसने हर उस चीज को चुमकारकर कलेजे से लगाया जिसने उसके आनन्द मे वृद्धि की। वह जीवन की बहारो के साथ पख लगाकर उडी और नेत्र बन्द करके उसकी मौजो मे स्वय भी एक मौज बनकर झूम उठी ।

मालती को लगा कि उसके जीवन का विकास हो रहा था। वह दुनिया के आनन्दप्राप्ति के साधनो की रानी बन गई थी। धन और वैभव उसके सकेत पर नृत्य करते थे।

परन्तु धीरे-धीरे मालती ने देखा कि उसके जीवन का वह उत्साह, जो रुकना जानता ही नही था, अपने-आप ही न जाने क्यो शिथिल पडने लगा। वह जो मस्ती के साथ इठलाने मे उसे आनन्द देता था अब उसके बदन मे दर्द पैदा करने लगा। उसके मन की आसक्ति विरक्ति मे बदलने लगी। नित्य की होटलबाजी और सिनेमा की सैर के लिए जाना भी उसे अब भला नही लगता। और जो सबसे बडी कमी उन्हे दिखलाई दी वह थी उन मित्रो की जो हर समय उसे घेरे रहते थे।

जो लोग दिन मे अनेको बार उनके पास आते हुए नही अघाते थे उनकी अब शक्ल देखे मालतीदेवी को महीनो निकल जाते थे और जब वे आते भी थे तो अपने कामकाज के अतिरिक्त अन्य कोई बात नही करते थे। मालतीदेवी ने अनुभव किया कि अब उनके पास समय ही नही था उनके साथ इधर-उधर की बाते करने के लिए।

कभी-कभी मालतीदेवी को उनका यह व्यवहार बहुत अखरता था परन्तु वे कुछ कह नही पाती थी उन लोगो से। कभी वे उनके सम्मुख कही सैर-तफरीह का कोई प्रस्ताव भी रखती थी तो वे कुछ बहाना बनाकर उसे टाल जाते थे।

मालतीदेवी कुछ समझ ही न पाती थी उनके इस व्यवहार को। उन्होने अनुभव किया कि उनका जीवन कुछ नीरस-सा हो उठा। कभी-कभी वे एकान्त मे बैठकर घटो तक सोचती रहती थी कि क्या उन्होने सचमुच जीवन मे कोई भूल कर डाली ?

आज मालतीदेवी का मन यह सोचते-सोचते बहुत उदास-सा हो उठा। उन्होने चारो ओर दृष्टि फैलाई तो उन्हे कमरे की दीवारो के अतिरिक्त और कुछ दिखलाई नही दिया। वे उन्हीकी ओर अपनी निराश दृष्टि से देखती रही और देखते-देखते उनके नेत्र सजल हो उठे।

तभी पडित उनकी चाय लेकर कमरे मे आ गया। चाय के बर्तन उसने मेज पर रखकर मालतीदेवी की ओर देखा तो उसे उनके नेत्र सजल मिले।

मालती देवी के जीवन की बदलती हुई स्थिति को पडित खूब पहचानता था। एक समय उनके जीवन का उसने वह रूप भी देखा था जब वह चाय बनाकर लाता था और उनके ईर्द-गिर्द जमा हुए लोग कह देते थे, "मालतीदेवी! यहा क्या चाय पीजिएगा? चलिए किसी अच्छे-से रेस्ट्रा मे चलकर चाय पी जाए।" और मालतीदेवी मुस्कराकर उनके साथ मोटर मे बैठकर चल देती थी। पडित से चलते समय कह जाती थी, "पडित! वह चाय तुम पी लेना। हम रेस्टा मे चाय पीने जा रहे है।"

पडित बेचारा अपना मन मारकर रह जाता था। कितने चाव से वह अपनी बहूरानी के लिए चाय बनाकर लाता था और उसकी चाय को बिना पिए ही बहूरानी किन्ही महाशय के साथ चली जाती थी। वह लाचार दृष्टि से उनकी ओर देखता रह जाता था। उसका हृदय पीडा से भर उठता था और वह केतली के पानी तथा दूध को यू ही नाली मे ढुलका देता था। वह सोचता रहता था बहुत देर तक कि क्या कभी वह भी दिन आएगा बहूरानी के जीवन मे जब इनका पिड इन आवारागर्दों की चौकडी से छूटेगा? इतने बडे घर की बहू-बेटियो को क्या इस तरह जो आए उसीके साथ होटल मे चाय पीने के लिए निकल पडना चाहिए?

कई बार पडित को क्रोध भी आता था और उसका मन करता था कि, वह उनसे स्पष्ट कह दे कि उसे उनका इस प्रकार जो आए उसीके साथ चल खडा होना भला नही लगता, परन्तु तभी उसे प्रकाश बाबू के वे शब्द स्मरण हो आते थे जो उन्होने पडित को यहा भेजते समय कहे थे। उन्होने कहा था, "पडित! मालती से कभी उसकी इच्छा के विरुद्ध कुछ कहना नहीं। उसकी जो बात तुम्हे बुरी भी लगे उसे कड़ुए घूट के समान पी

जाना । उसका मस्तिष्क ठीक नही है इस समय । उसके ऊपर किसी भी भली बात का प्रभाव उल्टा ही पडेगा । तुम समझो कि जब वह मेरा कहा न मान सकी तो और किसका कहा मानेगी । जब उसने सरोज भाभी की ही उपेक्षा की तो वह ध्यान किसका रख सकेगी । समय आएगा जब तुम्हे कुछ कहने का अवसर मिलेगा । तब तुम कहना और खूब खुलकर कहना । तब उसके ऊपर तुम्हारे कहने का प्रभाव भी पडेगा और वह अपनी भूल को समझेगी भी । परन्तु अभी देर है उस समय के आने मे ।"

आज पडित ने देखा कि वह समय आ गया था जिसकी ओर प्रकाश बाबू ने सकेत किया था ।

पडित ने चाय की मेज मालतीदेवी की आरामकुर्सी के सामने रख-कर कहा, "बहूजी ! चाय लाया हू बनाकर ।"

पडित की बात सुनकर मालतीदेवी का तनिक ध्यान टूटा । वे बोली, "क्या चाय का समय हो गया पडित ?"

"तभी तो लाया हू बहूजी !" पडित बोला ।

मालतीदेवी ने चाय पीनी आरम्भ की तो पडित बोला, "बहूजी ! अब वे लोग दिखलाई नही देते जो पहले आपको यहा बैठकर चाय पीने ही नही देते थे । आपने अच्छा ही किया जो उन लोगो के साथ होटलो मे जाकर चाय पीना बन्द कर दिया । भले घर की बहू-बेटियो को अपने घर ही खाना-पीना चाहिए ।"

मालतीदेवी मुस्कराकर बोली, "अब होटल मे जाकर चाय पीने को मन नही करता पडित ! तुम्हारे हाथ की बनी चाय बहुत अच्छी लगने लगी है ।"

पडित प्रसन्न होकर बोला, "बहूजी ! चाय तो मै पहले भी ऐसी ही अच्छी बनाता था परन्तु वे आने-जानेवाले आपको पीने नही देते थे । जब वे मेरी बनी-बनाई चाय पर से आपको उठाकर ले जाते थे तो मुझे बहुत क्रोध आता था । आप चलते समय मुझसे उसे पीने के लिए कह जाती थी परन्तु मुझे इतना दु ख होता था कि मैं उसे नाली मे गिरा देता था ।"

"नाली मे गिरा देते थे !" आश्चर्यचकित होकर मालती देवी ने कहा । "तुम ऐसा क्यो करते थे पडित ! तुम पी क्यो नही लेते थे उसे ?"

पडित निश्वास भरकर बोला, "बहूजी ! मेरा दिल पत्थर का बना हुआ नही है। अपने हाथ की बनी चाय की आज आपके मुह से प्रशसा सुनकर आप क्या जाने कि मेरी आत्मा को कितना सुख मिला। आप जब मालीवाडे मे रहती थी और सध्या का भोजन नित्य किसी होटल मे कर आती थी तो तब भी मै नित्य बिना नागा सध्या को आपका भोजन बनाकर रखता था। आप नही खाएगी, यह मै जानता था परन्तु घर की बहूरानी का भोजन न बनाकर मै अपने सिर पर पाप की गठरी नही रख सकता था। उन दिनो मैं नित्य उस रात के बासी भोजन को दूसरे दिन दोपहर को खाता था। बाबूजी ने कभी आज तक मेरे बने भोजन को खाने से ना नही की। उन्हे भूख न भी हुई तब भी एक कौर तोडकर उन्होने अवश्य खा लिया।" कहते-कहते पडित का मन कुछ उदास-सा हो उठा। उसके नेत्र छलछला उठे।

मालतीदेवी को आज पडित के प्रति किए गए अपने अशिष्टतापूर्ण व्यवहार पर हार्दिक खेद हुआ। उनका मन भारी हो उठा। उन्होने पडित के अश्रुपूर्ण नेत्र देखकर कहा, "पडित, तुम कहते-कहते चुप क्यो हो गए?"

पडित नेत्रो से अश्रु बरसाता हुआ बोला, "बाबूजी के एक कौर खाने की बात जबान पर आते ही मुझे उस दिन की स्मृति हो आई बहूजी, जिस दिन आप अपना मालीवाडे का घर छोडकर इस कोठी मे आई थी। वह पहला दिन था बाबूजी के जीवन का जब उन्होने मेरे बने खाने को खाने के लिए मना किया था। उनका मन बहुत खिन्न था उस समय परन्तु तब भी सुबोध ने उन्हे बिना एक कौर खाए नही रहने दिया।"

पडित के मुख से अपने जीवन की उस पुरानी घटना और उसके डा० प्रकाश के जीवन पर पडे प्रभाव को सुनकर मालतीदेवी का हृदय मर्माहत हो उठा। उन्होने अपने सजल नेत्रो को पडित के चेहरे पर पसारकर पूछा, "पडित ! उस दिन मै चली आई तो तुम्हारे बाबूजी की क्या दशा हुई जरा बताओ तो।"

पडित यह सुनकर घायल पक्षी के समान फर्श पर बैठ गया और रोकर बोला, " बहूजी ! उस दिन जो बाबूजी पर बीती उसकी करुण कहानी न

सुने, यही अच्छा है ।

"आपको कार मे बिठलाकर वे घर लौटे तो उनके पैर लडखडा रहे थे । वे किसी प्रकार सध्या तक ठीक रहे और सुबोध को दूध पिलाकर पलग पर सुला दिया । वे लेट गए और मैं नीचे के आगन मे चला आया ।

"सुबह उठकर मैंने चाय बना ली, परन्तु बाबूजी न उठे । मैं ऊपर गया तो मैने जाकर देखा कि उनका बदन तीव्र ज्वर मे जल रहा था और वे बौखलाहट मे बडबडाकर कह रहे थे, 'मालती तुम जा रही हो । जाओ । मैं रोक नही सकता तुम्हे । परन्तु यह जान लो कि तुम अपने जीवन मे सबसे बडी भूल करने जा रही हो ।'

"मैं घबरा उठा उनकी दशा देखकर और दौडा हुआ सीधा किशोर भाई के पास चला गया । किशोर भाई और उनकी पत्नी बाबूजी की दशा का ज्ञान करके नगे ही पैरो मेरे पीछे हो लिए । उनके पीछे-पीछे उनके माता-पिता भी वही आ गए । किशोर भाई डाक्टर को लाए । कही सध्या तक जा कर बाबूजी की चेतना लौटी ।

"किशोर भाई और उनकी पत्नी ने रात-दिन एक कर दिया बाबूजी की सेवा मे । चेतना लौटने पर भी उन्हे पलग से उठने मे पूरा एक सप्ताह लगा ।"

मालतीदेवी को आज पडित के मुख से यह वृत्तात सुनकर बहुत दु ख हुआ । वे भारी स्वर मे बोली, "पडित, मै सचमुच बहुत अभागिन निकली । मैंने स्वय अपने पैर से अपने भाग्य को ठोकर मार दी ।"

बातो ही बातो मे मालतीदेवी की चाय ठडी हो गई । पडित उधर देखकर बोला, "आप चाय पीना भूल ही गई बहूजी ! अब इसे न पीजिए, यह ठडी हो गई । मै और चाय बनाकर लाता हू ।"

पडित केतली लेकर चला गया और मालती देवी अकेली बैठी रह गईं। उनका मन आज पश्चात्ताप से घिरा हुआ था। उनके हृदय मे अथाह पीडा थी ।

थोडी देर मे पडित दूसरी चाय बनाकर ले आया ।

मालतीदेवी के जीवन का वह उत्साह जिसने उन्हे तूफानी वेग के साथ मालीवाडे से उडा लाकर इस कोठी मे पटक दिया था और यहा से फिर

उडा-उडाकर इधर-उधर की रगीन दुनिया मे घुमा रहा था धीरे-धीरे शात होता जा रहा था।

इधर एक वर्ष से उनका स्वास्थ्य भी उनका साथ नही दे रहा था। उनका कचहरी जाना भी बन्द-सा ही हो गया था। इक्का-दुक्का जो उनका मिलनेवाला कभी उनकी कोठी पर आ भी जाता था अब उसने भी आना-जाना बन्द कर दिया था। उनके रूप पर मडरानेवाले भौरे अब लापता हो चुके थे। इतनी बडी कोठी, जिसमे रात-दिन चहल-पहल रहती थी, अब भयानक प्रतीत होने लगी थी।

मालतीदेवी ने जो रुपया कमाया था उसे जवानी के नशे मे पानी की तरह बहा दिया था। किसी प्रकार भूल से बैंक मे जो साठ-सत्तर हजार रुपया जमा हो गया था उसमे से पचास हजार उन्हे लाला किशोरीलाल को अदाकर देना पडा था। शेष जो दस-पन्द्रह हजार बचा था वह बीमारी मे डाक्टरो के हवाले कर देना पडा।

आज वे पैसे की चिता मे थी और बैक-बैलेस समाप्त हो चुका था। कुछ डाक्टरो के बिल अदा करने थे और तीन माह का किराया भी वे लाला किशोरीलाल के पास नही भेज पाई थी। वे इसी चिता मे बैठी थी कि पडित उनकी चाय लेकर आ गया।

इस समय मालतीदेवी के पास केवल पडित ही एक नौकर रह गया था। शेष सब नौकर चले गए थे। मालतीदेवी अब कोई आय न होने के कारण उनका वेतन देने मे असमर्थ हो गई थी। पडित को भी वे चार मास से वेतन नही दे पाई थी। पडित डा० प्रकाश का पुराना नौकर था। वह यू ही मालतीदेवी को छोडकर नही जा सकता था।

जब मालतीदेवी की इस दशा का पडित ने गत सप्ताह डा० प्रकाश के सम्मुख वर्णन किया तो उन्हे हार्दिक पीडा हुई। उन्होने पडित को उसके बाल-बच्चो के लिए घर भेजने के लिए चार मास का वेतन दे दिया था और कह दिया था कि इस बात की सूचना मालतीदेवी को नही मिलनी चाहिए।

मालतीदेवी पडित को चाय लिए खडा देखकर बोली, "पडित, चाय लाए हो बनाकर। तुम्हारा चार माह से वेतन भी नही दे पाई मै। आज

मन तनिक ठीक रहा तो लाला रतनलाल से फीस का रुपया लाऊगी। मै देख रही हू कि दुनिया बडी स्वार्थी है। जब काम था तो यही रतनलाल का बच्चा दिन मे दस बार चक्कर लगाता था। अब केस जिता दिया तो मेरी फीस देते भी इसका दम टूट रहा है।"

मालतीदेवी की बात सुनकर पडित के हृदय मे अथाह पीडा हुई। वह दीर्घ श्वास भरकर बोला, "बहूजी! मेरे वेतन की आप चिता न करे। मैंने तो आपके इस घर से न जाने कितना वेतन प्राप्त किया है आज तक। मै आठ वर्ष का था जब बाबूजी के पिताजी मुझे मेरे गाव से लाए थे। बाबूजी को मैने अपनी गोद मे खिलाया है। परतु यह सत्य है बहूजी, कि जिस दुनिया मे आप आकर फस गई है, बडी ही स्वार्थपूर्ण है। जिस नि स्वार्थ दुनिया मे आपको भगवान ने भेजा था उसे आप ठुकराकर चली आई। इस स्वार्थपूर्ण दुनिया की चमक-दमक पर रीझकर आपने नि स्वार्थ दुनिया के सरल और सादगी से पूर्ण सुख तथा शाति के जीवन को खो दिया। आपको भगवान ने जिस नि स्वार्थ दुनिया मे भेजा था वह पति और पुत्र के नि स्वार्थ प्रेम की दुनिया थी।" और फिर नेत्रो से आसू ढलकाकर पडित ने कहा, "बहूजी! बाबूजी जैसा देवता आदमी मैने अन्य कोई अपने जीवन मे नही देखा। आप मेरा कहा माने तो फिर उसी दुनिया मे वापस लौट चले। बाबूजी के मन मे आपके लिए आज भी वही स्थान है जो पहले था।"

पडित की बात सुनकर मालतीदेवी के नेत्र सजल हो उठे। वे जानती थी कि उनके पति उन्हे कितना स्नेह करते है और वे यदि आज फिर लौटकर अपने घर वापस चली जाए तो डाक्टर प्रकाश उनके ऊपर अपने प्राण तक न्यौछावर कर सकते है।

परन्तु अब उनका मुह नही था उस घर मे वापस लौटने का। वे वहा जाए तो जाए कौन-सा मुह लेकर। इन पन्द्रह वर्ष के बीच उन्होने एक बार भी कभी जाकर अपने पति के दर्शन नही किए, कभी भी जाकर अपने लाल को छाती से नही लगाया। उसने अपने जीवन का वह अमूल्य समय, जो उन्हे अपने पति की सेवा और पुत्र के पालन-पोषण मे लगाना चाहिए था, इस स्वार्थपूर्ण दुनिया की रगीनियो मे खो दिया। आज इस दशा मे वहा लौट-

कर जाना उनके लिए असम्भव था।

मालतीदेवी चाय पीकर लाला रतनलाल की कोठी पर गई तो उन्होंने मुह चढाकर कहा, "देखिए मालतीदेवी ! आप जो रोज-रोज रुपये के लिए मेरे पास पत्र लिख देती है यह आपकी बात उचित नही है। मुझे आपको जो कुछ पेमेट करना था, मैं कर चुका। उससे अधिक एक कौडी भी और मै देनेवाला नही हू। यह बात आप कान खोलकर सुन ले और भविष्य मे आप कभी इस विषय मे मुझे कोई पत्र न लिखे।"

लाला रतनलाल की यह बात सुनकर मालतीदेवी उनका मुह देखती की देखती रह गई। वे एक शब्द भी मुख से उच्चारण न कर सकी और निराश होकर अपनी कोठी पर लौट आई। इस समय उनके नेत्रो के सम्मुख अधकार छा गया था।

मालतीदेवी किसी प्रकार कोठी मे प्रवेश कर अपने पलग तक पहुची और उसपर गिरकर अचेत हो गई। आज डाक्टर के मना करने पर भी वे रुपये के अभाव मे उठकर लाला रतनलाल की कोठी तक गई थी और वहा जाकर जो आघात उनके हृदय पर हुआ, उसे वे सहन न कर सकी।

मालतीदेवी को अचेत देखकर पडित घबरा उठा। उसे और कुछ न सूझा तो वह सीधा डाक्टर प्रकाश के पास दौड पडा।

१६

डाक्टर प्रकाश के सुपुत्र सुबोध ने इस वर्ष एम० एम० फाइनल की परीक्षा दी थी। आज परीक्षा का फल पत्रो मे प्रकाशित होने की सम्भावना थी।

सुबोध बहुत सवेरे ही उठकर टाइम्स आफ इडिया के कार्यालय की ओर अपना परीक्षा-फल देखने के लिए चला गया था।

डाक्टर प्रकाश सुबोध के लौटने की प्रतीक्षा मे थे तभी सरोज भाभी उनका तथा सुबोध का चाय-नाश्ता लेकर ऊपर आ गई। उन्होने कहा, "सुबोध दिखलाई नही दे रहा लालाजी।"

डाक्टर प्रकाश बोले, " सरोज भाभी ! आपका पुत्र सुबोध विश्वविद्यालय की अतिम परीक्षा मे उत्तीर्ण होने का समाचार प्राप्त करने के लिए सवेरे ही सवेरे टाइम्स आफ इडिया के कार्यालय की ओर चला गया है। अब लौटना ही चाहिए उसे।

" सुबोध शत-प्रतिशत विश्वस्त है अपनी सफलता के लिए, परन्तु परीक्षा-फल प्राप्त करने और अपना रौल नम्बर अखबार मे देखने की विद्यार्थियो मे इतनी उत्कठा होती है कि वे अखबारो के कार्यालयो पर जाने से अपने को रोक नही सकते।

" जब मेरा और किशोर भाई का एम० ए० की परीक्षा का परीक्षा-फल निकला था तो हम दोनो हिन्दुस्तान के कार्यालय पर नई दिल्ली अपना परीक्षा-फल देखने गए थे। इस समय सुबोध को जाते देखकर मुझे उस दिन की याद आ रही है। लगता है जैसे आज का ही दिन था वह।"

डाक्टर प्रकाश सरोज भाभी से यह कह ही रहे थे कि तभी काता और किशोर भाई उन्हे जीने से आते दिखलाई दिए।

दोनो के मुख-मडल पर हास्य की रेखाए खिची थी। दोनो ने डाक्टर प्रराश के कमरे मे साथ-साथ प्रवेश किया।

किशोर भाई सहर्ष बोले, "प्रकाश, बधाई है तुम्हे। मुझे कान्ता ने अभी-अभी सुबोध के परीक्षा मे उत्तीर्ण होने की सूचना दी तो मैं अपने को रोक न सका तुम्हारे पास आने से। आज का दिन हमारे जीवन मे अपार हर्ष का दिन आया है प्रकाश। सुबोध बेटे ने विश्वविद्यालय मे टाप किया है। सुबोध मेरे योग्य भाई की योग्य सन्तान निकला। सुबोध ने हम सब का मस्तक ऊचा कर दिया।"

डाक्टर प्रकाश ने यह समाचार सुनकर नेत्र बन्द कर लिए और उन्होने अन्दर ही अन्दर अपार सुख तथा शाति का अनुभव किया। परमात्मा ने उन्हे आज वह सुख प्रदान किया था जिसका वर्णन करने के लिए उनके मुख मे वाणी नही थी। उनकी बीस वर्ष की तपस्या का फल आज उनकी आखो के सम्मुख था। उन्हे इससे अधिक हर्ष अन्य किसी बात को सुनकर हो ही नही सकता था।

डाक्टर प्रकाश सरोज भाभी की ओर देखकर बोले, "भाभी ! जिस

कर जाना उनके लिए असम्भव था।

मालतीदेवी चाय पीकर लाला रतनलाल की कोठी पर गई तो उन्होंने मुह चढाकर कहा, "देखिए मालतीदेवी! आप जो रोज-रोज रुपये के लिए मेरे पास पत्र लिख देती है यह आपकी बात उचित नही है। मुझे आपको जो कुछ पेमेट करना था, मैं कर चुका। उससे अधिक एक कौडी भी और मै देनेवाला नही हू। यह बात आप कान खोलकर सुन ले और भविष्य मे आप कभी इस विषय मे मुझे कोई पत्र न लिखे।"

लाला रतनलाल की यह बात सुनकर मालतीदेवी उनका मुह देखती की देखती रह गई। वे एक शब्द भी मुख से उच्चारण न कर सकी और निराश होकर अपनी कोठी पर लौट आई। इस समय उनके नेत्रो के सम्मुख अधकार छा गया था।

मालतीदेवी किसी प्रकार कोठी मे प्रवेश कर अपने पलग तक पहुची और उसपर गिरकर अचेत हो गई। आज डाक्टर के मना करने पर भी वे रुपये के अभाव मे उठकर लाला रतनलाल की कोठी तक गई थी और वहा जाकर जो आघात उनके हृदय पर हुआ, उसे वे सहन न कर सकी।

मालतीदेवी को अचेत देखकर पडित घबरा उठा। उसे और कुछ न सूझा तो वह सीधा डाक्टर प्रकाश के पास दौड पडा।

१६

डाक्टर प्रकाश के सुपुत्र सुबोध ने इस वर्ष एम० एम० फाइनल की परीक्षा दी थी। आज परीक्षा का फल पत्रो मे प्रकाशित होने की सम्भावना थी।

सुबोध बहुत सवेरे ही उठकर टाइम्स आफ इडिया के कार्यालय की ओर अपना परीक्षा-फल देखने के लिए चला गया था।

डाक्टर प्रकाश सुबोध के लौटने की प्रतीक्षा मे थे तभी सरोज भाभी उनका तथा सुबोध का चाय-नाश्ता लेकर ऊपर आ गई। उन्होने कहा, "सुबोध दिखलाई नही दे रहा लालाजी।"

डाक्टर प्रकाश बोले, "सरोज भाभी ! आपका पुत्र सुबोध विश्व-विद्यालय की अतिम परीक्षा मे उत्तीर्ण होने का समाचार प्राप्त करने के लिए सवेरे ही सवेरे टाइम्स आफ इडिया के कार्यालय की ओर चला गया है। अब लौटना ही चाहिए उसे।

"सुबोध शत-प्रतिशत विश्वस्त है अपनी सफलता के लिए, परन्तु परीक्षा-फल प्राप्त करने और अपना रौल नम्बर अखबार मे देखने की विद्यार्थियो मे इतनी उत्कठा होती है कि वे अखबारो के कार्यालयो पर जाने से अपने को रोक नही सकते।

"जब मेरा और किशोर भाई का एम० ए० की परीक्षा का परीक्षा-फल निकला था तो हम दोनो हिन्दुस्तान के कार्यालय पर नई दिल्ली अपना परीक्षा-फल देखने गए थे। इस समय सुबोध को जाते देखकर मुझे उस दिन की याद आ रही है। लगता है जैसे आज का ही दिन था वह।"

डाक्टर प्रकाश सरोज भाभी से यह कह ही रहे थे कि तभी काता और किशोर भाई उन्हे जीने से आते दिखलाई दिए।

दोनो के मुख-मंडल पर हास्य की रेखाए खिची थी। दोनो ने डाक्टर प्रराश के कमरे मे साथ-साथ प्रवेश किया।

किशोर भाई सहर्ष बोले, "प्रकाश, बधाई है तुम्हे। मुझे कान्ता ने अभी-अभी सुबोध के परीक्षा मे उत्तीर्ण होने की सूचना दी तो मै अपने को रोक न सका तुम्हारे पास आने से। आज का दिन हमारे जीवन मे अपार हर्ष का दिन आया है प्रकाश। सुबोध बेटे ने विश्वविद्यालय मे टाप किया है। सुबोध मेरे योग्य भाई की योग्य सन्तान निकला। सुबोध ने हम सब का मस्तक ऊचा कर दिया।"

डाक्टर प्रकाश ने यह समाचार सुनकर नेत्र वन्द कर लिए और उन्होने अन्दर ही अन्दर अपार सुख तथा शाति का अनुभव किया। परमात्मा ने उन्हे आज वह सुख प्रदान किया था जिसका वर्णन करने के लिए उनके मुख मे वाणी नही थी। उनकी बीस वर्ष की तपस्या का फल आज उनकी आखो के सम्मुख था। उन्हे इससे अधिक हर्ष अन्य किसी बात को सुनकर हो ही नही सकता था।

डाक्टर प्रकाश सरोज भाभी की ओर देखकर बोले, "भाभी ! जिस

दिन मै एम० ए० की परीक्षा मे उत्तीर्ण हुआ था तो आपने मुझे उलाहना दिया था कि मैने मुहल्ले मे मिठाई तकसीम करने का अवसर आपको न देकर किशोर भाई की माताजी को क्यो दिया। वह अधिकार उन्हीका था भाभी! आज भगवान ने आपको यह अवसर प्रदान किया है। आप अब जितनी मिठाई मुहल्ले मे बाटना चाहे बाटे और सबसे पहले किशोर भाई और बेटी काता का मुह मीठा कराए।" यह कहकर सामने अलमारी की ओर सकेत करके बोले, "देखिए उस अलमारी मे मिठाई भरी है। निकाल लदइए उसमे से। मैने आपके बाटने के लिए मिठाई का प्रबन्ध पहले ही कर छोडा हे।"

सरोज भाभी। मुस्कराकर किशोर भाई की ओर देखते हुए बोलीं, "देखा आपने किशोर भाई! लालाजी ने सब प्रबन्ध स्वय करके रखा हुआ है और मन प्रसन्न कर रहे है अपनी भाभी का। बडे चतुर है हमारे लाला जी।" कहते हुए उन्होने अलमारी खोली तो उसमे मिठाई के डिब्बे भरे थे।

सरोज भाभी चार डिब्बे निकालकर काता के हाथ मे देती हुई बोली, "काता, एक तुम्हारा और एक तुम्हारी माताजी का।" तीसरा डिब्बा किशोर भाई के हाथ मे देकर बोली, "और यह किशोर भाई का। परन्तु यह सब तो घर ले जाने के लिए है। खाने के लिए मै अभी लाती हूं।"

सरोज भाभी के पैर आज बडे चाव से उठ रहे थे। वे एक थाल मे मिठाई ले आई।

सभी ने साथ-साथ बैठकर आनन्दपूर्वक मिठाई खाई और फिर किशोर भाई तथा काता अपने घर चले गए।

आज डा० प्रकाश के आनन्द का पारावार नही था उनका हृदय हर्ष से फूला नही समा रहा था। उनके पुत्र सुबोध ने यूनिवर्सिटी मे टाप किया था। उसने उनके नाम को उज्ज्वल किया था।

डा० प्रकाश इसी प्रसन्नता मे बैठे-बैठे न जाने क्या-क्या सोचते रहे। सरोज भाभी अलमारी से मिठाई के डिब्बे निकालकर मुहल्ले-भर मे तकसीम करने के लिए निकल पडी।

इसी समय डा० प्रकाश की दृष्टि अपने जीने की ओर गई तो उन्होने

देखा कि पडित हाफता हुआ आ रहा था। उसके चेहरे पर हवाइया उड रही थी और उसके पैर आगे-पीछे पड रहे थे। उसका होश ठिकाने नही था। वह घबराया हुआ था।

गत सप्ताह रविवार को पडित नही आया था। डा० प्रकाश आज उसकी प्रतीक्षा मे थे।

डा० प्रकाश पडित की यह दशा देखकर बैठे न रह सके। वे लपक-कर जीने के पास गए और उसे सभालकर अपने कमरे मे लाकर पूछा, "क्या बात है पडित ? तुम इतने घबराए हुए क्यो हो ?"

पडित प्रकाश की बात सुनकर बेतहाशा रो पडा। उसकी जबान पर एक शब्द भी न आया। उसे पसीना छूट रहा था और पैर लडखडा रहे थे। उनके नेत्रो के सम्मुख अकार छा गया था।

डा० प्रकाश ने भयभीत होकर पूछा, "पडित, शीघ्र बोलो, वरना मैं पागल हो उठूगा। तुम्हारे रोने का अवश्य कोई गम्भीर कारण है।"

पडित रोते-रोते ही बोला, "बाबूजी, बहूजी अचेत पडी है। उनकी दशा बहुत खराब है, आप शीघ्रता करे चलने मे।"

"क्या ? मालती अचेत पडी है। यह तुमने क्या कहा पडित ?" डा० प्रकाश सचमुच पागल-से हो गए। उनका बदन थर-थर करके काप उठा और दिल तीव्र गति से धडकने लगा। इसी समय सुबोध भी वहा आ पहुचा। डा० प्रकाश रोकर बोले, "बेटा ! सुबोध मेरे साथ चलो।"

"कहा पापाजी ?" सुबोध ने भयभीत स्वर मे पूछा।

डा० प्रकाश कुछ बोल नही सके। वे जिस दशा मे भी थे उसी दशा मे उठकर नगे ही पैरो जीने की ओर लपक लिए। सुबोध और पडित उनके पीछे-पीछे चल दिए।

उन्हे यह भी ध्यान न रहा कि वे अपना भरा-पूरा घर यू ही बिना ताला-कुजी के छोडे जा रहे थे। घर का द्वार चौपट ही खुला छोडकर तीनो मोती बाजार से निकलकर चादनीचौक मे आ गए और सुबोध ने फुर्ती से कार का द्वार खोलकर अपने पापाजी को बिठलाया। सुबोध ने पडित को अपने पास बिठलाकर उससे पूछा, "हमे कहा चलना है पडितजी ?"

"बारहखभा रोड, नई दिल्ली," पडित ने कहा।

बारहखम्भा रोड का नाम सुनकर सुबोध का हृदय धक्-धक् करने लगा। उसने तुरन्त गाडी स्टार्ट की और आनन-फानन मे कार नई दिल्ली, बारहखम्भा रोड, मालतीदेवी की कोठी पर पहुच गई।

डा० प्रकाश ने तीव्र गति से कोठी मे प्रवेश किया। पडित ने मालतीदेवी के कमरे का द्वार खोला और देखा तो मालतीदेवी पलग पर उसी दशा मे अचेत पडी थी जिस दशा मे वह उन्हे छोडकर गया था। उनकी दशा मे अभी तक कोई परिवर्तन नही हुआ था।

डा० प्रकाश ने मालतीदेवी का चेहरा देखा तो वह धक् से रह गए। वे भयभीत हो उठे। वे धीरे-धीरे मालतीदेवी के पलग के पास पहुचे और एक क्षण मालतीदेवी के अस्थि-पिंजर को खडे-खडे देखते रहे। मालतीदेवी का चेहरा पीला पड गया था। प्रतीत होता था कि उनके बदन मे रक्त की एक बूद भी शेष नही रह गई थी। हड्डियो का एक ढाचा-मात्र शेष था।

डा० प्रकाश ने धीरे से मालतीदेवी का सिर उठाकर अपनी गोद मे रख लिया। उनके नेत्रो से टपक-टपककर आसुओ की बूदे मालतीदेवी के कपोलो पर गिरने लगी। उनका हृदय विदीर्ण हुआ जा रहा था। पता नही किस प्रकार वे अपने को सभाल रहे थे।

डा० प्रकाश गम्भीर वाणी मे बोले, "मालती! मैं आ गया। आज तुम्हे मेरी आवश्यकता है। मैं आ गया मालती! नेत्र खोलकर देखो, प्रकाश आ गया। तुमने आते समय कहा था न मुझसे आने के लिए!"

डा० प्रकाश की वाणी मालतीदेवी के कानो मे पडी तो वे अचेतन अवस्था मे ही बोली, "मै क्या सुन रही हूं प्रकाश बाबू! क्या आप सचमुच आ गए अपनी अपराधिनी मालती को लेने के लिए! क्या आप सचमुच आ गए प्रकाश बाबू? क्या आपने मुझे क्षमा कर दिया?"

डा० प्रकाश विह्वलतापूर्ण स्वर मे बोले, "मैं सचमुच आ गया मालती! नेत्र खोलो तुम! देखो तुम्हारा सुबोध और मैं दोनो तुम्हे लेने के लिए आए है। आखे खोलो मालती। तुम आखे नही खोलोगी तो मैं पागल हो उठूगा। तुमने मेरा कोई अपराध नही किया मालती! तुम

बिलकुल निर्दोष हो।"

मालतीदेवी ने अस्फुट वाणी मे कहा, "मेरा सुबोध ! मेरे प्राणनाथ ! मेरे प्रकाशबाबू।"

मालतीदेवी ने धीरे-धीरे अपने नेत्र खोले और डा० प्रकाश के चेहरे पर देखा। वे देखती रही कुछ देर और फिर उन्होने अपने दोनो हाथ जोडकर नेत्र बन्द कर लिए। वे फिर कुछ अचेत-सी हो गई। डा० प्रकाश घबराकर रो पडे। वे विह्वल हो उठे।

मालतीदेवी के नेत्र अन्दर को गड गए थे। डा० प्रकाश ने देखा कि उनके नेत्रो मे पानी भर आया था। उनकी पलके अश्रु-जल मे डूब गई थी।

डा० प्रकाश पडित से बोले, "पडित, थोडा ठडा जल ले आओ जल्दी से जाकर।"

पडित दौडकर एक गिलास मे ठडा पानी भर लाया।

डा० प्रकाश ने अपनी धोती का पल्ला पानी मे भिगोकर मालतीदेवी के मुह पर धीरे से फेरा तो मालतीदेवी के बदन मे धीरे-धीरे चेतना लौटनी प्रारम्भ हुई। डा० प्रकाश ने मालतीदेवी के मुह मे चम्मच से थोडा ठडा जल डाला तो उन्होने एक सुबकी-सी ली।

डा० प्रकाश बोले, "मालती, मैं आया हू तुम्हे लेने के लिए। चलो घर चले। यह घर नही है तुम्हारा। तुम भूल से यहा आ गई थी। तुम भटक गई थी मालती ! मैं तुम्हे रास्ता दिखलाने के लिए आ गया हू। तुम धीरे से उठो और मेरा सहारा लेकर अपने घर चलो।"

मालतीदेवी ने अपने दोनो हाथ ऊपर उठा दिए। डा० प्रकाश ने मालतीदेवी के हाथ अपने हाथो मे लेकर धीरे से मालतीदेवी को सभालकर बिठलाया और फिर सामने खडे सुबोध से बोले, "सुबोध बेटा ! खडे कैसे रह गए ? अपनी मम्मी को सभालो और धीरे से गोद मे उठाकर गाड़ी मे बिठलाओ।"

पिता की आज्ञा पाते ही सुबोध आगे बढ गया और उसने अकेले ही अपनी मम्मी के चार हड्डियो के पजर को अपनी दो विशाल बाहुओ पर उठाकर कधे से लगा लिया। सुबोध को अपनी माताजी का बदन पुष्प

के समान हलका प्रतीत हुआ। जिस प्रकार स्नेह और आदर के साथ आज सुबोध ने अपनी मम्मी को उठाकर अपने कधे से लगाया था उतनी ममता के साथ क्या कभी मालतीदेवी ने सुबोध को स्नेह से अपनी गोद मे स्थान दिया ? माता होते हुए भी सुबोध आज तक मातृ-स्नेह से वचित ही रहा था। उसे पता ही नही था कि मातृ-स्नेह होता क्या है।

आज अपनी मम्मी को गोद मे उठाकर सुबोध को कितना सुख मिला। उसका अनुमव-मात्र ही वह कर सकता था। उसका सम्पूर्ण बदन पुलकायमान हो उठा था। अपनी माता को कधे से लगाकर उसे बहुत बडी सात्वना मिली। उसे आज अपार हर्ष हुआ। अपनी मम्मी को गोद में लेकर उसे लग रहा था कि मानो सम्पूर्ण विश्व की सम्पदा आज विधाता ने उसकी गोद मे भर दी थी।

डा० प्रकाश धीरे-धीरे सुबोध के पीछे-पीछे चले आ रहे थे। पडित ने सावधानी से कोठी के ताले बन्द कर दिए और वह भी उनके साथ हो लिया।

सुबोध ने सावधानी के साथ मालतीदेवी को गाडी की पिछली सीट पर बिठाया। डा० प्रकाश ने उन्हे धीरे से अपनी गोद मे लिटाकर सभाल लिया।

मालतीदेवी की सूरत देखकर डा० प्रकाश के हृदय पर भारी आघात पहुचा। उनके मन मे अथाह पीडा थी। इस समय गुलाब के पुष्प जैसा मालतीदेवी का रग गेदे के पुष्प के समान पीला पड गया था। उनके मुख से दर्द-भरे स्वर मे निकला, "मालती ! तुमने यह सब क्या कर लिया ? मेरा तो जीवन नष्ट किया ही, अपना सभी कुछ खो दिया।"

"दण्ड मुझे मिलना ही चाहिए था प्रकाश बाबू ? अपराधिनी होने पर भी आप मुझे दण्ड नही देते। इसलिए विधाता ने मुझे दडित किया है।" मालतीदेवी गम्भीरतापूर्वक बोली।

डा० प्रकाश ने मालतीदेवी के मस्तक पर धीरे से हाथ फेरा। उनके बालो में उगलिया डालकर हलके-हलके सहलाया। उनकी अदर को धसी आखो के कोयो को धीरे से साफ किया। उनके कपोलो पर हलके से हथेली फेरकर आसुओ को पोछा तो मालतीदेवी को लगा कि उनके बदन की

सारी तपन बुझ गई। उनकी बेचैनी कम होती जा रही थी। उनका डूबता हुआ दिल उभारा लेकर ऊपर को आने लगा था। उनकी नाडियो मे मद गति से बहनेवाला रक्त तीव्र गति के साथ प्रवाहित होने लगा था। उनका श्वास, जिसकी गति नितान्त मन्द पड गई थी अब तीव्रगति से वहने लगा था। उनके डावाडोल मन की नौका जो सागर की लहरो पर बेसहारा भटक रही थी, उसे सहारा मिल गया था। उसके डूबते हुए नेत्रो को जो किनारा दिखलाई देना बन्द हो गया था वह अब दिखलाई देने लगा था। उनकी आखो की रोशनी बढ गई थी। उनके दिल की बेचैनी कम होती जा रही थी। उनके मस्तिष्क मे परेशानी अब लेश-मात्र भी शेष नही रह गई थी। उनका भारी मन हलका हो गया था।

डा० प्रकाश के जीवन मे आज से अधिक शाति और प्रसन्नता का दिन सम्भवत पहले कभी नही आया था। मालती के जीवन की गुड्डी जो डा० प्रकाश के हाथ से छूटकर आधी मे उड गई थी उसकी डोर डा० प्रकाश ने अब फिर से सभाल ली थी। आज डा० प्रकाश ने देखा कि दुनिया के बवडरो और झझावातो से टकराकर जर्जर हुई वह गुड्डी धराशायी हो चुकी थी और वह समय आ गया था कि जब उसका अस्तित्व ही समाप्त हो जाना चाहता था। तभी डा० प्रकाश ने दौडकर उसकी डोर सभाल ली थी और अपने स्नेह के हलके-हलके पवन पर उसे धीरे-धीरे ऊपर उडा दिया था। उसके जर्जर बदन पर अपना स्नेह का हाथ फेरकर उन्होने मरहम लगाया था और अपनी अक मे लिटाकर उसे विनाश के मुख से निकाल लिया था।

सुबोध ने कार स्टार्ट कर दी और थोडी ही देर मे कार चादनीचौक मे मोती बाजार के सामने जाकर रुक गई। सुबोध ने कार से उतरकर धीरे से अपनी मम्मी को गोद मे उठा लिया।

सुबोध मालतीदेवी को गोद मे लेकर अपने घर पहुच गया और उसके साथ डा० प्रकाश तथा पडित भी। सुबोध सीधा उन्हे ऊपर अपने पिताजी के कमरे मे ले गया।

कमरे मे पहुचकर डा० प्रकाश बोले, "सुबोध! अपनी मम्मी को इनके पलग पर लिटाओ।" और फिर नेत्रो मे आसू भरकर बोले, "मालती-

देवी ! तुम्हारा यह पलग गत पद्रह वर्ष से उसी स्थान पर खाली पडा है, जहा इसे तुमने बिछवाया था। यह बिस्तर गत पद्रह वर्ष तक मैं नित्य नियम से साफ करके बिछाता रहा हू और प्रतीक्षा करता रहा हू कि तुम लौटकर आओगी। मुझे विश्वास था कि तुम एक दिन अवश्य लौटोगी। और अब देखता हू कि मेरा सोचना निष्फल नही किया तुमने मालती ! आज पन्द्रह वर्ष पश्चात् तुम्हे इस शय्या पर लेटी देखकर मुझे लग रहा है कि मेरी उजडती हुई दुनिया विधाता ने फिर से आबाद कर दी। मेरी बर्बाद गृहस्थी का कुम्हलाया हुआ पौधा तुम्हारे स्नेह से सिंचित होकर लहलहा उठा।"

नेत्रो मे आसू भरकर डा० प्रकाश ने अपने पुत्र सुबोध की ओर देखकर कहा, "सुबोध ! यह तुम्हारी मम्मी जो हम दोनो को छोडकर चली गई थी, आज लौट आई। इन्हे पहचाना नही तुमने ?"

पिताजी की मर्मभेदी बात सुनकर सुबोध के नेत्र बरस पडे। इतने दिन का हृदय मे जुड़ा हुआ मातृ-स्नेह नेत्र-द्वारो से मुक्त होकर बह चला। वह आगे बढकर अपनी मम्मी से लिपट गया और उनके आचल मे मुह छिपाकर आज जी भरकर रोया।

मालतीदेवी ने सुबोध को अपनी छाती से चिपका लिया। उन्होने अपने दिल के टुकडे को छाती से लगाकर धीरे से उसका मुह चूम लिया।

सुबोध और मालतीदेवी को इस प्रकार स्नेहालिप्त देखकर डा० प्रकाश को स्वर्गिक आनन्द की प्राप्ति हुई।

उन्हे तभी मालतीदेवी की अस्वस्थ अवस्था का ध्यान आया तो वे धीरे से बिना किसीसे एक शब्द भी कहे जीने से नीचे उतर गए। वे घर से बाहर निकले और सीधे किशोर भाई के मकान की ओर चल दिए।

डा० प्रकाश ने किशोर भाई के घर मे प्रवेश किया तो देखा सरोज भाभी और विमला भाभी के बीच बाते घुट रही थी। उनका चन्द्रमुख खिला हुआ था और हृदय मे अपार हर्ष था। उनका पुत्र आज विश्वविद्यालय की सर्वोच्च परीक्षा में प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण हुआ था।

डा० प्रकाश ने आगे बढकर विमला भाभी को प्रणाम किया और प्रसन्न मुद्रा में बोले, "भाभी, मालती लौट आई।"

डा० प्रकाश की बात सुनकर बातचीत का विषय एकदम बदल गया।

विमला भाभी ने आश्चर्यचकित दृष्टि से डा० प्रकाश की ओर देखकर पूछा, "क्या सच देवरजी ! देवरानीजी लौट आई।"

"हा भाभी ! वह लौट आई। आखिर उसे मेरा और सुबोध का ध्यान आ ही गया। मै कहता था न कि वह एक दिन अवश्य लौटेगी।" डा० प्रकाश बोले।

सरोज भाभी डा० प्रकाश की बात सुनकर स्तब्ध-सी रह गई। उनका चेहरा तमतमा उठा। उनके मन मे मालतीदेवी के लौटने की कोई प्रसन्नता नही हुई। उन्होने अपने हृदय के द्वार मालतीदेवी के प्रति बलात् कसकर बन्द कर लिए थे। उन्होने माता के समान मालतीदेवी को पाला था। उनकी इतनी उपेक्षा की मालतीदेवी ने ! उन्होने देवता वर खोजा था उसके लिए। उसका भी जीवन नष्ट कर दिया उसने। सरोज भाभी का मस्तक नीचा कर दिया उसने। उसने अपने व्यवहार से केवल सरोज और डा० प्रकाश को ही कष्ट नही पहुचाया बल्कि स्वर्ग मे बैठे अपने माता-पिता की आत्माओ का भी अपमान किया, उन्हे लज्जा का पात्र बनाया। उनके पवित्र नामो पर कालिमा पोत दी थी उसने अपने कुकृत्य से।

सरोज भाभी गम्भीर वाणी मे बोली, "वह क्यो लौट आई लालाजी ! जिसने माता के समान अपनी बडी बहिन का निरादर किया, जिसने देवता तुल्य अपने पति की उपेक्षा ही नही की, उसका जीवन घोर निराशा के अन्धकार मे धकेल दिया, उसे क्या अधिकार था वापस लौटने का ? उसे कही जाकर मर जाना चाहिए था, परन्तु यहा नही लौटना चाहिए था। क्या वह अब हमारे घावो को फिर से हरा करने आई है ?"

डा० प्रकाश सरल वाणी मे बोले, "सरोज भाभी ! मालती अपने घर वापस लौटी है। यह उसका अपना घर है, इसमे आने से उसे कौन रोक सकता है ? वह हमारे घावो को हरा करने के लिए नही, उनपर मरहम लगाने आई है। आपने माता के समान उसका पालन-पोषण किया है तो अपने सूखे हृदय-प्रदेश मे फिर से मातृ-स्नेह की धारा प्रवाहित कीजिए। आज मालतीदेवी को आपके स्नेह की बाल्यकाल से भी अधिक आवश्यकता है। वह अस्वस्थ है और प्राण पता नही उसके अस्वस्थ बदन के किस कोने मे

अटके हुए है। मै हाथ जोडकर आपसे प्रार्थना करता हू कि आप उसके सम्मुख एक भी कडुवा शब्द न कहे। उसके अन्दर एक भी कटु शब्द सुनने की शक्ति शेष नही है इस समय।"

डा० प्रकाश ने देखा कि सरोज भाभी का तमतमाता हुआ मुखमडल एकदम व्याकुल-सा हो उठा। उनका दिल घबरा-सा उठा और नेत्र बरस पडे। वे वहा और अधिक बैठी न रह सकी। चुपचाप उठकर अपने घर की ओर चल दी।

किशोर भाई, जो अपने कमरे मे खडे वस्त्र बदल रहे थे, डा० प्रकाश की वाणी सुनकर बाहर निकल आए। मालतीदेवी के लौट आने का समाचार प्राप्त कर उनको असीम शाति मिली। उन्हे लगा कि डा० प्रकाशके जीवन मे एकबार फिर से आशा और उमग का सचार हो उठेगा। उनका मुरझाया हुआ दिल फिर से खिल उठेगा।

डा० प्रकाश बोले, "किशोर भाई! मालती बहुत अस्वस्थ है। डाक्टरो की पर्याप्त चिकित्सा वह करा चुकी है, परन्तु उससे कोई लाभ नही हुआ। चलो तनिक मेरे साथ बल्ली मारान तक चलो। मैं सोच रहा हू कि हकीम जफरखा को लाकर मालती को दिखलाया जाए। आपके तो वे बहुत परिचित है।"

किशोर भाई डा० प्रकाश के मत से सहमत हो गए। दोनो मित्र हकीम जफरखा के पास पहुचे और उन्हे डा० प्रकाश के घर लिवा कर ले आए।

हकीम जफरखा ने मालती देवी को देखा, और मुस्कराकर बोले, "डाक्टरो ने बीमार कर दिया है इन्हे तो किशोर भाई! वरना दु ख ही क्या है इन्हें? अतडिया ठीक है, जिगर ठीक है, दिल ठीक है, दिमाग ठीक है और शरीर मे कही रोग नही। कही फोडा नही, कही कोई फुसी नही, फिर बीमारी कैसी यह? डाक्टर लोग इनके बदन मे खून नही बढा सके और ख़ून की कमी मे इनकी यह दशा हो गई।"

हकीमजी ने एक नुस्खा लिखा और उसे डा० प्रकाश के हाथ मे देकर बोले, "लीजिए प्रिंसिपल साहब! यह काढ़ा इन्हे सात दिन मे छ'-छ बार पिलाइए। बादाम रोगन की दिन मे आठ बार इनके सिर, माथे, हथेलियों और तलुँवो पर मालिश कीजिए। बकरी का दूध और अगूर के अलावा

कुछ खाने को न देना। सात दिनो तक पलग से उठना नही होगा इन्हे। पाखाना और पेशाब का प्रबन्ध भी यही पर होना चाहिए। इनके मस्तिष्क को पूरा चैन और आराम मिलना चाहिए। अधिक आने-जानेवालो की यहां भीड नही लगनी चाहिए।"

किशोर भाई हकीमजी के साथ-साथ उन्हे उनके मतब तक छोडने गए। मार्ग मे हकीमजी ने कहा, "कोई फिक्र की बात नही है किशोर भाई। एक हफ्ते मे आप देखेगे कि ये उठने-बैठने और चलने-फिरने लगेगी।"

हकीमजी को उनके मतब पर छोडकर किशोर भाई हिन्दुस्तानी दवाखाने पर नुस्खे बधवाने चले गए।

डा० प्रकाश ने अपने ड्राइग रूम मे जाकर अपनी एक सप्ताह की छुट्टी का प्रार्थना-पत्र लिखा और फिर मालतीदेवी के कमरे मे आकर सुबोध से बोले,, "बेटा सुबोध! मेरा यह प्रार्थना-पत्र लेकर कालेज चले जाओ और इसे जाकर वापस प्रिंसिपल साहब श्री बैनर्जी को देना।"

सुबोध प्रार्थना-पत्र लेकर चला गया।

डा० प्रकाश सरोज भाभी से बोले, "भाभी! मालती के आने का समाचार मुहल्ले मे फैलेगा तो मुहल्ले की स्त्रियो का जमघट लगने लगेगा। आप उन्हे ऊपर न आने देना। यहा भीड-भाड हुई तो इसके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पडेगा।"

सरोज भाभी ने तभी घर के आगन मे झाककर देखा तो उन्हे कई स्त्रिया खडी दिखाई दी। सरोज भाभी धीरे-धीरे जीने से नीचे उतर गई।

डा० प्रकाश मालतीदेवी के पलग पर बैठकर उनके बालो मे उग-लिया डालकर उन्हे किरोलते हुए सरल वाणी मे बोले, "मालती! मुझे पूर्ण विश्वास था कि तुम एक दिन अवश्य लौटोगी। मैं जानता था कि ऊपर से आकर्षक लगनेवाली दुनिया की विभीषिका एक दिन तुम्हारे ऊपर प्रकट होगी और तुम्हारे हृदय-चक्षु खुलेगे।"

मालतीदेवी अपने पति के मुख पर श्रद्धापूर्ण दृष्टि से देखकर बोली, "प्राणनाथ! क्या सचमुच आपने मेरा अपराध क्षमा कर दिया?"

डा० प्रकाश गम्भीर वाणी मे बोले, "तुमने कोई अपराध नही किया मालती! तुम अपने विचारो को मेरे अनुरूप नही बना सकी। यह दुर्बलता

थी तुम्हारी और दुर्बलता को मैं अपराध नही मानता। तुमने अपने विचारो का परीक्षण करके देखा और अन्त मे सही नतीजे पर पहुची, इसकी मुझे हार्दिक प्रसन्नता है। तुमने सही बात को सही मान लिया इससे अधिक प्रसन्नता की मेरे लिए क्या बात हो सकती है ?

"मैने तुम्हारे विचारो की विभिन्नता के फलस्वरूप अपनी आत्मा पर जो पीडा का प्रकोप हुआ, उसे अपनी सम्पूर्ण शक्ति से सहन किया। तुम्हे स्मरण होगा, एक दिन मैने तुमसे कहा था कि अब हम दोनो का सहन करने का जीवन आगे चलेगा। हम दोनो की जीवन-धाराए सगम पर मिलकर फिर दो दिशाओ मे बह चली है। सम्भव है कभी समुद्र-तट तक पहुचते-पहुचते दोनो फिर आपस मे आ मिले। आज परमात्मा ने हमे वह दिन दिखलाया है जब दोनों धाराए फिर आकर एक हो गई। मुझे विश्वास है कि अब हम दोनो सागर के तीर तक दो तन और एक प्राण होकर बह सकेंगे।"

तभी किशोर भाई काढो का पुलिन्दा लेकर आ गए और बोले, "लो भैया प्रकाश ! सरोज भाभी से कहो कि मालती के लिए काढा पका लाए। हकीमजी ने कहा है कि मालती एक सप्ताह मे बिलकुल स्वस्थ हो जाएगी।" और फिर मुस्कराकर बोले, "मालती स्वस्थ हो जाए तो फिर इसकी अपने भैया डा० प्रकाश के साथ शादी करूगा। दोनो को वर और वधू बनाऊगा। सुबोध बेटे को तुम्हारी गोद मे बिठलाऊगा और अपने जीवन के उस सुख तथा शाति की कल्पना करूगा जो विधाता ने मुझसे छीन लिया था।"

किशोर भाई की स्नेहपूर्ण बात सुनकर मालतीदेवी और डा० प्रकाश के चेहरे खिल उठे। मालतीदेवी के सूखे गालो पर भी सुर्खी की झिलमिलाहट-सी दौड गई। वे धीरे-धीरे बोली, "क्या पहली शादी अधूरी की थी किशोर भाई ने जो दूसरी शादी करने की आवश्यकता होगी ?"

तभी सरोज भाभी और बाबू ब्रिजकिशन भी आ गए। डा० प्रकाश ने काढे की पुडिया उन्हे देकर कहा, "भाभी, पका तो लाओ जरा इसे।" और सरोज भाभी पुडिया को लेकर तुरन्त नीचे चली गई।

एक सप्ताह तक डा० प्रकाश और सरोज भाभी ने मालतीदेवी का पूरी देख-रेख के साथ इलाज किया। हकीमजी की वाणी सफल हुई। एक सप्ताह

मे मालतीदेवी उठने-बैठने और थोडा चलने-फिरने लगी। आराम से अब वे आरामकुर्सी पर घटा-दो घटे बैठ सकती थी।

'दूसरे सप्ताह मे मालतीदेवी ने कुछ खाना-पीना भी प्रारम्भ कर दिया। तीसरे सप्ताह उनके स्वास्थ्य मे और परिवर्तन हुआ।

अब डा० प्रकाश ने नियमित रूप से अपने कालेज जाना प्रारम्भ कर दिया।

आज एकात मे मालतीदेवी, जैसे ही सरोज भाभी ऊपर आई, तो उनकी कौली भरकर उनसे लिपट गई। सरोज भाभी इतने दिन से मालती का सब काम कर रही थी और डा० प्रकाश जैसा कुछ उनसे कहते थे करती जाती थी, परन्तु उनका चित्त प्रसन्न नही था। उनके मन मे मालती के प्रति जो क्षोभ था उसने उनकी हृदय-कलिका को खिलने और मुस्कराने नहीं दिया था।

मालतीदेवी बोली, "जीजी! क्या क्षमा नही करोगी अपनी पुत्रीवत् छोटी बहिन को? अपराध मेरा इतना बडा है कि क्षमा मागने का मेरा मुह नही है, परन्तु आपकी दया तो कम नही है मेरे लिए। क्या आपकी दया की निर्मल धारा मेरे अपराध को धोकर साफ नही कर सकेगी?"

मालतीदेवी के शब्द सुनकर सरोज भाभी का दिल उमड आया। उनके हृदय का क्षोभ अश्रु बनकर आखो से बरस पडा और उन्होने मालती को अपने अक मे भर लिया। आज सरोज जीजी ने मालतीदेवी को उतने ही प्यार से चूमा जितने प्यार से वे उसे तब चूमा करती थीं जब वे छोटी-सी बच्ची थी। यह सचमुच दूसरा जन्म हुआ था मालतीदेवी का।

मालतीदेवी के दग्ध हृदय को आज पूर्ण सात्वना मिली। उन्हे उनके पति ने तो क्षमा कर ही दिया था, आज मातृवत् बडी बहिन ने भी उनका अपराध क्षमा कर दिया।

अब मालतीदेवी पूर्ण स्वस्थ थी।

आज सन्ध्या को डा० प्रकाश कालेज से लौटे तो मालतीदेवी ने स्वयं अपने हाथ से उन्हे चाय बनाकर पिलाई।

उपसंहार

डा० प्रकाश और किशोर भाई की मित्रता का बाल-काल मे जो सगम स्थापित हुआ उसकी निर्मल धारा अबाध-गति से आज तक बहती चली आ रही थी। बाल्य-काल मे इन दोनो के जीवन मे जो सामजस्य स्थापित हुआ उसमे आज तक कभी कोई अन्तर नही आया। एक-दूसरे के सुख-दुख मे दोनो साथी रहे। कभी कोई ऐसी बात आई भी कि जिसने किसीके मन को ठेस पहुचाई तो उसने उसे अपने अन्दर ही समाप्त कर दिया। उसकी कडवाहट को न कभी चेहरे पर आने दिया, न कभी वाणी मे उसे व्यक्त किया और न कभी उनके जीवन मे ही उसकी कोई प्रतिक्रिया हुई।

डा० प्रकाश का पुत्र सुबोध एम० ए० पास करके कालेज मे प्रोफेसर हो गया था। किशोर भाई की पुत्री काता बी० ए० मे पढ रही थी। दोनो मित्रो का गृहस्थ-जीवन बहुत आनन्दपूर्वक चल रहा था।

मालतीदेवी इस समय एक सद्‌गृहस्थी के समान अपने परिवार का सचालन कर रही थी।

सरोज भाभी और बाबू ब्रिजकिशनजी डा० प्रकाश के ही मकान मे रह रहे थे।

डा० प्रकाश के मस्तिष्क मे अब अपने पुत्र सुबोध की शादी करने की समस्या थी। बहुत-से रिश्ते डा० प्रकाश के विचाराधीन थे, परन्तु वे निर्णय नही कर पाए थे अभी कि किसके लिए अपनी अनुमति प्रदान करे।

डा० प्रकाश के कालेज मे आज एक बहुत बडा समारोह था जिसमे भाग लेकर वे लौट रहे थे। वे बस-स्टैड पर आए तो वहां किशोर भाई उन्हे मिल गए।

दोनो मित्र बस मे बैठकर लालकिले तक आए और वहा से उतरकर चादनीचौक की ओर चल दिए।

बाजार मे आज बडी खचाखच भीड थी। ब्याह-शादियो की धूम-धाम ने बाजार की भीड को और भी कधे से कधा छिलनेवाला बना दिया था।

आज डा० प्रकाश का मन कुछ चिताग्रस्त-सा देखकर किशोर भाई ने पूछा, "इतना गम्भीरतापूर्वक आज क्या सोच रहे हो प्रकाश ?"

डा० प्रकाश बोले, "कुछ नही किशोर भैया ! मै सोच रहा हू कि अब सुबोध की शादी करके निश्चित हो जाऊ।"

"अवश्य प्रकाश ! अब सुबोध की शादी तुम्हे कर ही देनी चाहिए।" यह कहते समय किशोर भाई को अपनी पत्नी विमलादेवी की एक दिन की बात का स्मरण हो आया, जब उन्होने किशोर भाई से कहा था, "काता के पिताजी ! अपनी काता का रिश्ता यदि सुबोध के साथ कर दिया जाए तो कैसा रहे ? लडका योग्य भी है और सुन्दर भी।"

किशोर भाई को अपनी पत्नी का प्रस्ताव बहुत पसद आया था परतु तुरत ही उनके मतिष्क मे विचार की एक लहर-सी दौड गई। वे कोई निश्चित उत्तर नही दे सके अपनी पत्नी को।

किशोर भाई की पुत्री काता। अपनी माता के ही समान गुणवती थी। सगीत और नृत्य-कला मे निपुण थी वह। घर-गृहस्थी का काम-काज भी वह बहुत अच्छा जानती थी।

यह सब कुछ तो था, परतु उसका रग सावला था। उसका रग अपनी माता के रग पर था। केवल एक इसी बात को लेकर किशोर भाई डा० प्रकाश के सम्मुख अनेको बार मन मे आने पर भी यह प्रस्ताव नही रख सकते थे।

डा० प्रकाश और किशोर भाई आगे बढकर दरीबा के निकट पहुचे और दरीबे मे उनकी दृष्टि गई तो वहा भी बाराते जा रही थी। चादनी चौक मे तो बारातो का कोई ठिकाना ही नही था। कुछ फतहपुरी की ओर जा रही थी और कुछ फतहपुरी की ओर से लालकिले की दिशा मे आ रही थी।

तभी डा० प्रकाश और किशोर भाई की दृष्टि एक शानदार बारात पर गई जिसका आगे का सिरा फव्वारे पर था और पीछे का सिरा फतहपुरी पर पहुचकर खारी बावली की ओर घूम गया था।

बारात मे सबसे आगे-आगे ढोल बजा-बजाकर नाचनेवाले लडकों की कई टोलिया थी जो लडकियो के वस्त्र पहनकर नाच रहे थे।

उनके बाद उस्ताद कल्लन की शहनाई बजानेवालो की टोली थी। उस्ताद कल्लन की टोली ने आजकल उस्ताद बन्नेखा की टोली को मात दे दी थी। उस्ताद बन्नेखा अब बूढे हो गए थे और उतनी अच्छी शहनाई नही बजा पाते थे जितनी अच्छी उस्ताद कल्लन बजाने लगे थे।

उस्ताद कल्लन की शहनाई को सुनकर डा० प्रकाश बोले, "उस्ताद कल्लन ने शहनाई बजाने मे वास्तव मे उस्ताद बन्नेखा को मात कर दिया किशोर भाई! शहनाई खूब बजाते है उस्ताद कल्लन।"

"इसमे क्या सदेह है डा० प्रकाश! एक दिन का पाच सौ रुपया लेते है उस्ताद कल्लन।" किशोर भाई बोले।

डा० प्रकाश मुस्कराकर बोले, "भाई कला है यह तो अपनी! कला का कोई मूल्य नही होता।"

दोनो मित्र थोडा और आगे बढ गए।

शहनाईवालो के बाद रग-बिरगी आतिशबाजिया थी। एक हजूम इकट्ठा हो गया था इन आतिशबाजियो को देखने के लिए। भाति-भाति की आतिशबाजिया सडक और आकाश पर छाकर अपनी शोभा दिखला रही थी।

डा० प्रकाश बोले, "आतिशबाजी तो सुन्दर लाए है ये बारातवाले।"

किशोर भाई बोले, "सब कुछ सुन्दर ही सुन्दर है डा० प्रकाश! सुन्दर क्या नही है इसमे? आतिशबाजी के पीछे देखिए चार बैंड बाजे कितने शानदार है। दिल्ली के सभी बढिया-बढिया साजिन्दे इन्होंने एकत्रित कर दिए है इस बारात की शोभा बढाने के लिए। किसी रईस के लडके की बारात प्रतीत होती है। कारे भी देखो एक से एक शानदार है।"

डा० प्रकाश बोले, "इसमे कोई सदेह नही किशोर भाई! बारात किसी रईसजादे की ही मालूम देती है।"

दोनों मित्र थोडा और आगे बढ़कर मोतीबाज़ार के सम्मुख पहुचे तो वहा दूल्हा घोड़ी पर चढा दिखाई दिया।

दूल्हे पर दृष्टि पडते ही डा०प्रकाश की तबीयत खराब हो गई। अच्छा-खासा पीलिया का रोगी प्रतीत होता था वह। उसके दो दात खोबडो से बाहर को निकले पड़ रहे थे। उसकी शक्ल देखकर घृणा होती थी।

उसे देखकर डा० प्रकाश को लगा कि यह इतनी बडी शानदार बारात व्यर्थ थी। उसे देखकर डा० प्रकाश को आज से बाइस वर्ष पूर्व की घटना का स्मरण हो आया जब वे और किशोर भाई सगीत-समारोह से लौटे थे और चादनीचौक मे आकर उन्होने ऐसी ही बारात देखी थी।

उस बारात का दूल्हा भी ऐसा ही कुरूप और अस्वस्थ था।

डा० प्रकाश को हसी आ गई। यह स्मरण करके वे बोले, "किशोर भाई, याद है आज से इक्कीस वर्ष पूर्व की बात, जब मै और आप सगीत-समारोह से लौटे थे और हमने ऐसी बारात देखी थी। इस बारात का दूल्हा भी ठीक वैसा ही है जैसा उस बारात का दूल्हा था।"

किशोर भाई मुस्कराकर बोले, "याद है डा० प्रकाश! जीवन मे घटने-वाली बाते क्या कभी भूलता है आदमी ?

"उसी समय तुमने अपनी भाभी को 'काली-कलूटी' कहा था। अब तो तुम्हे अपनी भाभी काली-कलूटी नही लगती न!"

किशोर भाई की बात सुनकर वह सम्पूर्ण घटना डा० प्रकाश के मस्तिष्क मे चक्कर लगा गई।

दोनो मित्र मोती बाजार से होकर मालीवाडे मे गए तो सामने ही डा० प्रकाश का मकान था। डा० प्रकाश बोले, "घर चलो किशोर भाई!"

किशोर भाई को कुछ काम था, परन्तु डा० प्रकाश के कहने को वह टाल नही सकते थे।

दोनो मित्र अन्दर पहुचे तो सरोज भाभी और मालतीदेवी आगन मे खाट पर बैठी बाते कर रही थी।

डा० प्रकाश और किशोर भाई को देखकर दोनो बहिने खडी हो गईं। सरोज भाभी मुस्कराकर बोली, "आज किशोर भाई को कहा से पकड लाए लालाजी! इन्हे तो जाने भगवान ने काम ही कितना दे दिया है कि मिलने-जुलने का भी अवकाश नही मिलता। यहा आए भी इन्हे जाने कितने दिन हो गए।"

सरोज भाभी की मीठी बात सुनकर किशोर भाई सतर्कतापूर्वक बोले, "भाभी ! क्या प्यार मे झूठ बोलना पाप नही होता ? मैं अभी परसो ही यहा आपसे बैठा बाते नही कर रहा था ? पूरे दो घटे बाते की थी हम दोनो ने।"

डा० प्रकाश हसकर बोले, "किशोर भाई ! दिन मे एक-दो बार आने-जाने को हमारी भाभी आना-जाना नही गिनती। इनका आने का मतलब है कि आप जमकर दस-पाच घटे इनसे बाते करे और उस समय तक बाते करते रहे जब तक यह तग आकर आपको धकेलती हुई घर से बाहर न कर दे।"

और फिर सरोज भाभी की ओर देखकर बोले, "क्यो भाभी ! ठीक कह रहा हू न मैं।"

डा० प्रकाश की बात सुनकर सब लोग प्रसन्न होकर हस पडे।

किशोर भाई अधिक समय नही बैठ सके। एक प्याली चाय पीकर चले गए।

किशोर भाई चले गए, परन्तु उनकी कही गई बात डा० प्रकाश के मस्तिष्क मे घूमती रही।

आज से बाईस वर्ष पूर्व डा० प्रकाश ने अपनी जिस भाभीजी को 'काली-कलूटी' कहा था, उन्हे आज वे देवी मानते थे। उनका माता के समान आदर करते थे। उनके रूप और गुणो का आज डा० प्रकाश से बडा कोई प्रशंसक नही था।

विमला देवी ने डा० प्रकाश के जीवन मे प्रवेश करके डा० प्रकाश के मस्तिष्क की रूप की परिभाषा ही बदल दी थी। केवल गोरा वर्णमात्र ही उनकी दृष्टि मे अब रूप नही रह गया था। इसीलिए उन्हे सुबोध के लिए वधू का चुनाव करने मे कठिनाई हो रही थी। वे रूप-रग-मात्र से प्रभावित होकर वधू का चुनाव करने को उद्यत नही थे।

डा० प्रकाश ने विमला भाभीजी के लिए जिन शब्दो का प्रयोग किया था वे इस समय काटे के समान उनके दिल मे चुभ रहे थे। उनके हृदय मे पीडा जाग्रत् हो चुकी थी। वे सोच रहे थे कि उन्होने आज से बाईस वर्ष पूर्व अपनी भाभी के प्रति जो अपमानजनक शब्द कहे थे उसकी कैसे क्षमा-

याचना की जाए।

• डा० प्रकाश को चिन्ताग्रस्त देखकर मालतीदेवी ने पूछा, "आज चिंतित-से क्यो प्रतीत हो रहे है आप ? क्या कोई नई समस्या उत्पन्न हो गई ?"

"चिता यही है मालतीदेवी, कि सुबोध की मैं अब शादी कर देना चाहता हू।" डा० प्रकाश बोले।

मालतीदेवी हसकर बोली, "तो कर डालिए। रिश्ते तो अनेको आ रहे है सुबोध के। कोई अच्छा-सा घर और वधू देख लीजिए। इसमे चिंता की क्या बात है ?"

"मेरी भी अब यही इच्छा है कि सुबोध का विवाह इस वर्ष हो ही जाना चाहिए।"

"हमारा सुबोध सीधा है, इसीसे कुछ कहता नही है। वरना आजकल के बच्चे बडा परेशान करते है अपने माता-पिता को।"

मालतीदेवी की बात सुनकर डा० प्रकाश मुस्कराकर बोले, "तुम सत्य कह रही हो मालती ! परन्तु मेरा सुबोध उन आजकल के बच्चो जैसा कभी नही होगा। इस बच्चे का निर्माण मैंने त्याग और तपस्या के धरातल पर किया है, सयम और आचार की पृष्ठभूमि मे किया है।"

डा० प्रकाश की बात सुनकर मालतीदेवी को असीम सतोष हुआ। उनका बेटा वास्तव मे ऐसा ही था।

रात्रि के साढे दस बजे थे। डा० प्रकाश कुछ सोचते-सोचते मालतीदेवी से बोले, "मालतीदेवी ! जरा एक पान खाकर आता हू अभी।"

डा० प्रकाश नीचे पानवाले की दूकान पर जाकर खडे थे, परन्तु उनके मस्तिष्क मे वही बात थी, जो उन्होने अपनी भाभी विमलादेवी को आज से पूर्व कही थी। उस बात को वे अपने मस्तिष्क से हटा नही पा रहे थे।

पान खाकर वे सोचते-सोचते अपने घर की ओर न चलकर किशोर भाई के घर की ओर चल दिए। उनके घर पहुचे तो ड्योढी बन्द हो चुकी थी और कोई बत्ती भी नही जल रही थी इस समय।

डा० प्रकाश ने द्वार पर किशोर भाई को आवाज दी।

किशोर भाई सो गए थे।

विमलादेवी को अभी नीद नही आई थी। डा० प्रकाश की आवाज को पहचानकर उन्होने अपने पति को जगाया। किशोर भाई तनिक हड-बडाकर उठे। विमलादेवी बोली, "देवरजी आवाज दे रहे है! ऐसी रात को आने का जाने क्या कारण हुआ ?"

किशोर भाई नीचे द्वार खोलने गए और विमलादेवी ने ऊपर की खिडकी खोलकर सूचना दी, "देवरजी! आपके भाई आ रहे हैं द्वार खोलने के लिए।"

तब तक किशोर भाई ने नीचे जाकर द्वार खोल दिए। डा० प्रकाश ऊपर पहुच गए। उनके पीछे किशोर भाई भी द्वार बन्द करके आ पहुचे।

काता अपने कमरे मे जाकर सो गई थी।

किशोर भाई ने पूछा, "कोई विशेष बात तो नही डा० प्रकाश!"

डा० प्रकाश बोले, "विशेप बात न होती तो क्या इस समय आता मैं किशोर भाई आपको परेशान करने।"

किशोर भाई ने उतावलेपन से पूछा, "तो कहो न फिर। तुम मौन क्यो हो गए ?"

डा० प्रकाश गम्भीर वाणी मे विमलादेवी की ओर देखकर बोले, "भाभी! आज से ठीक बाईस वर्ष पूर्व मैने आपके प्रति एक अपराध किया था।"

डा० प्रकाश का गम्भीर चेहरा देखकर और गम्भीर वाणी सुनकर किशोर भाई हसकर बोले, "डा० प्रकाश, तुमने तो कमाल कर दिया। कहा बचपन की बाते और कहा अब हम लोगों की पैंतालीस और पचास वर्ष की आयु। मैंने तो आज उपहास मे सध्या समय तुम्हे उसकी याद दिला दी थी। मुझे क्या पता था कि तुम उसे सुनकर इतने परेशान हो उठोगे।"

विमलादेवी मुस्कराकर बोली, "और लीजिए! अपराध देवरजी ने मेरे प्रति किया और झगडने आप लगे बीच मे। आप देवर-भाभी की बातो के बीच में न पडा करे।"

वे डा० प्रकाश की ओर देखकर गम्भीरतापूर्वक बोली, "हा देवर जी! तो आपने मेरे प्रति क्या अपराध किया था आज से बाईस वर्ष पूर्व ?"

डा० प्रकाश उतनी ही गम्भीर वाणी मे बोले, "जब आप वधू बनकर

इस घर मे आई तो मेरे दो ऐसे परिचितो ने आपको देखा जिनसे मै आपके विषय मे प्रश्न कर सकता था। उनमे प्रथम किशोर भाई थे और दूसरी सरोज भाभी। मैंने दोनो से प्रश्न किया और दोनो ने ही आपके रूप की प्रशसा नही की। मुझसे दोनो ने यह कहा कि आप काली है। उस समय तक मैंने नही देखा था आपको।

"दूसरे दिन हम फुटबाल का मैच खेलकर चादनीचौक मे आए तो हमे एक बारात मिली। बारात बहुत शानदार थी परन्तु दूल्हा उसका निहायत कुरूप और रोगी था। उसे देखकर मेरे मन मे उसकी होनेवाली वधू के प्रति सवेदना उत्पन्न हो आई। मैने उस दूल्हे के प्रति कुछ कडे शब्द कहे तो भैया बोले, 'बीमार है तो क्या हुआ धनवान तो है। धन रूप और स्वास्थ्य दोनो को खरीद सकता है।' और फिर मेरी ओर कटाक्ष करके बोले कि अवसर आने पर मैं भी धन के सामने रूप और स्वास्थ्य की उपेक्षा कर सकता हू।

"मुझे भैया की यह बात पसद नही आई। मुझे यह अपने ऊपर लाछन-सा प्रतीत हुआ।

"उस समय मेरे मुह से ये शब्द निकले, 'किशोर, क्या तुम मुझे भी अपने ही समान समझते हो? जैसे धन के लोभ मे तुम 'काली-कलूटी' भाभी उठा लाए वैसा प्रकाश करनेवाला नही है।' मैं कह तो गया उस समय, परन्तु तुरन्त ही मैंने अनुभव किया कि मुझसे अपराध हो गया।"

डा० प्रकाश की बात मे विमलादेवी ने बहुत रस लिया। वे गम्भीर बनकर बोली, "देवरजी, आपने मुझे 'काली-कलूटी' तो कहा, परन्तु कहा उसी सूचना के आधार पर जो आपको सरोज जीजी या आपके भाई साहब ने दी थी।

"आपने अपनी सूचना के आधार पर तो कुछ नही कहा, इसलिए अपराध आपसे अधिक इन दोनो का है।"

डा० प्रकाश बोले, "नही भाभी, यह बात नही है। इस प्रकार प्रमाण देकर आप मेरी रक्षा नही कर सकती। मुझे आपको 'काली-कलूटी' कहने का कोई अधिकार नही था। मुझे इन शब्दो का प्रयोग आपके लिए करना

ही नही चाहिए था। मैने आपके प्रति अपमानजनक शब्द कहकर आपका अपमान किया।

" भैया को अधिकार था, वह जो चाहते कहते आपके विषय मे, परन्तु मुझे कोई अधिकार नही था।

" मुझे इसका प्रतिकार करना ही होगा।"

"तो देवरजी, इस समय अपने अपराध का प्रतिकार करने आए है। तो करिए प्रतिकार आप कैसे करते है।"

डा० प्रकाश गिडगिडाकर बोले, "भाभी! मैं आपसे आज एक भीख मागने आया हू।"

"भीख मागने आए हो देवरजी! यह तो और भी विचित्र बात रही। मैं समझी थी कि जब तुमने मेरे प्रति अपराध किया है तो प्रतिकारस्वरूप तुम मुझे कुछ दोगे। परन्तु तुम कह रहे हो कि तुम भीख मागने आए हो। तब तो मुझे ही कुछ देना होगा तुम्हे। यह प्रतिकार कैसे होगा?"

डा० प्रकाश ने करुण दृष्टि से विमलादेवी के मुख पर देखा तो उनसे रहा नही गया। वे बोली, "देवरजी! भाभी से भिक्षा नही मागी जाती। तुम्हारे भैया का और मेरा जो कुछ भी है उस सबपर तुम्हारा उतना ही अधिकार है जितना हमारा।"

विमलादेवी की यह बात सुनकर डा० प्रकाश के नेत्र सजल हो उठे। भाभी के प्रति उनकी श्रद्धा न जाने इस समय कितनी गुनी अधिक हो गई।

डा० प्रकाश सरल वाणी मे बोले, "भाभी! सुबोध के लिए मै कांता की भिक्षा मागने आया हू इस समय आपके पास।"

डा० प्रकाश की बात सुनकर विमलादेवी और किशोर भाई का मन पुष्प समान खिल उठा। डा० प्रकाश ने मानो उनकी वाणी ही छीन ली उनसे।

मालतीदेवी प्रसन्नतापूर्वक बोली, "मैं कह रही थी न अभी, कि देवरजी प्रतिकारस्वरूप भी कुछ न कुछ लेकर ही रहेगे मुझसे। अब देख लो कांता के पिताजी! डा० प्रकाश ने चीज भी वह मागी है जो हमे सब-से अधिक प्रिय है। हमारे कलेजे का टुकड़ा माग लिया देवरजी ने हमसे।

"मैं तो देवरजी को मना कर नही सकती किसी चीज के लिए, क्योकि वचनबद्ध कर लिया है मुझे तुमने। मेरी ओर से पूर्ण अनुमति है। अब रही आपके भाई साहब की बात सो उसे तुम स्वय जानो।"

डा० प्रकाश किशोर भाई की ओर देखकर बोले, "क्यो भैया, क्या अनुमति है आपकी भी ?"

किशोर भाई मुस्कराकर बोले, "डा० प्रकाश! क्या तुम्हें कभी किसी बात के लिए जीवन मे तुम्हारे भाई ने मना किया है, जो वह आज करेगा। काता क्या मेरी ही है, तुम्हारी नही ?"

किशोर भाई और विमलादेवी की अनुमति प्राप्तकर डा० प्रकाश के मस्तिष्क की समस्या हल हो गई। इधर महीनो से उनका मस्तिष्क जिस चिता से घिरा था वह आज समाप्त हो गई। उन्हे लगा कि उनके भैया और भाभी ने आज उनपर बहुत बडा उपकार किया है। उन्हे विश्वास था कि सुबोध और काता की जोडी बहुत सुन्दर रहेगी। इन दोनो का जीवन सुख तथा शातिपूर्वक व्यतीत होगा।

डा० प्रकाश खडे होकर बोले, "अब आज्ञा दो भाभी। मै आया तो था नीचे दुकान पर पान खाने के लिए और चला यहा आया। मेरे मस्तिष्क की समस्या मुझे अनायास ही यहा ले आई। आपने मेरी समस्या सुलझा दी, इसके लिए मै आप दोनो का हृदय से आभारी हू।"

डा० प्रकाश अपने घर पहुचे तो मालतीदेवी उनकी प्रतीक्षा मे बैठी थी। उन्होने मुस्कराकर पूछा, "बड़ा लम्बा पान खाया आपने तो। मैं राह देखते-देखते बावली हो गई।"

डा० प्रकाश मुस्कराकर बोले, "तुम्हारे बेटे सुबोध का रिश्ता करके आया हू मालती!"

"क्या ?" प्रसन्न तथा आश्चर्यचकित होकर मालतीदेवी बोली, "इस समय कहा कर आए सुबोध का रिश्ता ?"

"अपने मित्र किशोर भाई के यहा। विमला भाभी की सुपुत्री काता के साथ।"

"सच!" प्रसन्न होकर मालतीदेवी बोली।

"सच नहीं तो क्या झूठ ? प्रकाश ने क्या कभी झूठी कोई बात तुमसे कही है मालतीदेवी ?" डा० प्रकाश प्रसन्नतापूर्वक बोले।

मालतीदेवी को यह समाचार पाकर इतनी प्रसन्नता हुई कि वह इस सूचना को देने के लिए अपनी सरोज बहिन के पास जीने से उतरकर दौड़ी चली गई और सोते से जगाकर यह समाचार उन्हे दिया।